■ वर्ष-21 ■ अंक-298
■ पृष्ठ-8 ■ मूल्य-2.00

दिल्ली (राष्ट्रीय संस्करण)

■ सोमवार ■ 16 दिसंबर 2024

पौष कृष्णपक्ष प्रतिपदा
विक्रम संवत्-2081

E-mail
dainiksamayjagat@gmail.com
insmjagat@gmail.com

प्रधान संपादक : अशोक त्रिपाठी

दैनिक
समय जगत

दिल्ली, भोपाल, म.प्र., उ.प्र. और अन्य राज्यों से एक साथ प्रकाशित

एक संदेश-पूरा देश

देश की राजधानी से प्रकाशित होकर विभिन्न प्रदेशों में प्रसारित

ईश्वर से अधिक मूल्यवान दुनिया में कुछ भी नहीं...

शीर्ष की ओर 'समय जगत'
Facebook
asksamayjagat
Instagram
@asksamayjagat
Twitter
@asksamayjagat
यूट्यूब पर
'खबर समय जगत'
को भी सब्सक्राइब करें
www.dainiksamayjagat.in

उपराष्ट्रपति ने ग्वालियर में किया देश के पहले जियो साइंस म्यूजियम का उद्घाटन

राज्यपाल श्री पटेल, मुख्यमंत्री डॉ. यादव, केन्द्रीय मंत्री श्री सिंधिया, श्री दुबे एवं विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर सहित अन्य जनप्रतिनिधि भी कार्यक्रम में हुए शामिल

- पृथ्वी एवं मानव जाति की उत्पत्ति और विकास की अनूठी जानकारियां उपलब्ध हैं म्यूजियम में
- डायनासोर का अण्डा भी देखा जा सकता है म्यूजियम में

समय जगत, भोपाल। उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने ग्वालियर में देश के पहले जियो साइंस म्यूजियम (भू-विज्ञान संग्रहालय) का रविवार को उदघाटन किया। ग्वालियर के ऐतिहासिक महाराज बाड़ा पर हैरीटेज बिल्डिंग विक्टोरिया मार्केट में स्थापित अत्याधुनिक जियो साइंस म्यूजियम के उदघाटन अवसर पर राज्यपाल मंगुभाई पटेल, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केन्द्रीय संचार व पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, केन्द्रीय कोयला एवं खान राज्य मंत्री सतीश चंद्र दुबे, विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर, ग्वालियर जिले के प्रभारी एवं जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट एवं सांसद भारत सिंह कुशवाह भी मौजूद थे। इस अवसर पर उप राष्ट्रपति की धर्मपत्नी श्रीमती सुदेश धनखड़ विशेष रूप से उपस्थित रही। उप राष्ट्रपति श्री धनखड़ ने पट्टिका का अनावरण कर एवं म्यूजियम के प्रवेश द्वार पर फीता काटकर देश के पहले अत्याधुनिक जियो साइंस म्यूजियम का उदघाटन किया। साथ ही ग्वालियरवासियों को इस अनूठी सौगात की बधाई एवं शुभकामनायें दीं। उन्होंने सभी अतिथियों के साथ म्यूजियम की विभिन्न गैलरियों में दर्शाए गए भू-विज्ञान से संबंधित चित्रों, कलाकृतियों एवं जानकारियों को देखा एवं म्यूजियम की सराहना की। म्यूजियम के उदघाटन के बाद उप राष्ट्रपति श्री धनखड़ ने महाराज बाड़ा पर स्थित वास्तु शिल्प के उत्कृष्ट नमूनों के रूप में खड़ी ऐतिहासिक इमारतों को भी देखा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव, केन्द्रीय मंत्री श्री सिंधिया एवं विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर ने उप राष्ट्रपति को महाराज बाड़े की इमारतों के शिल्प एवं शैलियों से अवगत कराया। राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद द्वारा ग्वालियर नगर निगम के सहयोग से तैयार किए गए देश के इस पहले अत्याधुनिक एवं अद्भुत जियो साइंस म्यूजियम में पृथ्वी की उत्पत्ति, मानव जाति एवं मानव सभ्यता का विकास और ब्रम्हाण्ड से जुड़ीं अनूठी जानकारियाँ समाहित हैं। म्यूजियम में डायनासोर का अण्डा सहित कीमती वस्तुएँ पर्यटकों को देखने के लिये उपलब्ध हैं। यह म्यूजियम भू-विज्ञान से संबंधित बच्चों से लेकर बड़ों तक की जिज्ञासाओं का समाधान उपलब्ध है। साथ ही वैज्ञानिक दृष्टि से भी यह संग्रहालय ज्ञानवर्धक है। पृथ्वी विज्ञान से संबंधित दुर्लभ भू-वैज्ञानिक नमूनों को मल्टीमीडिया डिस्प्ले के जरिए म्यूजियम में दिखाया गया है।

कार्यक्रम में इनकी भी रही मौजूदगी

जियो साइंस म्यूजियम के उद्घाटन कार्यक्रम में भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण के महानिदेशक असित साहा, संभाग आयुक्त मनोज खत्री, पुलिस महानिरीक्षक अरविंद सक्सेना, कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान, पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह, नगर निगम आयुक्त अमन वैष्णव एवं जियो लॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अधिकारीगण भी मौजूद थे।

मानव सभ्यता के विकास की गाथा बयां कर रही है दूसरी गैलरी

जियो साइंस म्यूजियम की दूसरी गैलरी में मानव जाति और मानव सभ्यता के विकास को बड़े बखूबी ढंग से प्रदर्शित किया गया है। इसमें यह भी दर्शाया गया है कि धरती पर डायनासोर की उत्पत्ति और विलुप्ति हुई। साथ ही मानव की उत्पत्ति कैसे हुई और कैसे उसका जीवनक्रम आगे बढ़ा। मानव सभ्यता की जीवन शैली में आए बदलाव का यह वर्णन भी दर्शनीय है।

संग्रहालय की एक गैलरी में पृथ्वी की उत्पत्ति और विकास की है जानकारी

जियो साइंस म्यूजियम में दो गैलरियों के माध्यम से भू-विज्ञान के बारे में लाइट इफेक्ट के साथ आकर्षक ढंग से जानकारी संजोई गई है। एक गैलरी में पृथ्वी के विकास को दर्शाया गया है, जिसमें उल्लेख है कि पृथ्वी अपने मूल स्वरूप में किस प्रकार आई और कौन-कौन सी चीजों से मिलकर पृथ्वी बनी है। वर्तमान में जो पृथ्वी है, असल में वह कैसी दिखती है। पृथ्वी के भीतर लावा किस तरह से तैयार होता है और ज्वालामुखी फूटने से किस तरह पर्वतों का निर्माण होता है। यह सब जानकारियां बखूबी ढंग से संग्रहालय में दर्शायी गई हैं। यहाँ आने वाले पर्यटन भूकम्प का अनुभव भी कर सकेंगे। इसके अलावा वायु मण्डल और महासागर के बारे में भी वर्णन है। लाइट इफेक्ट और अत्याधुनिक मशीनी तकनीक से बड़े बखूबी ढंग से यह सब प्रदर्शित किया गया है।

न्यूज ब्रीफ

गृहमंत्री शाह ने पुलिस प्लाटून की ली सलामी

जगदलपुर। रायपुर के पुलिस परेड ग्राउंड में राष्ट्रपति पुलिस कलर अवॉर्ड- 2024 कार्यक्रम में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने पुलिस प्लाटून की सलामी ली। इस दौरान शाह ने राष्ट्रपति पुलिस कलर फ्लैग भी पुलिस को सौंपा। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के सीएम विष्णुदेव साय भी मौजूद थे। राष्ट्रपति पुलिस कलर फ्लैग में बस्तर की संस्कृति को भी दिखाया गया, जिसमें गौर, माड़िया, सिंग और धान की बालिया शामिल है। झंडे के ऊपर और नीचे 36 किलों को दिखाया गया है। गृहमंत्री शाह के राष्ट्रपति पुलिस कलर्स अवॉर्ड परेड में शामिल होने के बाद जगदलपुर रवाना हो गये। रविवार दोपहर 3 बजे अमित शाह जगदलपुर पहुंचे। यहां पहुंचने के बाद सबसे पहले इंदिरा प्रियदर्शनीय स्टेडियम में बस्तर ओलिंपिक कार्यक्रम में शामिल हुए। सरेंडर किए गए नक्सली, नक्सल हिंसा पीड़ित और शहीद परिवारों से मुलाकात किये।

भोपाल में प्रयागराज महाकुंभ का लोगो हुआ लॉन्च

समय जगत, भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में प्रयागराज महाकुंभ मेले के लोगो का यूपी के जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह और कृषि राज्य मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने लॉन्च किया। यूपी सरकार के मंत्रियों ने मध्यप्रदेश की जनता को कुंभ में आने का न्यौता दिया। इस अवसर पर मंत्री सिंह ने कहा कि महाकुंभ एकता का वैश्विक प्रतीक बनेगा। पिछले कुंभ से दिव्य और अद्भुत होगा। दावा किया कि इस बार कुंभ में 45 करोड़ लोगों के आने की संभावना है। प्रयागराज में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक महाकुंभ मेला लगेगा। यह कुंभ प्लास्टिकमुक्त रहेगा। श्रद्धालु डिजिटल कुंभ का अनुभव भी करेंगे। कुंभ स्थल स्वच्छ, स्वास्थ्य, सुरक्षा, शुद्ध पेयजल, स्मार्ट पार्किंग की व्यवस्था की गई है। श्रद्धालुओं को पहचान के लिए रिस्ट बैंड भी दिए जाएंगे।

सूखी खुबानी में होते है ढेर सारे पोषक तत्व

नई दिल्ली। हेल्थ एक्सपर्टस की माने तो काजू, बादाम, किशमिश और अखरोट के अलावा एक और ड्राई फ्रूट है जो स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद साबित हो सकता है, वह है सूखी खुबानी। सूखी खुबानी में ढेर सारे पोषक तत्व होते हैं, जो शरीर को कई तरह से लाभ पहुंचाते हैं। सूखी खुबानी में आयरन की उच्च मात्रा पाई जाती है, जो खून की कमी (एनीमिया) से जूझ रहे लोगों के लिए एक वरदान है। आयरन की कमी से होने वाली थकान और कमजोरी से राहत पाने के लिए सूखी खुबानी का सेवन किया जा सकता है। यह ड्राई फ्रूट उन लोगों के लिए भी फायदेमंद है जो सामान्य रूप से खून की कमी महसूस करते हैं।

ग्रामीणों को उनके नजदीकी स्थान पर ही मिलेंगी स्वास्थ्य सुविधाएं: उदय प्रताप

समय जगत, भोपाल। परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह ने कहा है कि प्रदेश में नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सेवा उनके ग्राम में ही मिले, इसके लिये राज्य सरकार स्वास्थ्य सेवाओं का ग्रामीण स्तर पर तेजी से विस्तार कर रही है। मंत्री श्री सिंह शनिवार को नरसिंहपुर के गाडरवारा के ग्राम पचामा में 49 लाख रुपये की लागत से निर्मित उप स्वास्थ्य केन्द्र भवन के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि राज्य सरकार के एक वर्ष पूरा होने पर प्रदेश में जन-कल्याण पर्व मनाया जा रहा है। इस दौरान नागरिकों की समस्याओं का निराकरण उनके ही गाँव में किया जायेगा। उन्होंने कहा कि उप स्वास्थ्य केन्द्र बन जाने से ग्रामीणों को ब्लड-प्रेशर, शुगर, खून की जाँच, गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण और टीकाकरण जैसे कामों के लिये दूर नहीं जाना पड़ेगा। उप स्वास्थ्य केन्द्र में मरीजों को निःशुल्क दवाइयाँ भी उपलब्ध रहेंगी। इस मौके पर पंचायत पदाधिकारी मौजूद थे।

डॉक्टरों की देखरेख में जारी है आडवाणी का इलाज

नई दिल्ली। भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी का दिल्ली के अपोलो अस्पताल में इलाज चल रहा है। वे फिलहाल डॉक्टरों की निगरानी में हैं और उनका स्वास्थ्य स्थिर बताया जा रहा है। पिछले दो सप्ताह से उनकी तबीयत ठीक नहीं चल रही थी, जिसके बाद उन्हें इंद्रप्रस्थ अपोलो में भर्ती कराया गया था। इंद्रप्रस्थ अपोलो के हेल्थ बुलेटिन के मुताबिक, लालकृष्ण आडवाणी को मेडिकल मैनेजमेंट और जांच के लिए इंद्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल के आईसीयू में भर्ती कराया गया है। वे सीनियर न्यूरोलॉजिस्ट डॉ.विनीत सूरी की देखरेख में हैं और फिलहाल उनकी हालत स्थिर है।

आप ने जारी की 38 नामों की चौथी कैंडिडेट लिस्ट

नई दिल्ली। दिल्ली की सत्तारूढ आम आदमी पार्टी ने अपनी चौथी और फाइनल लिस्ट जारी कर दी है. पार्टी संयोजक अरविंद केजरीवाल अपनी पारंपरिक नई दिल्ली सीट से चुनाव लड़ेंगे तो सीएम आतिशी कालकाजी से मैदान में होंगी. मंत्री सौरभ भारद्वाज ग्रेटर कैलाश और गोपाल राय बाबरपुर से प्रत्याशी बनाए गए हैं. आप ने इस लिस्ट में 38 प्रत्याशियों की सूची जारी की है। अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली आप की आखिरी सूची में ज्यादातर नाम वे हैं जिन्होंने 2020 का विधानसभा चुनाव जीता था यानी इसने निवर्तमान विधायकों को दोबारा टिकट दिया है. जबकि सीएम आतिशी कैबिनेट के मंत्रियों सौरभ भारद्वाज, इमरान हुसैन, गोपाल राय और मुकेश कुमार अहलावत का टिकट दोहराया गया है. इसके अलावा आप ने पार्टी के बड़े चेहरों में से सोमनाथ भारती, दुर्गेश पाठक और अमानातुल्ला खान पर भी भरोसा जताया गया है। 38 प्रत्याशियों की लिस्ट में हैरान करने वाला नाम रमेश पहलवान का है जिन्होंने आज ही अरविंद केजरीवालु की मौजूदगी में आप ज्वाइन की है. रमेश पहलवान को कस्तुरबा नगर से टिकट दिया गया है. रमेश की पत्नी कुसुमलता पार्षद हैं. कुसुमलता ने भी आप ज्वाइन की है. दोनों पति-पत्नी ने 2017 में आप का साथ छोड़ दिया था और सात साल के अंतराल के बाद आप ज्वाइन की है।

आयोजन अतिथियों के सारगर्भित उद्बोधन को सभी ने सराहा

निखिलेश माहेश्वरी की पुस्तक का हुआ विमोचन

समय जगत, भोपाल। विद्याभारती के मध्य प्रांत संगठन मंत्री निखिलेश माहेश्वरी की पुस्तक 'राष्ट्रसेविका मां अहिल्याबाई होल्कर' का विमोचन राजधानी में रविवार को संपन्न हुआ। गौरांजनी सभागार रवीन्द्र भवन भोपाल में आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीराम आरावकर अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री विद्याभारती अखिल भारतीय संस्थान नई दिल्ली रहे। जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता अशोक पांडेय प्रांत संघ चालक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मध्य भारत ने की। कार्यक्रम में सारस्वत अतिथि के रूप में प्रदेश के स्कूल शिक्षा मंत्री राव उदय प्रताप सिंह व राज्य सूचना आयुक्त म.प्र. डॉ वंदना गांधी उपस्थित रहे।

उक्त कार्यक्रम में अतिथियों के सारगर्भित उद्बोधन को सभी के द्वारा सराहा गया। कार्यक्रम में विद्याभारती के शिरोमणि दुबे के अतिरिक्त अन्य पदाधिकारियों की उपस्थिति के साथ सिरोंज विधायक उमाकांत शर्मा एवं भोपाल दक्षिण पश्चिम के विधायक भगवान दास सबनानी की उपस्थिति भी उल्लेखनीय रही।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 64वें प्रांत अधिवेशन के लिए हुआ भूमि पूजन

समय जगत, झांसी । अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद कानपुर प्रांत के 64वें प्रांत अधिवेशन के आयोजन हेतु रविवार, 15 दिसंबर 2024 को आयोजित भूमि पूजन कार्यक्रम अत्यंत भव्य और सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।कार्यक्रम का आयोजन झाँसी स्थित महारानी लक्ष्मीबाई राजकीय पैरामेडिकल कॉलेज के युग सृजेता स्टेडियम में किया गया, जिसमें वैदिक विधि-विधान के साथ भूमि पूजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर झांसी महानगर के कार्यकर्ता, शिक्षक ,पैरामेडिकल इकाई के कार्यकर्ता और अनेक नगर के प्रतिष्ठित गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित वक्ताओं ने प्रांत अधिवेशन की महत्ता पर प्रकाश डाला और युवाओं के विकास तथा शिक्षा में विद्यार्थी परिषद की भूमिका को रेखांकित किया। भूमि पूजन कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ भाग लिया। गौरतलब है कि 64वें प्रांत अधिवेशन का आयोजन 23 से 25 दिसंबर 2024 को झाँसी में होगा, जो शिक्षा और युवाओं के समर्पित विकास हेतु विभिन्न सत्रों और कार्यक्रमों का केंद्र बनेगा। इस मौके पर विद्यार्थी परिषद के प्रांत अध्यक्ष डॉ. ब्रजेश मिश्र, प्रांत मंत्री शिवाराजे बुन्देला, मनेन्द्र सिंह गौर ,आचार्य हरिओम पाठक, कमली सिंह परीछा, एमएलसी रमा निरंजन, संघर्ष सेवा समिति के संस्थापक अध्यक्ष संदीप सरावगी, डॉ. आशीष अग्निहोत्री, भाजपा जिलाध्यक्ष हेमन्त परिहार, अमित साहू, अमित चिरवारिया,कुंवर लाखन सिंह अस्ता, रामजी सिंह परिहार, अभय ब्रह्मचारी, ऋषि जैन , ज्ञानेन्द्र सिंह राना, शुभम , हर्ष जैन, रामकिशन निरंजन,सुयश शुक्ला, रसकेन्द्र गौतम समेत बड़ी संख्या में परिषद कार्यकर्ता उपस्थित रहे। इस अवसर पर विद्यार्थी परिषद के पदाधिकारियों ने सभी कार्यकर्ताओं और आमजन का कार्यक्रम में शामिल होकर इसे सफ ल बनाने के लिए आभार व्यक्त किया।

18 को कांग्रेस करेगी विधान सभा का घेराव : नीलांशु चतुर्वेदी

पूर्व केंद्रीयमंत्री प्रदीप जैन आदित्य बनाए गये वरिष्ठ पर्यवेक्षक

समय जगत, झांसी । आज सर्किट हाउस में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव व उत्तर प्रदेश के सह प्रभारी पूर्व विधायक नीलांशु चतुर्वेदी ने कहा कि 18 दिसंबर को कांग्रेस विधान सभा का घेराव करेगी।

उन्होंने पत्रकारों को बताया कि प्रदेश की जनता योगी सरकार के कुशासन से त्राहि- त्राहि कर रही है। सरकार हर मोर्चे पर विफल साबित हो रही है और अपनी नाकामी छुपाने के लिये सिर्फ धार्मिक तुष्टीकरण की नीति अपना रही है। सरकार की जन विरोधी नीतियों बिजली कम्पनियों के निजीकरण, प्रदेश के किसानों , युवाओं की समस्याओं, प्रदेश की बदहाल स्वास्थ सेवाएं एवं ध्वस्त कानून व्यवस्था, झांसी मेडीकल कॉलेज में हुये अग्निकांड एवं झांसी नगर निगम में स्मार्ट सिटी में हुये 300 करोड़ के घोटाला तथा अन्य जनहित से जुडे मुद्दों को लेकर विधान सभा का घेराव किया जायेगा। जिसमें बुंदेलखण्ड- कानपुर जोन से भारी संख्या में कार्यकर्ता शामिल होंगे। इसके लिये जनपदवार वरिष्ठ पर्यवेक्षक नियुक्त किये गये है। झांसी जनपद का पर्यवेक्षक पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन आदित्य को बनाया गया है। इस मौके पर पूर्व विधायक बृजेन्द्र व्यास उर्फ डमडम महाराज, प्रदेश महासचिव राहुल रिछारिया, प्रदेश सचिव अनुज मिश्रा, प्रदेश सचिव मनीराम कुशवाहा, कार्य वाहक जिलाध्यक्ष योगेन्द्र सिंह पारीछा व कार्यवाहक शहर अध्यक्ष मनोज गुप्ता , बलवान सिंह यादव, प्रिंस कटियार, अमीर चंद आर्य, गिरजा शंकर राय, अनुसूचित जाति विभाग के जिलाध्यक्ष शैलेन्द्र वर्मा आदि उपस्थित रहे। इस सम्बंध में कांग्रेस कार्यालय मानिक चौक में जनपद झांसी व ललितपुर के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की कार्यवाहक जिलाध्यक्ष योगेन्द्र सिंह पारीछा की अध्यक्षता में हुई बैठक को संबोधित करते हुये राष्ट्रीय सचिव नीलांशु चतुर्वेदी ने कहा कि भाजपा के कुशासन के खिलाफ 18 को लखनऊ में विधान सभा घेराव को सफल बनाने के लिये भारी संख्या में भागेदारी करने का आव्हान किया। बैठक को चंद्र भूषण बुंदेला गुड्डू राजा, राहुल रिछारिया, प्रभारी प्रदेश सचिव अनुज मिश्रा, मनीराम कुशवाहा, बलवन्त राजपूत, दीपक शिवहरे, शिव नारायण परिहार आदि ने संबोधित किया।

इस अवसर पर मुकेश अग्रवाल, नीता अग्रवाल, सरला भदौरिया, अरविंद बब्लू, अखिलेश गुरुदेव, युवराज सिंह यादव, अमीरचंद आर्य,पंकज मिश्रा, इन्दिरा रायकवार, राजपाल सिंह बुंदेला, प्रकाश नारायण सैनी, रम्मू कनकने, मनीष दुबे, राकेश रजक , पवन विश्वकर्मा, रामनरेश दुबे, सरदार जसपाल बन्टी, मनीष श्रीमाली, आशीष दुबे, सुशील अहिरवार, प्रदुम्न सिंह तोमर सुखदेव सिंह दीपू, अश्विनी पश्तो, अभिषेक चतुर्वेदी, राजेंद्र बुंदेला, वीरेंद्र यादव, प्रवीण कोतवाल भारत राय नफीस मकरानी, शाहनवाज खान, महिपाल प्रजापति सचिन श्रीवास जीतू राजा श्रीवास राजकुमारी दुबे सफीक अहमद मुन्ना डॉ राम सिंह यादव मोहन चंदेल, आदि मौजूद रहें। संचालन मनोज गुप्ता ने किया और अंत में जिला अध्यक्ष योगेंद्र सिंह पारीछा ने आभार व्यक्त किया।

पांच दिवसीय मानस सम्मेलन के समापन पर बही भक्ति की रसधारा

समय जगत, गरौठा। अयोध्या के पूज्य महंत नृत्य गोपाल दास जी महाराज की प्रेरणा से हनुमानगढ़ी मंदिर पर चल रहे पांच दिवसीय श्री रामचरितमानस सम्मेलन का समापन हो गया। पांचवे दिन बांदा चित्रकूट से पधारे डॉ राम गोपाल तिवारी ने देह में विदेह के दर्शन कराते हुए कहा कि राम चरित मानस अदृश्य शक्ति के दर्शन कराता है।जैसे बिजली के पंखा को साधारण बात है,लेकिन वह कैसे चला यह विशेषज्ञ ही बताएगा। भक्ति को प्राप्त करना है तो संसार की ओर से आंख बन्द कर लें,तभी भक्ति की प्राप्ति होगी।सम्पाती की कथा सुनाते हुए उन्होंने कहा कि देह के नेत्रों से देही को देख सकते हैं बैदेही को नहीं।बैदेही को देखने के लिए दिव्य दृष्टि का होना आवश्यक है।मानस मर्मज्ञ पं राजेन्द्र पाठक ने लंका कांड का वर्णन करते हुए कहा कि भारत का विज्ञान लंका के विज्ञान से अधिक शक्तिशाली था।भारत के ऋषियों की हड्डियां इतनी शक्ति शाली थीं कि आसमान से उड़ने वाले की छाया पकड़कर पटक लेतीं थीं।उन्होंने आगे कहा कि रावण ने सीता जी से कहा कि एक बार हमारी ओर देख भी लो,लेकिन सीता जी ने कहा कि पापी यदि बाई पैर को भी तुम छू नहीं सकते भस्म हो जाओगे।जो मेरे स्वामी का शत्रु है,वह हमारी दृष्टि का पात्र नहीं हो सकता।जिसका मन विषयों में डूबा रहता है,वह परमात्मा को नहीं समझ सकता ।भक्ति को प्राप्त करना है तो भक्त तक पहुंचना जरूरी है।हनुमानजी भक्त है माता सीता भक्ति है।लंका में सीता जी तक पहुंचने के लिए हनुमानजी के पास पहुंचना होगा।कथा में ऑर्गन पर राम किशोर मिश्रा एवं तबले पर हरीमोहन तिवारी ने संगत की। श्री रामचरितमानस सम्मेलन की आरती कथा संयोजक मंडल के पूर्व स्टेशन अधीक्षक राम प्रताप त्रिपाठी ,गायत्री त्रिपाठी ,बीना त्रिपाठी ,भोलानाथ त्रिपाठी अशोक त्रिपाठी एवं गीता त्रिपाठी ने की ।

इस मौके पर प्रेम नारायण मोदी,बंशीधर रावत,संतोष रावत,सितार वादक सरजू शरण पाठक,ग्राम प्रधान खड़ौरा मनोज यादव,आशीष कौशिक,उदय भान मिश्रा,लक्ष्मी प्रसाद द्विवेदी, द्रगचन्द्र तिवारी,पवन त्रिपाठी,डॉक्टर ओम प्रकाश अरजरिया ,ज्योतिष विशेषज्ञ कौशल किशोर शास्त्री,संतोष कुमार गेडा, रविन्द्र गुप्ता सर जी,अशोक विश्वकर्मा,दया शरण गुप्ता ,रमेश चंद्र शर्मा रामकुमार रिछारिया,प्रेमचंद्र तिवारी,नाथूराम पाठक,लखन लाल सोनी,अयोध्या प्रसाद वर्मा,राम जी पटैरिया,मुन्नालाल शर्मा,मनमोहन शर्मा,जानकी शरण सौनकिया ,जगदीश प्रकाश पाठक,राम पाल खरे,मनीष मिश्रा मुन्नालाल उपाध्याय,राजेन्द्र सोनी एडवोकेट,महेंद्र सिंह परिहार ,अबधेश मिश्रा आदि उपस्थित रहे।

जताया शोक

झांसी। निषाद पार्टी जिला झांसी की एक शोक सभा झांसी जिला अध्यक्ष बाबा एसके रायकवार व हरिश्चंद्र योगीराज शिव शंकरगणेश हनुमान जी सिद्ध प्राचीन खाती बाबा मंदिर मुरारी नगर की पुजारी हरिश्चंद्र योगीराज के संयुक्त रूप से अध्यक्षता में संपन्न हुई जिसमेंबराठा निवासी समाजसेवी हरियाणा रायकवार की पचासी वर्ष की उम्र में निधन हो जाने पर गहरा शोक व्यक्त किया गया दिवंगत आत्मा की शांति हेतु 2 मिनट का मौन धारण कर उनकी आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की गई उनकी समाज सेवा की चर्चा करते हुए होना श्रद्धांजलि अर्पित की गई इस मौके पर रामकिशन रायकवार, पूर्व पार्षद किशोरी प्रसाद रायकवार, राजकुमार ध्वनि, राहुल कश्यप, संदीप यादव, बट्टू कुमार बट्टा गुरु पत्रकार झांसी, जीतू रैकवार, लक्ष्मण रैकवार, प्रदीप रैकवार, दीपक परिहार, उत्कर्ष प्रताप सिंह, छोटू रैकवार, अर्चना रैकवार, पिंटू रैकवार, रेखा भटनागर, विवेक सर, अजय कश्यप, राम भरोस राय कवार, पर्वत रैकवार, कमलेश रैकवार आनंद रैकवार आदि समाजसेवी एवं निषाद पार्टी के कार्यकर्ताओं सदर गणों मौजूद रहे।

सरदार वल्लभ भाई पटेल का मनाया 74 वां परिनिर्वाण दिवस

समय जगत, झांसी। अखिल भारतीय कुर्मी क्षत्रिय महासभा एवं बुंदेलखंड कुर्मी क्षत्रिय कल्याण समिति के संयुक्त तत्वाधान में अखंड भारत के शिल्पी लौह पुरुष भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल जी के,74 वे परिनिर्वाण दिवस पर झाँसी के पटेल चौक पर स्थित लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा पर प्रातः 10 बजे मुख्य अतिथि कालका प्रसाद मुखिया राष्ट्रीय सचिव (अपना दल एस) एवं अध्यक्ष आर0 पी0 निरंजन रिटायर्ड अधिशाषी अभियंता सी0 पी0डब्लू0 डी0 के आतिथ्य मे माल्यार्पण किया गया।

वक्ताओं ने अपने उद्बोधन मे कहा कि इस देश को संगठित करने मे पटेल जी अविस्मरणीय योगदान है जिसको कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने अपनी कार्य शैली और सूझबूझ से 565 रियासतों का विलय कराया था। उनके परिणाम आप सभी के सामने परिलक्षित हो रहे है। भारत के गरीबों के उत्थान के लिए उनके द्वारा बहुत से उन्नयन के कार्य किए गए। पटेल जी की जितनी भी बात की जाए वह उनकी प्रतिभा के आगे कम ही होगी उनका एक भी गुण व्यक्ति अपने जीवन मे उतार ले तो वो धन्य हो जाएगा, ये वो त्यागी पुरुष थे जिन्होंने प्रधानमंत्री जैसे पद को त्याग दिया था उनके जैसा व्यक्तित्व मिलना बहुत मुश्किल है।'

'परिनिर्वाण दिवस के कार्यक्रम पर आर एस गौर, गुलज़ारी लाल निरंजन,अवधेश निरंजन,सुदेश गौर, डॉ पंकज पटेल इ वीरेंद्र निरंजन, जगरूप सचान,सूबेदार एन डी निरंजन, श्रीपत सहाय निरंजन, डॉ जी एस चौधरी,प्रो एस के कटियार मधुकर निरंजन डॉ प्रताप ,सुरेंद्र प्रकाश निरंजन, ई आलोक निरंजन युवा महामंत्री, लोकेंद्र पटेल,के के निरंजन, प्रेमनारायण निरंजन ,माता प्रसाद निरंजन,कुंवर वीरेंद्र निरंजन, चरण सिंह पटेल,महिपाल निरंजन,महेंद्र पटेल, रानू पटेल, डॉ अनिल कुमार निरंजन, रघुराज सिंह, अंकित पटेल, श्रीमति अवधेश कुमारी,डॉ अरूण पटेल पवन ,सचिन पटेल, अमर सिंह, हिमांशु पटेल,मोहित पटेल,नरेंद्र कुमार,राजेंद्र पटेल, केशव निरंजन, वीरेंद्र कुमार वर्मा, नारायण दास पटेल,हर्ष पटेल, शिव निरंजन,सतीश पटेल,विकास पटेल नोटा,कमलेश पटेल,आशीष निरंजन, पी के निरंजन आदि समाज के गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इस मौके पर डा0जी0एस0चौधरी विभागाध्यक्ष को'भारतीय बाल रोग अकादमी (आई ए पी) राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य के पद पर, अभी तक के सबसे अधिक वोटो से राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य के रूप में निर्वाचित होने पर उनको सम्मानित भी किया गया'।

संयोजक-अवधेश निरंजन ने किया व कहा लौहपुरुष सरदार पटेल जी की समाधि स्थल दिल्ली के राजघाट में बनाई जाए। 'संचालन डॉ वी के निरंजन एवं आभार बुंदेलखंड महामंत्री विनोद निरंजन ने व्यक्त किया।'

बाइक की टक्कर से महिला गंभीर रूप से घायल

समय जगत, गुरसराय। रोड पर कर रही महिला को बाइक सवार ने जोरदार टक्कर मारी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। आनन फानन में उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र इलाज के लिए भेजा गया। विनीत गार्डन के सामने टीचर्स कॉलोनी वाली गली के सामने एक यादव परिवार की महिला जो सड़क पार कर रही थी, एकाएक विपरीत दिशा से आ रही तेज बाइक की टक्कर उसमें लगी जिससे वह लहू लोहान हो गई तथा उसके हाथ पैर से मांस के लोथड़े निकल गए ।बाइक सवार गायब हो गया ,जब तक दुकानदार मोहल्ला वालों ने इकट्ठा होकर उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा।

वैदिक अनुष्ठान का हुआ शुभारंभ

समय जगत, गुरसरांय। श्री लक्ष्मी नारायण भगवान की कृपा से वैदिक अनुष्ठान का शुभारंभ हुआ, जिसमें ज्योतिष विशेषज्ञ आचार्य कौशल किशोर मिश्रा शास्त्री गरौठा के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम चल रहा है ।श्री गुरु बृहस्पति जप, गजेन्द्र मोक्ष पाठ, नवग्रह स्तोत्र पाठ, सूर्य अष्टक पाठ पूजा-अर्चना वैदिक ब्राह्मणों द्वारा किया जा रहा पंडित प्रमोद चतुर्वेदी, पंडित मनोज गौतम शास्त्री, पंडित शिवम मिश्रा शास्त्री, प्रदीप अरजरिया, मुख्य यजमान पंडित मुन्ना लाल शर्मा बाबू जी एवं शिवदत्त शर्मा गरौठा ध्रुव मिश्रा, मनीष मिश्रा, रिंकू अरजरिया शिवेंद्र आदि उपस्थित रहे।

भाजपा जिला महामंत्री अमित साहू ने एस टी ज्यूडस अनाथ आश्रम के बच्चों के साथ मनाया जन्म दिवस

समय जगत, झांसी । भाजपा महामंत्री ने अनाथ आश्रम के बच्चों के साथ अपना जन्म दिवस मनाया ... महामंत्री ने बच्चों को किताबें व पुस्तकें तथा अन्य प्रकार के जरूरत की चीजों को भी आश्रम को भेट की ... श्री मति किरन अमित साहू ने बताया कि आश्रम में बच्चों की अच्छी परवरिश हो रही है यही बच्चे बड़े होकर अच्छे सामाजिक पदों पर पहुंचेंगे ... भाजपा जिला महामंत्री ने बताया कि भाजपा सरकार हर वर्ग एवं हर नागरिक के साथ प्रतिबद्धता के साथ खड़ी है ।

इस अवसर पर भाजपा वरिष्ठ नेता अमित चिरवारिया , श्रीमति किरन अमित साहू , सौरभ साहू .. गौरव गोस्वामी .. गोपाल द्विवेदी ,आकाश ठाकुर, सिद्धेश दुबे , सिद्धांत दुबे , मुदित साहू , मोहनीश साहू .. ऋषि साहू ..समेत अन्य लोग उपस्थित रहे ।

हत्या के मामले में तीन वर्ष चले मुकदमे में दस आरोपी हुए दोषमुक्त

समय जगत, झांसी। न्यायालय विशेष न्यायधीश अनुसूचित जाति /अनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम झांसी धीरेंद्र कुमार तृतीय की अदालत ने तीन वर्ष पूर्व हत्या के मामले में अभियुक्त बनाए गए दस आरोपियों को हत्या का आरोप सिद्ध न होने पर दोषमुक्त कर दिया है। एक आरोपी नाबालिग होने पर प्रकरण किशोर न्यायलय में विचाराधीन है।

अभियुक्तों की ओर से पैरवी कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता विवेक कुमार वाजपेई ने जानकारी देते हुए बताया कि मध्यप्रदेश के जिला ग्वालियर गदाईपुरा व हाल आदर्श नगर सीपरी निवासी रचना रायकवार ने 7 सितंबर 2020 को रक्सा थाना में रिपोर्ट दर्ज कराते हुए बताया था कि उसका भाई राकेश रायकवार अपने साथी रक्सा के ग्राम हैवदा निवासी मूलचंद्र, कल्लू आदि से मिलने गया था। उन लोगों से उसने भाई को रुपए पैसे व गाड़ी चाहिए थी। लेकिन यह लोग नहीं दे रहे थे। उसने रिपोर्ट में बताया कि इन्हीं लोगों ने उसके भाई के खिलाफ तीन सितंबर 2020 को झगड़े की रिपोर्ट दर्ज कराई थी और तभी से उसका भाई गायब था। जिसकी लाश आज गांव में नजदीक तालाब में मिली। उसने आशंका जाहिर करते हुए बताया था कि कल्लू, मूलचंद्र, मुन्ना, रामकिशन, कप्तान, सुरेंद्र, कन्हई, शोभाराम, नाबालिग आकाश, मनीष, राज केवट ने मिलकर उसके भाई की हत्या कर शव को फेंक दिया है। पुलिस ने सभी आरोपियों के खिलाफ अभियोग पंजीकृत कर सभी को जेल भेजते हुए न्यायलय में आरोप पत्र दाखिल कर दिया था। इस मामले में आकाश नाबालिग था तो उसका आरोप पत्र किशोर न्यायलय में दाखिल किया था। इस प्रकरण में सुनवाई के बाद न्यायालय ने सभी दस आरोपियों पर हत्या का आरोप सिद्ध न होने पर सभी को दोषमुक्त कर दिया है।साथ ही आकाश की पत्रावलियां किशोर न्यायलय में चलने पर उसका फैसला किशोर न्यायालय ओर छोड़ दिया है।

युवा नवोन्मेषक सम्मेलन और राइज झांसी हैकाथांन 2.0 का समापन

समय जगत, झांसी। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय झांसी एवं राइज झांसी के संयुक्त तत्वाधान में युवा नवोन्मेषक सम्मेलन और राइज झांसी हैकाथांन 2.0 का समापन समारोह कृषि विश्वविद्यालय सभागार में आयोजित हुआ। इसके मुख्य अतिथि डॉ संजय कुमार , अध्यक्ष कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल , नई दिल्ली एवं अध्यक्षता कुलपति डॉ अशोक कुमार सिंह ने की। झांसी नगर निगम से धीरज गुप्ता, नगर स्वास्थ्य अधिकारी एवं जूरी सदस्य, डीन डायरेक्टर्स ने भी भाग लिया। पूर्वाह्न में आईडिया पिचिंग मे इनोवेटिव आइडियाज और स्टार्टअप्स की प्रतियोगिता में जूरी ने सुना ओर उनका मूल्यांकन किया।स्टार्टअप्स श्रेणी में प्रथम पुरस्कार द्वितीय पुरस्कार सुरक्षा कवच तृतीय पुरस्कार मत्स्य संरक्षण एवं एक महिला डिजीड ईयर को दिया गया। इसी तरह इनोवेटिव आइडियाज श्रेणी में प्रथम पुरस्कार अदीबा एंड टीमद्वितीय पुरस्कार इमरान अली एंड टीम को एवं तृतीय पुरस्कार विशाल मंडल एवं एक महिला पुरकार सिमरनजीत कौर को दिया गया।प्रबंधक राइज अंकित रजक ने दो दिवसीय युवा समागम की रिपोर्ट प्रस्तुत की।मुख्य अतिथि डॉ संजय सिंह ने नए आइडियाज और उनका धरातल पर उतरने के साथ मार्केट देने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय लेवल पर यह हैकाथांन और युवा समागम कार्यक्रम सराहनीय है।विद्यार्थियों से कहा कि हम नया कैसे करें, कैसे कर सकते हैं। इस पर भी विचार करने की आवश्यकता है।उन्होंने नवाचार की कई उदाहरण प्रस्तुत किये।कुलपति डॉ अशोक कुमार सिंह ने कहा कि विद्यार्थीयों को रोजगार परक उद्योगों में कैसे पदार्पण करें और कैसे उद्यमी बने इस हेतू यह कानक्लेव आयोजित किया गया । इस आयोजन के माध्यम से युवाओं को अपनी प्रस्तुत करने का अवसर इस कानक्लेव ने दिया।आयोजन अध्यक्ष डॉ अनिल कुमार ने कहा कि दो दिवसीय आयोजन में प्रदेश एवं देश के अन्य भागों से युवाओं ने प्रतिभाग किया। प्रथम दिवस दीनदयाल सभागार में एवं द्वितीय दिवस रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर रोड झांसी में संपन्न हुआ। बुंदेलखंड जैसे क्षेत्र में नवाचार की अपार संभावनाएं है। यह आयोजन युवाओं में आत्मनिर्भरता समस्या समाधान की क्षमता और स्टार्टअप्स के लिए उपयुक्त दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास है। अतिथियों द्वारा विजेता टीम एवं युवाओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर विभिन्न शिक्षण संस्थानों से आए विद्यार्थी, शिक्षक, कृषि विश्वविद्यालय के सभी अधिकारी वैज्ञानिक, झांसी महानगर के गणमान्य नागरिक उद्योगपति, व्यापारी एवं नगर निगम राइज के अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे।

कांग्रेस जनों ने सरदार वल्लभभाई पटेल को किया याद

समय जगत, झांसी । जिला कांग्रेस कार्यालय मानिक चौक में लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की पुण्यतिथि प्रदेश सचिव मनीराम कुशवाहा के मुख्य अतिथि में एवं महिला कांग्रेस की जिला अध्यक्ष श्रीमती सरला भदोरिया की अध्यक्षता में मनाई गई। इस अवसर पर उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए प्रदेश सचिव मनीराम कुशवाहा ने कहा कि लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने देश का भूगोल बदलने का काम किया उन्होंने 500 से अधिक रियासतों का एकीकरण कर एक अखंड भारत की नींव रखी। आज उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर हमें उनके विचारों को आत्मसात कर इस देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए कार्य करना होगा यही उनकी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश मिला कांग्रेस की उपाध्यक्ष नीता अग्रवाल अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष शैलेंद्र वर्मा षीलू, हरिशंकर वाल्मीकि, दिनेश वर्मा, इमरान खान, नीरज कुशवाहा, लोकेंद्र सिंह यादव, वसीम उद्दीन दयाल दास डोंगरे आदि ने सरदार वल्लभभाई पटेल के चित्रपट पुष्पांजलि करते हुए अपने विचार व्यक्त किये।

बंगरा और बमौर मास्टर प्रीमियर लीग के सेमीफाइनल में अनिल बबेले व चेतन कुशवाहा बने मैन ऑफद मैच

समय जगत, झांसी। आर एन एस वर्ल्ड स्कूल के क्रिकेट ग्राउंड पर चल रही मास्टर प्रीमियर लीग के 7वें सीजन के पहले क्वार्टर फाइनल में बंगरा ने गुरसराय को 3 विकेट से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

गुरसराय ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवरों में 9 विकेट खोकर 165 रनों का लक्ष्य दिया। गुरसराय की ओर से विकास नायक ने 36, रवि कुशवाहा ने 32 व अभिषेक चतुर्वेदी ने 19 रनों का योगदान दिया। बामौर की ओर से गेंदबाजी करते हुए ज्ञानेंद्र यादव ने 3 विकेट, अमरदीप व अरविंद्र राजपूत ने 2दू2 विकेट एवं शिवम निरंजन ने 1 विकेट लिया। इसके जवाब में उतरी बंगरा की टीम ने 2 गेंद शेष रहते मैच को 3 विकेट से अपने नाम कर लिया। बंगरा की ओर से अनिल बबेले ने शानदार 69 रन, रम्मू यादव ने 38 व शिवम निरंजन ने 24 रनों का योगदान दिया। गुरसराय की ओर से गेंदबाजी करते हुए अजय देवलिया ने 4, हर्ष नायक ने 2 व रवि कुशवाहा ने 1 विकेट की सफलता हासिल की।मैच में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए अनिल बबेले को मैन ऑफ द मैच चुना गया।दूसरा दूसरा क्वार्टर फाइनल मुकाबला मऊरानीपुर व बामौर के बीच खेला गया। बामौर ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। मऊ ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवरों में 9 विकेट के नुकसान पर 145 रन बनाए। मऊ की ओर से नरेंद्र यादव 43, मुकेश मिश्रा 29 व अभिषेक पाठक ने 27 रनों का योगदान दिया। बामौर की ओर से केतन कुशवाह ने 5 विकेट, कुलदीप यादव ने 2 विकेट, गुलाब व नारायण राजपूत ने 1दू1 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी बामौर टीम ने 17 ओवरों में 7 विकेट के नुकसान पर मैच को 3 विकेट से अपने नाम कर लिया। बामौर की ओर से जितेंद्र कुमार ने 37 व सूर्यकांत ने 33 रन बनाए। मऊ की ओर से गेंदबाजी करते हुए मुकेश और नरेंद्र यादव ने 2 दू2 व दयाशंकर और सुनील अनुरागी ने 1दू1 विकेट लिए।मैच में शानदार प्रदर्शन करने के लिए केतन कुशवाह को मैन ऑफद मैच चुना गया।

इस अवसर मनोज यादव राजू यादव डॉ देवेंद्र यादव राजीव पाल राजेंद्र वर्मा प्रभात यादव महेंद्र यादव अजेंद्र यादव डॉ खुर्शीद रवि यादव रामनारायण शीलेंद्र यादव मनीत राजपूत अमरदीप बाजपेई अजय वर्मा नितिन शर्मा हरिओम संदीप कुशवाहा ,आदि उपस्थित रहे ।

रालोद 17 से 23 दिसम्बर तक करेगा गोष्ठियों का आयोजन

समय जगत, झाँसी। राष्ट्रीय लोकदल किसान दिवस पर मंगलवार 17 से 23 दिसम्बर तक करेगा किसान संगोष्ठियों का आयोजन राष्ट्रीय लोकदल के द्वारा बुधवार 18 दिसंबर को महिला प्रकोष्ठ की बैठक एवं किसान संगोष्ठी का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है ।

जिसमें प्रतिभाग करने के लिए प्रदेश अध्यक्ष महिला श्रीमती परिणीता सिंह प्रदेश उपाध्यक्ष महिला श्रीमती मंजू शुक्ला प्रदेश महासचिव महिला सुजाता चौधरी प्रतिभाग करने हेतु झांसी आगमन हो रहा है।कार्यक्रम रेलवे पेंशनर ऑफिस हीरोज ग्राउंड के सामने शिवपुरी बाजार में आहूत किया गया है।उक्त जानकारी प्रदेश प्रवक्ता अंचल अडजरिया ने एक प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

कलेक्टर ने सात उपार्जन केन्द्रों का जिम्मा महिला स्वसहायता समूह को सौंपा

पन्ना। कलेक्टर सुरेश कुमार द्वारा खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन के लिए जारी निर्देशों के तहत सात खरीदी केन्द्रों का आवंटन महिला स्वसहायता समूहों को सौंपा गया है। जिसके तहत रैपुरा तहसील में बंजारी माता स्वसहायता समूह हरदुआ पटेल को कृषि उपज मण्डी रैपुरा, जय श्री राम स्वसहायता समूह झांझर को ग्राम बघवार कला प्रांगण, सरस्वती स्वसहायता समूह कृष्णगढ़ को ग्राम मलघन प्रांगण तथा जय मां जोगनी स्वसहायता समूह मोहन्द्रा को रावतपुरा वेयरहाउस मनगुवां खरीदी स्थल आवंटित किया गया है। इसी तरह शाहनगर तहसील में सन्यासी बाबा स्वसहायता समूह शाहनगर को ग्राम बोरी प्रांगण, सिमरिया तहसील में शिवमंडल स्वसहायता समूह मोहन्द्रा को सिमरिया मण्डी पैक्स गोदाम और गुनौर तहसील में सुषमा स्वसहायता समूह खमरिया द्वारा कृषि उपज मण्डी प्रांगण गुनौर में खरीदी कार्य संचालित किया जाएगा। उक्त खरीदी केन्द्रों की उपार्जित धान का प्रदाय सर्वप्रथम खरीदी केन्द्र स्थल से सीधे मिलर्स को होगा। इसके उपरांत उपार्जित धान का शासकीय गोदामों में परिवहन कर भण्डारण कराया जाएगा। स्वसहायता समूहों सहित उपार्जन कार्य से जुड़े समस्त विभागों को शासन के निर्देशानुसार उपार्जन केन्द्र स्थल पर आवश्यक व्यवस्थाएं पूर्ण कराकर किसानों का उपार्जन कार्य सुचारू रूप से संचालित करने के निर्देश दिए गए हैं। उल्लेखनीय है कि आगामी 20 जनवरी तक धान उपार्जन का कार्य सोमवार से शुक्रवार तक सुबह 8 बजे से रात्रि 8 बजे तक किया जाएगा। उपार्जित धान के त्वरित भण्डारण के निर्देश जिले में गत 2 दिसम्बर से प्रारंभ धान उपार्जन अंतर्गत अब तक 1 लाख 30 हजार 68 क्विंटल धान का उपार्जन हो चुका है, जबकि अब तक मात्र 21 हजार 299 क्विंटल धान का भण्डारण हो सका है। जिला प्रबंधक स्टेट सिविल सप्लाईज कॉर्पोरेशन एवं वेयर हाउसिंग एण्ड लॉजिस्टिक कॉर्पोरेशन द्वारा मिलर्स से अनुबंध निष्पादित कर खरीदी केन्द्रों से धान प्रदाय शुरू नहीं करने के कारण परिवहन एवं भण्डारण कार्य सुचारू रूप से संचालित नहीं हो पा रहा है। इस संबंध में जिला आपूर्ति अधिकारी द्वारा उपार्जित धान का त्वरित रूप से गोदाम में भण्डारण और मिलर्स को प्रदाय कराने के संबंध में निर्देश दिए गए हैं। बताया गया है कि जिले में 29 गोदाम स्तरीय खरीदी केन्द्र संचालित हैं, जबकि समिति स्तरीय 18 केन्द्र संचालित हैं। जिला कलेक्टर द्वारा भी धान उपार्जन, भण्डारण एवं परिवहन की समीक्षा कर रविवार सायं तक उपार्जित मात्रा के विरूद्ध शत प्रतिशत गोदामों में भण्डारण व मिलर्स को प्रदाय करने के निर्देश दिए गए हैं, जिससे किसानों को त्वरित भुगतान प्रारंभ हो सके। उपार्जन कार्य का दिया प्रशिक्षण कलेक्टर कार्यालय पन्ना के सभागार में शनिवार को समूह की महिलाओं को धान उपार्जन से संबंधित प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। जिला आपूर्ति अधिकारी, जिला प्रबंधक नान एवं सर्वेयर द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में उपार्जन प्रक्रिया, फसल गुणवत्ता, ई उपार्जन पोर्टल तथा वांछित जिम्मेदारियों के बारे में अवगत कराया गया।

पूर्व मंत्री ने जनसमस्या निवारण शिविर में हितग्राहियों को वितरित किये हितलाभ

गढ़ौला जागीर में सीएम राइज स्कूल नई पीढ़ी के लिए है बड़ी उपलब्धिः भूपेंद्र सिंह

समय जगत, खुरई। गढ़ौला जागीर प्रदेश की पहली ग्राम पंचायत है जहां 38 करोड़ की लागत से सीएम राइज स्कूल बनवाया गया है। आगे चलकर यहां नगर परिषद, महाविद्यालय, टप्पा तहसील जैसी सुविधाएं तेजी से विकसित होंगी। यह बात पूर्व गृहमंत्री, खुरई विधायक भूपेन्द्र सिंह ने यहां आयोजित जनसमस्या निवारण शिविर में आए हितग्राहियों को संबोधित करते हुए कही। पूर्व मंत्री श्री सिंह ने शिविर में यहां राशन वितरण की दूसरी दूकान खोलने, 5 लाख की लागत से यात्री प्रतीक्षालय बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने हितग्राहियों को सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत हितलाभ के चेक, स्वीकृति पत्र व प्रमाण पत्र वितरित किए। पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह ने कहा कि गढ़ौला जागीर एतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण कस्बा है। यहां के दांगी राजाओं ने गढ़ौला जागीर, खुरई और एरण परगनों में किले, गढ़ियां, बड़े बड़े तालाब और अनेक जलसंरचानाएं बनवाई थीं। हम सभी का दायित्व है कि हम इन जल संरचानाओं का संरक्षण करें और नई जल संरचानाओं को बनवाएं। उन्होंने कहा कि आज गढ़ौला जागीर के विकास और बढ़ती आबादी के लिए पेयजल आपूर्ति की वर्तमान नल जल योजना पर्याप्त नहीं है। गढ़ौला जागीर को जल जीवन मिशन योजना में जोड़ने के लिए कार्यवाही की जाएगी ताकि यहां भी हर घर में नल से पर्याप्त और शुद्ध पेय जल मिल सके।

संक्षिप्त समाचार

हाजी जावेद बने सदर

मनावर। कुरेशी समाज मनावर के सभी वरिष्ठ और युवाओं की सर्व सहमति से समाज का सदर हाजी जावेद कुरेशी को बनाया गया सभी समाज के सभी लोगों ने इस्तकबाल किया और मुबारकबाद दी उक्त जानकारी पुर्व पार्षद अरशद कुरैशी ने दी।

पीएमश्री कॉलेजों में प्रोफेसरों की नियुक्ति नहीं होने से छात्रों की पढ़ाई होगी प्रभावित

समय जगत, मनावर । पीएम श्री कॉलेजों में प्रोफेसरों की नियुक्ति की प्रक्रिया पिछले 6 माह से चल रही है परंतु अब तक उच्च शिक्षा विभाग इस कार्य को अंजाम नहीं दे पाया है। इन पीएम श्री कालेज आफ़ एक्सीलेंस में विभाग द्वारा 1900 शैक्षणिक और 700 अशैक्षणिक पदों को स्वीकृति भी दी है। प्राचार्यों की नियुक्ति होने के बाद प्राध्यापकों एवं सहायक प्राध्यापकों की सूची की आस लगाए बैठे उम्मीदवारों को बहुत ही बेसबीं से इंतजार है। विभाग द्वारा 7-20 नवंबर तक 7 संभागों में 2800 से अधिक विभिन्न विषयों के प्राध्यापकों सहायक प्राध्यापकों के साक्षात्कार की प्रक्रिया संपन्न करा ली गई किंतु आज तक चयनित सूची नहीं आ पाई है जिसका प्रभाव छात्रों की पढ़ाई पर पढ़ रहा है। विदित हो कि विभाग द्वारा पीएमश्री कॉलेजों में वर्तमान में अध्यापन का मोर्चा संभालने के लिए प्रदेश के विभिन्न शासकीय महाविद्यालयों से प्राध्यापकों को प्रतिनियुक्ति पर भेजा है जिनका कार्यकाल भी 15 दिसंबर तक समाप्त हो जाएगा। यदि विभाग शीघ्र ही सूची जारी नहीं करता है तो छात्रों को पढ़ाई का नुकसान होगा। आखिर ऐसी कौन सी वजह है जिसके कारण सूची नहीं आ पा रही है । यह तो विभाग ही जाने। विभाग द्वारा पहले ऑनलाइन आवेदन बुलवाए गए फिर संशोधन कर पुनः आवेदन बुलवाए गए जिसमें 5 महीने का समय बीत गया अब साक्षात्कार हो गए है लेकिन सूची बनने के बाद भी नहीं आ पा रही है। नियुक्ति प्रक्रिया में वैसे ही विभाग ने काफी समय बीता दिया है। इससे अच्छा होता की अतिथि विद्वानों की नियुक्ति की तरह उच्च शैक्षणिक योग्यता, अनुभव अंक एवं शोधपत्र प्रकाशन के आधार पर प्राध्यापकों और सहायक प्राध्यापकों की मेरिट बना लेते तो आज पीएमश्री का उद्देश्य पूरा हो जाता।

अभाविप की कालेज परिसर की कार्यकारिणी में प्राचार्य व प्रोफेसर के मौजूद रहने पर एन एसयूआई ने लगाये आरोप

समय जगत, सिरोंज। शासकीय लाल बहादुर शास्त्री स्नाकोत्तर महाविद्यालय के गत दिनों अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की परिसर कार्यकारिणी के गठन के दौरान आयोजित कार्यक्रम कालेज प्रांगण में आयोजित होकर कालेज प्रभारी (प्राचार्य) डॉ लालचंद राजपूत एवं वरिष्ठ प्राध्यापक सीता रामराम तिवारी की मौजूदगी पर एन एसयूआई ने आरोप लगाये है। एन एसयूआई के छात्र नेता समीर कुरैशी ने आरोप लगाते हुऐ कहाकि कालेज प्रबंधन के उक्त प्रोफेसर व प्रभारी भाजपा की छात्र इकाई अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद महाविद्यालय में कार्यकारिणी बनवाई और कार्यकारिणी का स्वात। महाविद्यालय स्मार्ट क्लासरूम अखिल भारतीय विद्यार्थी लगा फ्लेक्स लगा हे साफ़ साफ़ नजारा हे प्रभारी प्राचार्य राज्य शासन के अधीन नहीं है बल्कि बीजेपी और विद्यार्थी परिषद के अधीन है हो ऐसा दिखाई देता।

श्री हरिराय का हुआ आगमन

समय जगत, आगर मालवा । अनंत श्री विभूषित द्वितीय पीठ युवराज इंदौर नाथद्वारा पूज्यपाद गोस्वामी 108 श्री हरिराय जी महोदय श्री का परम आगमन राजा भैया रोड स्थित बालकृष्ण लाल जी की हवेली में हुआ। यहां पर सक्सेना(मुंशी परिवार) की अगुवाई में अपने निज हवेली में श्री वल्लभ व बालकृष्ण लाल प्रभु की असीम कृपा से छप्पन भोग (भव्य बड़ा मनोरथ) का आयोजन किया गया। जिसमें वह पधारें। जिनकी अगवानी नगर के वैष्णव जनों द्वारा की गई। 4. 30 पर छप्पन भोग मनोरथ में आरती किये। तत्पश्चात दूर दराज के क्षेत्र से आए हुए वैष्णवजनो को आप हवेली परिसर में ही अपने वचनामृत से कृतार्थ किये।

जेके सीमेंट प्लांट के सामने हादसे में एक व्यक्ति की मौत का मामला

भाजपा विधायक की उपस्थिति में पुलिस ने किया लाठीचार्ज

समय जगत, पन्ना। वर्तमान समय में लगता है मध्य प्रदेश में मध्य प्रदेश की सरकार तथा शासन प्रशासन प्रजातांत्रिक रूप से नहीं चल रहा है, पुलिस तथा प्रशासन को सरकार द्वारा मनमाने ढंग से चलाने के आदेश दे दिये गये हैं। इसी कारण पन्ना जिले में भी नियम कानून नाम की कोई चीज नहीं है, पुलिस तथा प्रशासन उद्योग पतियों एवं सत्ताधारी दल के बड़े नेताओं के इशारे पर काम कर रहा है, आम जनता पर लाठी वर्षा रहा है उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रहीं है। किसान बेरोजगार, गरीब, वर्ग के लोग भारी परेशान है, पन्ना जिले में अधिकारी कर्मचारीयों का बोल बाला है, किसी की कोई सुनने वाला नहीं है, अभी कुछ दिन पूर्व पत्रकारों द्वारा एक आन्दोलन किया गया था, जिसमें एक थाना प्रभारी के खिलाफ कार्यवाही करने की मांग की गई थी। लेकिन उसमें कुछ नहीं हुआ, अब तो सत्ताधारी दल के विधायकों की उपस्थिति में ही आम जनता पर किसानों पर मजबूरों पर पुलिस द्वारा लाठियां वर्षाई जा रहीं है, इसी प्रकार का मामला 13 दिसम्बर को सामने आया, अमानगंज तहसील अन्तर्गत पुरैना में स्थित जेके सीमेंट प्लांट के सामने डम्फर द्वारा एक गरीब को टक्कर मार दी गई, जिससे उसकी मौत हो गई। जिसका नाम शेलू सेन उम्र 25 वर्ष है, जो मोटर साईकिल से अपने घर पगरा जा रहा था, मौत हो जाने के बाद क्षेत्रीय ग्रामीणो में जेके सीमेंट प्रबंधन के खिलाफ भारी आक्रोश देखा गया एवं ग्रामीणों ने शव रखकर आन्दोलन कर दिया गया। उक्त मामले की जानकारी क्षेत्रीय विधायक राजेश वर्मा को लगी तो वह भी ग्रामीणों के समर्थन में शामिल हो गये तथा न्याय दिलाने के संबंध में शासन प्रशासन से मांग करने लगे एवं पीड़ित परिवार को मुआवजा राशि सहित रोजगार देने की मांग कर रहे थे, लेकिन पुलिस द्वारा विधायक की मांग को अनसुना करते हुए बिना किसी आदेश के विधायक की उपस्थिति में ग्रामीणों पर लाठीचार्ज कर दिया गया तथा ग्रामीणों को जानवरों की तरह पीटा गया। उक्त घटनाक्रम के दौरान दो दर्जन से अधिक लोग घायल हुए। साथ में ही विधायक का अंग रक्षक भी बुरी तरह घायल हो गया है। इस दौरान गुस्साई भीड़ ने भी पुलिस पर पत्थर बाजी कर दी। किसी प्रकार विधायक श्री वर्मा ने मामले को शांत कराया, तथा वह स्वंय ग्रामीणो के साथ जेके सीमेंट कंपनी के गेट के सामने धरने पर बैठ गये। जानकारी लगने के बाद कलेक्टर तथा पुलिस अधीक्षक घटना स्थल पर पंहुचे रात्रि दस बजे तक दोनो पक्षो में वार्तालाप हुआ।

पुलिस पर किया था पथराव, 4 माह बाद पकड़ाए फरार आरोपी

समय जगत, खरगोन। चोरी के आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए ग्राम सिलोटिया पहुंची सेंधवा और राजपुर पुलिस पर पथराव करने के मामले में पिछले 4 माह से फरार आरोपी पुलिस के हत्थे चढ़े हैं। पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। बरुड थाना पुलिस से मिली जानकारी अनुसार 3 अगस्त 2024 को थाना राजपुर एवं थाना सेंधवा शहर की पुलिस टीम ग्राम सिलोटिया चोरी के संदिग्धो की तलाश में पहुंची थी। काकड फलिया में संदिग्ध व्यक्तियों की तलाश के दौरान प्रकाश पिता भुरला एवं गोविंद पिता मांगीलाल, तेजला पिता गमा, सुरेश पिता तेजला सभी निवासी सिलोटिया द्वारा अन्य आरोपीगणो के साथ मिलकर पुलिस टीम पर पत्थरो से हमला कर दिया था। उक्त हमले में पुलिसकर्मियों चोटे आई थी। इस मामले में पुलिस ने शासकिय कार्य में बाधा का प्रकरण दर्ज कर आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए दबिश दी, जिसमें चार माह से फरार प्रकाश पिता भुरला, गोविंद पिता मांगीलाल दोनो को घेराबंदी कर ग्राम सीलोटिया से गिरफ्तार किया है। पुछताछ में थाना बलकवाडा मे चोरी करना भी कबुल किया। आरोपियो को कोर्ट पेश किया गया जहां से उन्हे जिला जेल खरगोन दाखिल किया गया।

कर्रापुर में क्षत्रिय समाज की बैठक संपन्न

कर्रापुर। शनिवार को कर्रापुर में क्षत्रिय महासभा की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में समाज के वरिष्ठजन एवं पदाधिकारियों ने आगामी कार्यक्रम को लेकर चर्चा की। बैठक में क्षत्रिय समाज सागर के अध्यक्ष श्री लखन सिंह भी उपस्थित थे। श्री लखन सिंह ने बैठक में जानकारी दी की 23 दिसम्बर को जिला क्षत्रिय महासभा सागर द्वारा क्षत्रिय युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। यह आयोजन सागर के बामोरा स्टेडियम में 23 दिसम्बर सोमवार को दोपहर 12 से होगा। क्षत्रिय युवा सम्मेलन में पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं अध्यक्ष विधानसभा मध्यप्रदेश मान. श्री नरेन्द्र सिंह जी तोमर मुख्य अतिथि होंगे। श्री लखन सिंह ने क्षत्रिय युवा सम्मेलन में शामिल होने का आव्हान किया है। इसके अलावा बैठक में अध्यक्ष श्री लखन सिंह ने समाज में जिम्मेदारियां व सामाजिक कार्य बांटने को लेकर विभिन्न प्रस्ताव रखे। इस अवसर पर बलवंत सिंह, गोपाल सिंह, मुंशी सिंह, गोविन्द सिंह, विशाल सिंह, रिटायर्ड शिक्षक माधव सिंह, अजब सिंह, गोविंद सिंह खिरिया, इंद्राज सिंह रिटायर्ड डीएसपी, उदयभान सिंह, अवधेश सिंह सिमरिया, राहुल चोरा, शैलेन्द्र सिंह न.प. उपाध्यक्ष प्रतिनिधि, जितेन्द्र सिंह सभापित न.प. कर्रापुर, सूर्यप्रताप सिंह युवा अध्यक्ष क्षत्रिय समाज, उमराव सिंह, हाकम सिंह सहित समाज के वरिष्ठ लोग एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

गांजा तस्करी की आरोपी महिला अस्पताल से पुलिस को चकमा देकर हो गई फरार

समय जगत, कटनी। गांजा तस्करी के मामले में कुछ दिन पहले गिरफ्तार महिला कैदी दिल्लगी पारधी के जिला अस्पताल से फरार होने की घटना के बाद कोतवाली पुलिस ने पारधी ठिकानों पर दबिश दी लेकिन अभी तक उसका कोई सुराग पुलिस के हाथ नहीं लगा है। पुलिस का कहना है कि जल्द ही उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा। इस मामले में कोतवाली पुलिस ने रक्षित केन्द्र में पदस्थ महिला आरक्षक धर्मा चौधरी की शिकायत पर दिल्लगी पारधी पति मैसलाल पारधी निवासी बुढ़ा ललितपुर थाना रीठी के विरूद्ध धारा 262 बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया है। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार दिललगी पारधी के एक साल के बेटे रोही को कुछ दिनों से सर्दी, जुखाम और बुखार की समस्या थी। चिकित्सक की सलाह पर जिला जेल प्रबंधन द्वारा गुरुवार को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया था। बच्चे की देखभाल के लिए विचाराधीन महिला भी अपनी 6 वर्षीय बेटी के साथ थी। उसके एक वर्षीय बच्चे की तबीयत खराब होने के कारण जिला अस्पताल में भर्ती कराने का आदेश दिया गया था। सुरक्षा के लिए चार महिला पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई थी, लेकिन इसके बावजूद शुक्रवार की दोपहर लगभग दो से ढाई बजे दिललगी पारधी पुलिस को चकमा देकर भाग निकली। इस घटना का वीडियो अस्पताल में लगे सीसीटीवी में कैद नहीं हों पाया, क्योंकि अस्पताल में लगे कैमरे बंद पड़े हैं।

गांजा तस्करी के मामले में पुलिस ने किया था गिरफ्तार

कोतवाली टीआई आशीष शर्मा ने बताया कि जिला अस्पताल से भागने वाली महिला गांजा तस्करी की आरोपी है। विगत 26 नवंबर को कोतवाली पुलिस ने रेलवे स्टेशन के समीप उसे गिरफ्तार किया था। तलाशी के दौरान दिल्लगी पारधी व आशियाना पारधी पति दोनों निवासी ग्राम बूढ़ा ललितपुर थाना रीठी के पास से 17 लाख 86 हजार 230 रुपए कीमती 1 क्विंटल 18.82 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा जप्त किया था।

सड़क निर्माण ऐसा हो कि घरों में न जाये बारिश का पानी: कृष्णा गौर

समय जगत, भोपाल। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने रविवार को गोविंदपुरा क्षेत्र के आनंद नगर में ऋषिपुरम, मानक विहार, हथाईखेड़ा खेड़ा में सड़क निर्माण का निरीक्षण किया। उन्होंने निर्माण एजेंसी को निर्देश दिये कि सीसी रोड का निर्माण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि वर्षा का पानी सड़क से रहवासियों के घरों में नहीं जाए। उन्होंने कहा कि इसके लिए सड़क के दोनों तरफ नाली बनाए और पेपर ब्लॉक लगाये जाये। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने बताया कि 15 करोड़ की लागत से सड़क का निर्माण कार्य किया जा रहा है इसमें एक किलोमीटर की सीसी रोड और लगभग 3 किलोमीटर की डामर रोड बनाई जाएगी। साथ ही हथाईखेड़ा का ब्रिज भी नया बनाया जाएगा। निरीक्षण के दौरान स्थानीय जन प्रतिनिधि, सड़क निर्माण एजेंसी के अधिकारी और बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

कृष्ण-रुक्मिणी विवाह प्रसंग में जमकर झूमे श्रद्धालु

श्योपुर। शहर के रामतलाई हनुमान मंदिर पर चल रही श्रीमद भागवत कथा के छठवें दिन शुक्रवार को कथा व्यास पंडित चेतन कटारे ने कृष्ण रुकमणी विवाह, महारास, कंसवध, उद्धव चरित्र का प्रसंग सुनाया। कृष्ण-रुकमणी विवाह में श्रद्धालु झमकर झूमे। कथा व्यास पंडित चेतन कटारे ने भक्तों को कथा का रसपान कराते हुए कहा कि, कहा कि, प्रभु की कृपा के लिए भक्ति की आवश्यकता है। इस दौरान कृष्ण-रुकमणी की सजीव झांकी सजाई गई तथा संगीतमय भजनों पर महिला श्रद्धालु मंत्र मुग्ध होकर जमकर झूमी। उन्होंने बताया कि ग्वाल कृष्ण ने अपने मामा का नहीं बल्कि उसके अहंकार का वध किया। द्वापर युग में जब कंस का अत्याचार बढ़ाए तब भगवान विष्णु ने मनुष्य रूप में श्रीकृष्ण का जन्म लेकर बड़े-बड़े राक्षसों का वध करने के बाद अंत में पापी कंस का वध कर लोगों को उसके अत्याचारों से छुटकारा दिलाया। इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण ने मथुरा नरेश के रूप में विराजमान होने के साथ देवी रूकमणी से धूमधाम से विवाह किया। मंच पर जैसे ही श्रीकृष्ण-रूकमणी का प्रार्दूभाव हुआ। श्रीहरि के जयघोष से पूरा पांडाल गूंज उठा। कथा वाचक द्वारा उद्घोषित मंत्रोचार के बीच जैसे ही विवाह का कार्य संपन्न हुआ तो श्रद्धालुओं की भीड़ ने पुष्प वर्षा की। पंडाल में सारा जनमानस भाव विभोर होकर झूम उठा। उन्होने कहा कि दूसरे की पीड़ा को समझने वाला और मुसीबत में दूसरों की सहायता करने के समान कोई पुण्य नहीं है।

गायत्री महायज्ञ में उमड़ा भक्तों का सैलाब

वेद मंत्रों से गूंजा बांदरी, वैदिक मंत्रोचार के साथ दी आहुतियां

समय जगत, बांदरी। अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान में दाल मिल के पास स्थित गायत्री मंदिर प्रांगण में नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। महायज्ञ का समापन देर शाम को भव्य और अद्भुत श्रद्धा भक्ति के साथ हुआ। इस पवित्र अनुष्ठान में भाग लेने भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। श्रद्धालुओं ने इस दीप महायज्ञ में भाग लेकर अपने जीवन को प्रकाशमय और पुण्य से परिपूर्ण बनाने की कामना की। जिला समन्वयक पं. कमलापति शर्मा द्वारा सभी वैदिक क्रियाएं संपन्न कराई गई । प्रातः बेला में प्रज्ञा पुराण के बाद वैदिक मंत्रोचार के साथ आहुतियां दीं गई। श्री शर्मा ने पावन प्रज्ञा पुराण कथा पर प्रवचन करते हुए कहा कि प्रज्ञा पुराण कथा में 18 पुराणों का सार है। धार्मिक, नैतिक अथवा आध्यात्मिक कथाओं से मनुष्य का नैतिक उत्थान होता है। श्री शर्मा ने कहा कि विश्व परिवार की परिधि बहुत विशाल है। उसमें समस्त प्राणी आ जाते हैं। भारत में पशु पक्षियों को भी परिवार का सदस्य माना जाता है। यहां गाय के लिए पहली और कुत्ते के लिए आखिरी रोटी निकाली जाती है। चीटियों को आटा और पक्षियों को दाना डालते हैं। श्री शर्मा ने इस मौके पर कहा कि वेद मंत्रों की ध्वनि से पर्यावरण और इस जीवन संसार में यज्ञ से असीमित प्रभाव देखने को मिलते हैं। यज्ञ से इंसान गुणवान बनता है और उसके जीवन का ही नहीं समस्त विश्व का कल्याण होता है। श्री शर्मा ने मां गायत्री के मंत्र के महत्व को समझाया। उन्होंने कहा कि गायत्री मंत्र द्वारा शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, लौकिक, पारलौकिक हर तरह की शांति और सुख प्राप्त किया जा सकता है। इस पूरे आयोजन ने श्रद्धालुओं को धर्म, आस्था और भक्ति से जोड़ते हुए एक सकारात्मक और प्रेरणादायक वातावरण का निर्माण किया। शाम को दीप महायज्ञ के बाद भंडारे का आयोजन किया गया। इस अवसर गायत्री परिवार के तहसील समन्वयक लक्ष्मन प्रजापति, गोविंद सिंह ठाकुर, कैलाश श्रीवास्तव, रामचरण सैनी, भूपेंद्र शुक्ला, राजेंद्र चौहान, मुन्नालाल ताम्रकार, देशराज सिंह, ब्रजेश प्रजापति जितेंद्र प्रजापति, महेश मुड़ोतिया, आयुष प्रजापति सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालू व गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

वैश्य महासम्मेलन की नई कार्यकारिणी हुई गठित

समय जगत, कटनी। गत दिवस वैश्य महासम्मेलन की नवगठित जिला कार्यकारिणी का समान एवं वैश्य महासम्मेलन 2025 के कलेण्डर विमोचन कार्यक्रम सानंद संपन्न हुआ। सर्व प्रथम मंचासीन अतिथि दयाशंकर कनकने प्रदेश उपाध्यक्ष वैश्य महासमेलन मध्यप्रदेश, सुरेश सोनी प्रदेश महामंत्री एवं कटनी संभाग प्रभारी, राम दयाल गुप्ता प्रदेश संयोजक साहित्य प्रकोष्ठ बालमुकुन्द गुप्ता प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य एवं कटनी जिलाप्रभारी, श्रीमती सीमा जैन कटनी संभाग प्रभारी महिला प्रकोष्ठ, रजत जैन जिलाध्यक्ष वै महा मप्र कटनी, रमेश गुप्ता जिला कार्यकारी अध्यक्ष नवीन कुमार गुप्ता जिला महामंत्री श्रीमती जयंती खंताल, जिला प्रभारी महिला प्रकोष्ठ श्रीमती दीपाली गुप्ता महिला जिलाध्यक्ष अग्रज लहरिया युवा जिला प्रभारी हितेष बिलैया युवा जिलाध्यक्ष वै महा मप्र कटनी के सभी पदाधिकारी द्वारा त्रिदेवियों का पूजन एवं दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात वैश्य गान महिला प्रकोष्ठ की श्रीमती शालनी सोनी, विभा कंदेले, सारिका गुप्ता, रश्मि बरसैंया, मोहनी बरसैंया, आकांक्षा बरसैंया, सोनल जैन, नीता बिचपुरिया, अलका कनकने, आशू सुहाने के द्वारा प्रस्तुत किया गया। मंचासीन अतिथियों का स्वागत युवा सदस्य द्वारा किया गया समाननीय अतिथि पदाधिकारी द्वारा नवनियुक्त रजत जैन जिलाध्यक्ष वै महा मप्र कटनी, रमेश गुप्ता जिला कार्यकारी अध्यक्ष नवीन कुमार गुप्ता जिला महामंत्री एवं समस्त नवीन पदाधिकारीयों को तिलक माला से अभिनन्दन कर पद नियुक्ति पत्र सौपा गया तदुपरांत वैश्य महासमेलन 2025 कलेण्डर के विमोचन का कार्यक्रम अध्यक्ष रजत जैन एवं संगठन के प्रदेश पदाधिकारियों, संभागीय प्रभारी, जिला प्रभारियों के कर कमलों द्वारा सपन्न हुआ।

संपादकीय

संविधान पर चर्चा के मायने

लोकसभा में संविधान पर दो दिवसीय चर्चा का दृश्य पूरे देश ने देखा। लोकसभा में संविधान पर बहस के बाद माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी का उत्तर सुनकर समझा में आ गया कि उन्होंने संघ की साखा में संविधान के बारे में जो कुछ पढ़ा-लिखा उससे ज्यादा वे संविधान के बारे में जानते नहीं हैं। संविधान पर बहस के दौरान उठाये गए एक भी सवाल का उत्तर देने के बजाय वे अपने सिर पर सवार जवाहरलाल नेहरू,इंदिरा गाँधी और राजीव गांधी के भूत को बिदारते नजर आये। वे नहीं बता पाए कि उनके युग में संविधान कैसे मजबूत हो रहा है ? वे प्रधानमंत्री के स्तर का भाषण देने में हमेशा की तरह विफल हुए ,उन्होंने संविधान पर भाषण देते समय संविधान पर अपने गहन अध्ययन का प्रदर्शन करने के बजाय सिर्फ वो सब उद्घाटित किया जो संघ की शाखाओं में स्वयं सेवकों को पिछले 100 साल से दीक्षित किया जा रहा है। मोदी जी संघ के प्रचारक हैं ये हकीकत है लेकिन वे देश के प्रधानमंत्री हैं इसलिए उन्हें शाखाओं के ज्ञान से ज्यादा सिखने की जरूरत है।उन्हें देश को बताना चाहिए था कि पिछले दस साल में उनकी सरकार में संविधान की रक्षा के लिए क्या कदम उठाये ? संविधान संशोधनों को लेकर माननीय मोदी जी ने पिछली सरकारों के कामकाज को संविधान के साथ खिलवाड़ बताया ,लेकिन जोर देकर कहा कि उनकी सरकार ने संविधान के साथ जो भी किया तो डंके की चोट किया। यानि वे परोक्ष रूप से कह रहे हैं कि -वे करें तो करेक्टर ढीला, हम करें तो रास लीला। संविधान के साथ किस पार्टी और सरकार ने खिलवा? किया ये पूरा देश जानता है। कांग्रेस ने आपातकाल लगाया ये सभी को पता है। मोदी जी कहते हैं कि आपातकाल का कलंक कांग्रेस के माथे से कभी मिट नहीं सकता ,लेकिन वे भूल जाते हैं कि इसी देश की जनता ने,विपक्ष की खिचड़ी जनता सरकार के गिरने के बाद मशीन और मशीनरी के बिना हुए आम चुनाव में कांग्रेस को विजय श्री देकर इस कलंक को मिटा दिया था। मेरा दृढ विश्वास है कि मोदी जी जब तक प्रधानमंत्री रहेंगे तब तक उनके सिर से जवाहर लाल नेहरू का,इंदिरा गाँधी का ,राहुल गांधी का यहां तक की राहुल गांधी का भूत उतरने वाला नहीं है और जब तक ये भूत उनके सर पर सवार रहेगा वे न चैन से काम कर पाएंगे और न संविधान के विधान को समझ पाएंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी देश को आश्वस्त नहीं कर पाए कि उनके लिए संविधान बड़ा है या मनु स्मृति ? वे ये स्पष्ट नहीं कर पाए की उन्हें धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद शब्द से तकलीफ है या नहीं? वे ये भी नहीं बता पाए की संविधान को लेकर सावरकार जो सोचते थे ,क्या वे उससे सहमत हैं या नहीं ? मौजूदा सरकार ने पिछले एक दशक में संविधान की सेवा किस तरह से की है ,देश और दुनिया जानती है। ऐसे में सोचना जरूरी है कि संसद में संविधान पर इस तरह की चर्चा की सार्थकता क्या है। क्यों कि पीएम को देश के संविधान की गरिमा, व्यापकता, प्रावधानों व आयामों का ज्ञान तो होना ही चाहिये।

राज्यसभा के सभापति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव का मुद्दा

प्रियंका सौरभ

संसद में पीठासीन अधिकारियों की भूमिका तटस्थता बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है कि संसदीय कार्यवाही निष्पक्ष और निष्पक्ष तरीके से संचालित हो। हाल ही में, विपक्ष ने राज्यसभा के सभापति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव उठाया, जिसमें उन पर पक्षपात करने का आरोप लगाया गया। यह स्थिति लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की अखंडता के लिए प्रमुख नेतृत्व भूमिकाओं में निष्पक्षता बनाए रखने के महत्त्व को उजागर करती है। संसदीय कार्यवाही की तटस्थता बनाए रखने में संसद के पीठासीन अधिकारियों की भूमिका बहस में निष्पक्षता सुनिश्चित करना है। पीठासीन अधिकारियों से यह सुनिश्चित करने की अपेक्षा की जाती है कि सभी सांसदों को, चाहे वे किसी भी पार्टी से सम्बद्ध हों, बहस में भाग लेने के समान अवसर दिए जाएँ। निर्णयों में निष्पक्षता- अध्यक्ष द्वारा किए गए निर्णय पक्षपातपूर्ण झुकाव के बजाय संसदीय प्रक्रियाओं पर आधारित होने चाहिए। अध्यक्ष को सरकार और विपक्ष के बीच संघर्षों में मध्यस्थता करनी चाहिए, शिष्टाचार बनाए रखते हुए रचनात्मक संवाद के लिए जगह बनानी चाहिए। एक तटस्थ पीठासीन अधिकारी संसद की अखंडता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है, लोकतांत्रिक बहस के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देता है। यदि अध्यक्ष को तटस्थ माना जाता है, तो संसदीय प्रणाली में विश्वास मज़बूत होता है, जिससे स्वस्थ लोकतांत्रिक चर्चाओं को बढ़ावा मिलता है, जैसा कि यू.के. जैसे परिपक्व लोकतंत्रों में देखा जाता है। संसदीय संस्था की वैधता की रक्षा के लिए पीठासीन अधिकारी को हमेशा निष्पक्षता का प्रदर्शन करना चाहिए। यदि अध्यक्ष को पक्षपाती माना जाता है, तो इससे संसदीय कार्यवाही में विश्वास कम हो सकता है और विधायी प्रक्रिया में जनता का विश्वास कम हो सकता है। अध्यक्ष के कार्यों में पक्षपात की धारणा के परिणामस्वरूप जनता में यह धारणा बन सकती है कि संसद को एक पार्टी के हितों की सेवा के लिए हेरफेर किया जा रहा है। पक्षपातपूर्ण अध्यक्ष संसद के भीतर राजनीतिक विभाजन को बढ़ा सकता है, जिससे सरकार और विपक्ष के बीच संघर्ष बढ़ सकता है। ऐसे परिदृश्य में, सरकार और विपक्ष अध्यक्ष के निर्णयों को चुनौती देने के लिए चरम रणनीति का सहारा ले सकते हैं, जिससे संसद में अधिक शत्रुतापूर्ण और कम उत्पादक वातावरण बन सकता है। अध्यक्ष में कथित पक्षपात संसद की संस्था को ही कमजोर करता है, जो लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाता है। यदि अध्यक्ष पक्षपातपूर्ण है, तो संसद के भीतर जवाबदेही के तंत्र विफल हो सकते हैं, जिससे अनियंत्रित कार्यकारी शक्ति की अनुमति मिलती है। यदि अध्यक्ष को किसी एक राजनीतिक दल के साथ गठबंधन करते हुए देखा जाता है, तो इससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया और राजनीतिक संस्थाओं के प्रति जनता का मोहभंग हो सकता है। पीठासीन अधिकारी की भूमिका के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश स्थापित करने से निर्णय लेने में निरंतरता और निष्पक्षता बनाए रखने में मदद मिलेगी। यू.के. संसद में, अध्यक्ष एक औपचारिक आचार संहिता का पालन करता है जो तटस्थता सुनिश्चित करता है, पक्षपात पर चिंताओं को दूर करने और संसदीय कार्यवाही में पारदर्शिता को बढ़ावा देने में मदद करता है। पीठासीन अधिकारियों के लिए लंबे कार्यकाल सुनिश्चित करने से उन्हें अपनी नेतृत्व भूमिकाओं में विश्वास, स्थिरता और तटस्थता बनाने की अनुमति मिल सकती है। जर्मन बुंडेस्टैग अध्यक्ष का निश्चित कार्यकाल दीर्घकालिक नेतृत्व स्थिरता सुनिश्चित करता है, राजनीतिक उथल-पुथल के दौरान भी पक्षपातपूर्ण निर्णय लेने की धारणा को कम करता है। अध्यक्ष के निर्णयों की समीक्षा करने के लिए स्वतंत्र निरीक्षण तंत्र शुरू करने से अधिक जवाबदेही सुनिश्चित हो सकती है और पक्षपातपूर्ण कार्रवाइयों को रोका जा सकता है। पीठासीन अधिकारियों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम उन्हें संसदीय कार्यवाही की जटिलताओं को निष्पक्ष रूप से संभालने के लिए आवश्यक कौशल से लैस कर सकते हैं। निष्पक्ष निर्णय लेने और संघर्ष समाधान पर केंद्रित नेतृत्व प्रशिक्षण अध्यक्ष को तटस्थता बनाए रखते हुए राजनीतिक दबावों को बेहतर ढंग से नेविगेट करने में मदद कर सकता है। संसदीय समितियों और चर्चाओं में द्विदलीय सहयोग को बढ़ावा देने से निर्णय लेने के लिए अधिक संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा मिल सकता है। संसदीय समितियों के भीतर अंतर-दलीय संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित करने से मतभेदों को दूर करने में मदद मिल सकती है और यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि सरकार और विपक्ष के बीच मध्यस्थता में अध्यक्ष तटस्थ रहें। संसदीय कार्यवाही की तटस्थता सुनिश्चित करने में संसद के पीठासीन अधिकारियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए, अध्यक्ष के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करना, द्विदलीय सहयोग को बढ़ावा देना और स्पष्ट दिशा-निर्देशों और लंबे कार्यकाल के माध्यम से निष्पक्ष नेतृत्व सुनिश्चित करना आवश्यक है। दरअसल, इसके जरिए विपक्ष कहीं न कहीं संसद के दोनों सदनों में आसन को एक संदेश देना चाह रहा है कि अगर आसन निष्पक्ष नहीं दिखता है।

ऊर्जा संरक्षण से होगी बिजली की जरुरतें पूरी

नजरिया

भारत में सौर ऊर्जा लगभग बारह महिने उपलब्ध है। सौर ऊर्जा को और अधिक उन्नत करने के लिए हमें अपने संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। ऊर्जा के मामले में अधिक समय तक दूसरों पर निर्भर नहीं रहा जा सकता है। ऊर्जा के क्षेत्र में हमें अपनी तकनीक और संसाधनों का उपयोग कर आत्मनिर्भरता हासिल करनी ही होगा। यह दुख का विषय है कि बहुत लम्बे समय तक हमने सौर ऊर्जा के उत्पादन व उपयोग पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। हमारे देश की परिस्थितियां विषम होने के कारण हमें सभी उपलब्ध ऊर्जा विकल्पों पर विचार करना होगा। इसके साथ ही ऊर्जा संरक्षण के व्यावहारिक कदमों को अपनाना होगा ताकि बड़े पैमाने पर बिजली की बचत हो सके। हमारे देश में ऊर्जा की मांग तीव्रगति से बढ़ रही है। लेकिन उत्पादन में खपत की तुलना में बढ़ोत्तरी नहीं हो पा रही है। देश में चल रही पुरानी बिजली परियोजनाएं कभी पूरा उत्पादन नहीं कर पाई है। नई स्थापित होने वाली परियोजनाओं के लिए स्थितियां अनुकूल नहीं होती हैं। देश में बिजली के इस संकट को अगर अभी समय रहते दूर नहीं किया गया तो आने वाले समय में गंभीर संकट का सामना करना होगा। दुर्भाग्यवश हमारे देश में खनिज, पेट्रोलियम, गैस, उत्तम गुणवत्ता के कोयला जैसे प्राकृतिक संसाधन बहुत सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हैं। ऊर्जा की बचत किये बिना हम विकसित राष्ट्र का सपना नहीं देख सकते हैं। आज जिस तेजी के साथ हम प्राकृतिक और परम्परिक ऊर्जा के स्त्रोतों का उपयोग कर रहे हैं। उस रफ्तार से 40 साल बाद हो सकता है हमारे पास तेल और पानी के बड़े भंडार खत्म हो जाए। उस स्थिति में हमें ऊर्जा के गैर-पारंपरिक स्त्रोतों यानि सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा जैसे साधनों पर निर्भर होना पड़ेगा। लेकिन ऊर्जा के गैर-पारंपरिक स्त्रोतों को इस्तेमाल करना थोड़ा मुश्किल है और इस क्षेत्र में कार्य अभी प्रगति पर है।

रमेश सर्राफ धमोरा

हमारे जीवन में प्रतिदिन के विभिन कार्यो के संचालन के लिए ऊर्जा अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है। दुनिया की अर्थव्यवस्था में वृद्धि के साथ-साथ प्रतिवर्ष ऊर्जा की मांग भी बढ़ती जा रही है। हम प्रतिदिन विभिन रूपों में ऊर्जा का उपयोग करते है। अतः भविष्य में ऊर्जा की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इसका संरक्षण आवश्यक है। ऊर्जा संरक्षण से तात्पर्य विभिन उपायों के माध्यम से ऊर्जा का संरक्षण करना है। ऊर्जा संरक्षण के अंतर्गत विभिन कार्यो के माध्यम से ऊर्जा का उपयोग इस प्रकार किया जाता है। जिससे वर्तमान की आवश्यता की पूर्ति के साथ भविष्य की जरूरतें भी पूरी हो सकें। ऊर्जा संरक्षण से तात्पर्य ऊर्जा का विवेकपूर्ण उपयोग है। इसका अर्थ है ऊर्जा का अनावश्यक उपयोग ना करना एवं कम से कम ऊर्जा का उपयोग करते हुए कार्य को करना। भारत एक ऐसा देश है जहां पूरे साल सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा का इस्तेमाल किया जा सकता है। भारत में साल भर में लगभग 310 दिनों तक तेज धूप खिली रहती है। भारत भाग्यशाली देश है जिसके पास सौर ऊर्जा के लिए खिली धूप की उपलब्धता, पर्याप्त मात्रा में भूमि की उपलब्धता, परमाणु ऊर्जा के लिए थोरियम का अथाह भंडार तथा पवन ऊर्जा के लिए लंबा समुद्री किनारा नैसर्गिक संसाधन के तौर पर उपलब्ध है। जरूरत है तो बस उचित प्रौद्योगिकी का विकास तथा संसाधनों का दोहन करने की।

देश की ऊर्जा की मांग और आपूर्ति में बहुत बड़ा अन्तर है। देश में बिजली संकट लगातार गहराता जा रहा है। अगर इस समय बिजली संकट को गंभीरता से नहीं लिया गया तो यह भारत के विकास के लिए बड़ा अभिशाप सिद्ध हो सकता है। क्योंकि किसी भी देश की तरक्की का रास्ता ऊर्जा से ही होकर जाता है। सरकार को अब वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों पर गंभीरता से विचार करते हुए ऊर्जा बचत के लिए जरूरी उपाय अपनाने पड़ेंगे। इस मायने में सूर्य से प्राप्त सौर ऊर्जा अत्यंत महत्वपूर्ण विकल्प है। भारत में 31 मार्च 2023 तक स्थापित बिजली उत्पादन क्षमता 416,059 मेगावाट थी। जिसमें जीवाश्म ईंधन से 237,269 मेगावाट अथवा 57 प्रतिशत तथा गैर-जीवाश्म ईंधन से 178,790

मेगावाट अथवा 43 प्रतिशत शामिल। देश में कोयले से 205,235 मेगावाट अथवा 49.3 प्रतिशत, लिग्नाइट से 6620 मेगावाट, हाइड्रोपावर (पनबिजली) से 46,850 मेगावाट यानि कुल क्षमता का 11.3 प्रतिशत, प्राकृतिक गैस का योगदान 24,824 मेगावाट यानि क्षमता का महज 6 प्रतिशत और परमाणु ऊर्जा से 6780 मेगावाट, सौर उर्जा से 66,780 मेगावाट यानि 16.1 प्रतिशत, डीज़ल से 589 मेगावाट यानि 0.1 प्रतिशत, हवा से 42,633 मेगावाट यानि 10.2 प्रतिशत, बायो मास पावर/कोजेन से 10,248 मेगावाट, अपशिष्ट से 554 मेगावाट, लघु हाइड्रो से 4944 मेगावाट, नाभिकीय से 6780 मेगावाट बिजली उत्पन्न होती है। देश के सभी घरों तक 24 घंटे बिजली पहुंचाने के लिए मौजूदा क्षमता कम पड़ेगी। इसके लिए वर्तमान क्षमता से कम से कम 30 फीसदी अधिक बिजली की जरूरत होगी। इसके लिये देश में पावर प्लांटों में 100 फीसदी बिजली उत्पादन करना होगा। बिजली आज पूरी दुनिया की सबसे अहम जरूरत बन गयी है। बिजली के बिना कोई भी देश तरक्की नहीं कर सकता है। थो? से समय के लिये बिजली चली जाने पर हमारे अधिकतर काम रूक जाते हैं। बिजली हमारे जनजीवन का कब मुख्य हिस्सा बन गयी हमें पता ही नहीं चल पाया। आज हमारा पूरा जनजीवन बिजली से जुड़ा हुआ है। बिजली का उत्पादन मशीनो से किया जाता है। ऐसे में हमें हर हाल में बिजली का दुरूपयोग नहीं करना चाहिये।

सौर ऊर्जा प्रदूषण रहित, निर्बाध गति से मिलने वाला सबसे सुरक्षित ऊर्जा स्रोत है। भारत में सौर ऊर्जा लगभग बारह महिने उपलब्ध है। सौर ऊर्जा को और अधिक उन्नत करने के लिए हमें अपने संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। ऊर्जा के मामले में अधिक समय तक दूसरों पर निर्भर नहीं रहा जा सकता है। ऊर्जा के क्षेत्र में हमें अपनी तकनीक और संसाधनों का उपयोग कर आत्मनिर्भरता हासिल करनी ही होगा। यह दुख का विषय है कि बहुत लम्बे समय तक हमने सौर ऊर्जा के उत्पादन व उपयोग पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। हमारे देश की परिस्थितियां विषम होने के कारण हमें सभी उपलब्ध ऊर्जा विकल्पों पर विचार करना होगा। इसके साथ ही ऊर्जा संरक्षण के व्यावहारिक कदमों को अपनाना होगा ताकि बड़े पैमाने पर बिजली की बचत हो सके। हमारे देश में ऊर्जा की मांग तीव्रगति से बढ़ रही है। लेकिन उत्पादन में खपत की तुलना में बढ़ोत्तरी नहीं हो पा रही है। देश में चल रही पुरानी बिजली परियोजनाएं कभी पूरा उत्पादन नहीं कर पाई है। नई स्थापित होने वाली परियोजनाओं के लिए स्थितियां अनुकूल नहीं होती हैं। देश में बिजली के इस संकट को अगर अभी समय रहते दूर नहीं किया गया तो आने वाले समय में गंभीर संकट का सामना करना होगा। दुर्भाग्यवश हमारे देश में खनिज, पेट्रोलियम, गैस, उत्तम गुणवत्ता के कोयला जैसे प्राकृतिक संसाधन बहुत सीमित मात्रा में ही उपलब्ध हैं। ऊर्जा की बचत किये बिना हम विकसित राष्ट्र का सपना नहीं देख सकते हैं। आज जिस तेजी के साथ हम प्राकृतिक और परम्परिक ऊर्जा के स्त्रोतों का उपयोग कर रहे हैं। उस रफ्तार से 40 साल बाद हो सकता है हमारे पास तेल और पानी के बड़े भंडार खत्म हो जाए। उस स्थिति में हमें ऊर्जा के गैर-पारंपरिक स्त्रोतों यानि सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा जैसे साधनों पर निर्भर होना पड़ेगा। लेकिन ऊर्जा के गैर-पारंपरिक स्त्रोतों को इस्तेमाल करना थोड़ा मुश्किल है और इस क्षेत्र में कार्य अभी प्रगति पर है। इन स्त्रोतों को इस्तेमाल में लाने के लिए कई तरह के वैज्ञानिक शोध चल रहे हैं जिनके परिणाम आने और आम जीवन में इस्तेमाल लाने के लायक बनाने में अभी समय लगेगा। इसे देखते हुए अगर हमने अभी से ऊर्जा के स्त्रोतों का संरक्षण करना शुरू नहीं किया तो आगे चलकर हालात बहुत बदतर हो सकते हैं। केंद्र सरकार का कहना है कि देश के अब सभी 5 लाख 97 हजार 464 गांवों का विद्युतीकरण हो गया है। सरकार की परिभाषा के मुताबिक वे गांव इलेक्ट्रिफाइड माने जाते हैं। जहां बेसिक इलेक्ट्रिकल इंफ्रास्ट्रक्चर हो और गांव के 10 फीसदी मकानों और सार्वजनिक जगहों पर बिजली हो। भारत में बीते एक दशक के दौरान बढ़ती आबादी, आधुनिक सेवाओं तक पहुंच, विद्युतीकरण की दर तेज होने और सकल घरेलू आय में वृद्धि की वजह से ऊर्जा की मांग काफी बड़ी है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस मांग को सौर ऊर्जा के जरिए आसानी से पूरा किया जा सकता है। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में अपार संभावनाओं को देखते हुए अब विदेशी कंपनियों की निगाहें भी भारत पर हैं। आज विश्व का हर देश कागजी स्तर पर तो ऊर्जा संरक्षण की बड़ी-बड़ी बातें करता है। लेकिन ऊर्जा की बर्बादी में सबसे आगे नजर आते हैं। अगर भारत की बात की जाए तो यहां विश्व में पाएं जाने वाली ऊर्जा का बहुत कम प्रतिशत हिस्सा पाया जाता है। लेकिन इसकी तुलना में हम इसको कहीं ज्यादा खर्चा करते हैं। हमारे देश में आज ऊर्जा बचत के उपायों को शीघ्रतापूर्वक और सख्ती से अमल में लाए जाने की जरूरत है। इसमें देश के हर नागरिक की भागीदारी होनी चाहिए। हर संभव ऊर्जा बचत करें तथा औरों को भी इसका महत्व बताएं।

ईंधन की जरूरत पूरी करेगी परमाणु ऊर्जा

प्रमोद भार्गव

भारत सरकार के उपक्रम परमाणु ऊर्जा निगम ने मध्यप्रदेश में चार नए परमाणु ऊर्जा संयंत्र लगाने की मंजूरी दी है। जल्दी ही ये संयंत्र नीमच, देवास, सिवनी और शिवपुरी में लगेंगे। सब कुछ सही रहा तो जल्दी ही इन परियोजनाओं पर काम शुरू हो जाएगा। इन संयंत्रों के शुरू हो जाने पर 1200 मेगावाट की अतिरिक्त बिजली पैदा होगी। भारत की परमाणु ऊर्जा क्षमता पिछले 10 साल में करीब दोगुनी हो चुकी है। 2031 तक इसके तीन गुना होने की उम्मीद है। भारत की जिस तेजी से आबादी और अर्थव्यवस्था बढ़ रही है, उसके प्रबंधन और सुचारू सुविधा के लिए शहरीकरण के साथ ऊर्जा की उपलब्धता आवश्यक है। इसी नजरिये से परमाणु ऊर्जा का उत्सर्जन बढ़ाने की दिषा में तेजी से प्रगति हो रही है। विद्युत की कमी पूरी हो और ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन भी न हो, इसके लिए परमाणु ऊर्जा उपयुक्त मानी जाती है। एक बार यदि कोई परमाणु ऊर्जा संयंत्र स्थापित हो जाता है तो लंबे समय तक ऊर्जा की आपूर्ति बनी रहती है। ताप विद्युत परियोजनाओं में कोयला जलाया जाता है। इस कारण बड़ी मात्रा में वायु प्रदूशित होती है। जो अनेक बीमारियों का कारण बनती है। ऐसा अनुमान है कि दुनिया में एक साल में करीब 15 लाख मौतें वायु प्रदूषण से होती हैं। अतएव जीवाश्म ईंधन से बिजली पैदा करना मानव आबादी को बीमार बनाए रखना है। जबकि परमाणु ऊर्जा से पैदा बिजली कार्बन मुक्त होने के साथ सस्ती भी होती है। भारत में कुल ऊर्जा के उत्पादन में 80 प्रतिषत बिजली केवल जीवाष्म ईंधन के रूप में कोयला को ताप विद्युत घरों में जलाने से प्राप्त होती है। हालांकि देष में पानी, सौर्य और वायु ऊर्जा भी बड़ी मात्रा में उपलब्ध होने लगी है। जीवाष्म ईंधन के ये बड़े विकल्प बनकर सामने आए है। लेकिन सौर्य और पवन ऊर्जा के उत्सर्जन में मौसम की बड़ी भूमिका रहती है। अतएव तेज हवाएं नहीं चलने पर पवन ऊर्जा का निर्माण धीमा पड़ जाता है। इसी तरह बारिशष और ठंड के मौसम में सूरज का ताप मंदा हो जाने से सौर्य ऊर्जा का उत्पादन कम हो जाता है। परमाणु ऊर्जा के लिए थोरियम की उपलब्धता जरूरी है। ये अच्छी बात है कि भारत में थोरियम केरल और बिहार में बड़ी मात्रा में उपलब्ध है। थोरियम धातु को वायु में गरम करने पर इससे चिंगारियां फूटती हैं, जो ऊर्जायुक्त होती हैं। भारत में भविष्य के ईंधन के रूप में थोरियम को परमाणु ऊर्जा में बदलने के उपायों पर काम तेजी से चल रहा है। देश में फिलहाल 8 परमाणु ऊर्जा संयंत्रों में 23 परमाणु रिएक्टर चालू हैं। परमाणु ऊर्जा को बढ़ाने की दृष्टि से 2024-25 के आम बजट में लघु परमाणु संयंत्रों के लिए सरकार ने बड़े बजट का प्रावधान किया है। परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में यह नया प्रयोग है। पहली बार निजी कंपनियों को लघु परमाणु संयंत्र समूचे देश में स्थापित करने का अवसर दिया गया है। साथ ही

मॉड्यूलर (प्रतिरूपक) रिएक्टर के आधुनिकीकरण के लिए शोध और विकास पर भी धनराशि खर्च की जाएगी। जिससे परमाणु ऊर्जा में नई प्रौद्योगिकी का विकास हो। इसे पीपीपी मॉडल पर क्रियान्वित किया जा रहा है। इसका उद्देष्य देष में स्वच्छ एवं वैकल्पिक बिजली को बढ़ावा देना है। साथ ही प्रधानमंत्री सूर्य घर निःशुल्क बिजली योजना के तहत छतों पर जो सौर संयंत्र लगाए जा रहे हैं, इन पर भारत सरकार द्वारा दी जाने वाली छूट जारी रहेगी। अभी तक इस योजना के लाभ के लिए 1.28 करोड़ परिवार पंजीयन करा चुके हैं और 14 लाख आवेदन विचाराधीन हैं। इस योजना से 300 यूनिट बिजली मुफ्त मिलेगी। छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर (एसएमआर) उन्नत परमाणु संयंत्र माने जाते हैं। इनकी बिजली उत्पादन क्षमता 300 मेगावाट प्रति इकाई है, जो पारंपरिक परमाणु ऊर्जा संयंत्रों की बिजली उत्पादन क्षमता की तुलना में एक तिहाई है। ये संयंत्र न्यूनतम कार्बन बिजली का उत्पादन करते हैं। विकसित भारत के लिए ऊर्जा की उपलब्धता एक बड़ी जरूरत है। इसलिए सरकार सिर्फ पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर नहीं रहना चाहती है। इसीलिए सौर और पवन ऊर्जा पर सरकार पहले ही काफी कुछ कर चुकी है। अतएव अब फोकस परमाणु ऊर्जा पर है। क्योंकि इसमें संभावनाएं अधिक है। लेकिन परमाणु ऊर्जा उत्पादन में सुरक्षा के सवाल आड़े आते रहे हैं। ऊर्जा सुरक्षा को सरकार सचेत है। ऊर्जा बदलाव के संबंध में एक नीतिगत उपाय किए जा रहे है। इनसे तय होगा कि भारतीय अर्थव्यवस्था में किस तरह से पारंपरिक ऊर्जा की जगह धीरे-धीरे अपारंपरिक ऊर्जा के स्रोत का महत्व बढ़ रहा है। इस नीतिगत उपाय के तहत रोजगार, विकास और पर्यावरण से जुड़े मुद्दों का भी समाधान होगा। अतएव इसी परिप्रेक्ष्य में निकेल, कोबाल्ट, तांबा और लिथियम जैसी धातुओं के उत्पादों के आयात पर षुल्क क्रमषः घटाया जा रहा है। इन उत्पादों का प्रयोग परमाणु और सौर ऊर्जा के साथ दूसरे ऊर्जा उत्सर्जन उपायों में भी होता है। आयात सस्ता होने से इनका निर्माण भारत में करने में आसानी होगी। यही नहीं परमाणु ऊर्जा, नवीनीकरण ऊर्जा और अंतरिक्ष एवं रक्षा क्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाली 25 धातुओं पर सीमा शुल्क को पूरी तरह खत्म कर दिया है। हाल ही के वर्षो में कुछ देशों ने छोटे परमाणु ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने में सफलता मिली है। इसी का अनुकरण भारत कर रहा है। भारत में एक ओर अर्से से अटकी परमाणु बिजली परियोजनाओं में विद्युत का उत्पादन शुरू हो रहा है, वहीं निजी निवेष से परमाणु ऊर्जा बढ़ाने के प्रयास हो रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात के सूरत जिले के तापी काकरापार में 22,500 करोड़ रुपए की लागत से बने 700-700 मेगावाट बिजली उत्पादन के दो परमाणु ऊर्जा संयंत्र 22 फरवरी 2024 को राष्ट्र को समर्पित कर दिए हैं। ये देष के पहले स्वदेशी परमाणु ऊर्जा संयंत्र हैं। ये उन्नत सुरक्षा सुविधाओं से युक्त हैं। ये संयंत्र प्रतिवर्ष लगभग 10.4 अरब यूनिट स्वच्छ बिजली का उत्पादन करेंगे। जो गुजरात में बिजली की आपूर्ति के साथ अन्य प्रांतों को भी बिजली देंगे। ये संयंत्र षून्य कार्बन उत्सर्जन की दिशा में आगे बढ़ने की दृश्टि से मील का पत्थर साबित होंगे। दूसरी तरफ भारत सरकार ने परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में निजी कंपनियों से 26 अरब डॉलर का निवेश आमंत्रित किया है। यह पहल ऐसे स्रोतों से बिजली बनाने की मात्रा बढ़ाने की दिशा में उठाया गया कदम है, जो वायुमंडल में प्रदुशण और तापमान बढ़ाने वाले कार्बनडाड ऑक्साइड का उत्सर्जन नहीं करते हैं। यह पहली बार है जब परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में सरकार निजी कंपनियों से पूंजी निवेष की मांग कर रही है। फिलहाल भारत में परमाणु ऊर्जा कुल बिजली उत्पादन की तुलना में महज दो प्रतिषत भी नहीं है। यदि यह निवेश बढ़ता है तो 2030 तक अपनी स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता का 50 प्रतिशत गैर जीवाश्म ईंधन के उपयोग से प्राप्त लक्ष्य को हासिल करने में सहायता मिलेगी।

विश्व हिन्दू परिषद कल, आज और कल

तनवीर जाफरी

इलाहबाद कभी न केवल कांग्रेस बल्कि समाजवादी व आर एस एस व विश्व हिन्दू परिषद् के भी वरिष्ठ व राष्ट्रीय स्तर के नेताओं का गढ़ हुआ करता था। नेहरू-गाँधी परिवार की तो यह कर्मस्थली थी ही इसके अतिरिक्त पुरषोत्तम दस टंडन,मदन मोहन मालवीय जैसी अनेक विभूतियाँ भी इसी शहर से सम्बद्ध रहीं। इसी तरह दक्षिणपंथी विचारधारा के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख रहे राजेंद्र सिंह उर्फ रज्जु भैय्या का नाम भी इलाहाबाद से ही जुड़ा हुआ है। ऐसा ही एक नाम था जस्टिस शिव नाथ काटजू का जोकि 1980 के दशक में विहिप के अध्यक्ष भी चुने गये थे । जस्टिस काटजू ने अयोध्या में विवादित बाबरी मस्जिद की जगह पर राम मंदिर के निर्माण के लिए शुरुआती अभियान चलाया था। और इसी दौरान उन्हें नजरबंद भी कर दिया गया था। चूँकि मेरी भी औपचारिक शिक्षा इलाहाबाद में ही हुई इसलिये उस दौर के अनेक विशिष्ट जनों के साथ संबंध रखने का भी सौभाग्य मिला। जस्टिस काटजू भी उन्हीं में एक थे जिनके पास अक्सर मेरा आना जाना रहता था। जस्टिस काटजू विहिप के अध्यक्ष तो जरूर थे परन्तु वे पूर्णतयः धर्मनिर्पेक्ष थे। इस्लामी इतिहास का भी उन्हें जबरदस्त ज्ञान था। शिया -सुन्नी विवाद और करबला की घटना जैसे विषयों पर तो वे अक्सर मेरे साथ बातें किया करते और मेरा ज्ञान वर्धन किया करते थे। बात 1977-78 की है उस दौरान मैं इलाहबाद के मुहल्ला दरियाबाद के इमामबाड़ा सलवात अली खान नामक एक ट्रस्ट से परिवारिक रूप से जुड़ा हुआ था। यहाँ अनेक धार्मिक आयोजन हुआ करते हैं। इन्हीं में एक चालीसवें का जुलूस (मुहर्रम के चालीस दिन बाद) भी इसी इमामबाड़े से निकला जाता है। इसी जगह से निकलने वाले चालीसवें के जुलूस का प्रारंभिक संबोधन करने के लिये जब मैंने जस्टिस काटजू से निवेदन किया तो वे खुशी खुशी तैयार हो गये। हालांकि उन्होंने अयोध्या में मंदिर के निर्माण के लिए शुरू हुये विहिप आंदोलन तथा दरियाबाद की घनी मुस्लिम आबादी को भी रेखांकित किया। परन्तु मेरे संपूर्ण सुरक्षा व शांतिपूर्ण आयोजन के आश्वासन के बाद वे कार्यक्रम से पूर्व स्वयं अपनी एम्बेसडर कार चलाकर बिल्कुल अकेले ही दरियाबाद पधारे। यहाँ दरियाबाद चौराहे पर मौजूद मेरे साथियों ने उनका स्वागत किया व पूरे सम्मान के साथ उन्हें इमामबाड़ा सलवात अली खान लेकर गये। यहाँ मौजूद समूह के बीच जस्टिस काटजू ने कर्बला की घटना का जिक्र करते हुये न केवल अपनी तरफ से बल्कि विश्व हिंदू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष होने की हैसियत से विहिप की तरफ से भी हजरत इमाम हुसैन व करबला के शहीदों को बड़े ही भावपूर्ण शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित की। शेरवानी,टोपी और चूड़ीदार पैजामा जैसा परिधान प्रायः धारण करने वाले काटजू साहब सभी धर्मों का पूरा ज्ञान रखते थे तथा उन्हें सम्मान भी देते थे। वे विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष होने के बावजूद सभी धर्मों में परस्पर मेल जोल व सद्भाव के पक्षधर थे। उन्हें उर्दू आरबी फारसी का भी पूरा ज्ञान था। यह था उस दौर के विश्व हिंदू परिषद का वह चेहरा जिससे भारत का गैर हिन्दू समाज कभी भयभीत नहीं होता था। उसके बाद जबसे गुजरात को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की प्रयोगशाला कहा जाने लगा तब से इसी विश्व हिंदू परिषद ने खुलकर इस्लाम व अल्पसंख्यकों के प्रति अपनी आक्रामकता दिखानी शुरू कर दी। इसी विश्व हिंदू परिषद में बजरंग दल नामक एक और संगठन तैयार हो गया जो समय समय पर आक्रामक होते नजर आया। आज पूरे देश में विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल पर अनेक आपराधिक मुकदमे चल रहे हैं। इसी विश्व हिंदू परिषद ने योजनाबद्ध तरीके से गुजरात से शुरू कर कॉरोनकाल के दौरान देश के कई राज्यों में मुस्लिम दुकानदारों के प्रति नफरत फैलाकर उनसे सब्जी फल व अन्य सामान खरीदने के लिये हिन्दू समाज के लोगों को मना किया। सीधे शब्दों में मुस्लिमों का व्यवसायिक बहिष्कार करने की कोशिश की गयी। इसी विहिप ने बेटी बचाओ बहू लाओ नामक एक अभियान भी चलाया जिसके अंतर्गत किसी हिन्दू लड़की के मुस्लिम लड़के से प्रेम संबंध होने की स्थिति में उस रिश्ते में दखल देना तथा वह अंतर्धार्मिक सम्बन्ध परवान न चढ़ने देना है।

यवनों और अंग्रेजों ने भारत के गौरव पूर्ण इतिहास को खराब और भ्रमित करने का काम किया : स्वांतरंजन

– अनिल शर्मा –

समय जगत, उरई। इस देश के गौरवपूर्ण इतिहास को खराब और भ्रमित करने का कामयवनों और अंग्रेजों ने किया । हमें अपने वास्तविक इतिहास की जरुरत है क्योंकि हमारा हजारों वर्ष पूर्व का इतिहास सुख, समृद्धि और सुशासन से भरा हुआ है ये विचार मुख्य अतिथि एवं अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ स्वांत रंजन ने व्यक्त किए। वह शुक्रवार को राजकीय मेडिकल कॉलेज के कार्यक्रम में अखिल भारतीय इतिहास संकलन समिति कानपुर प्रांत की और से प्रदेश अध्यक्ष डॉ. प्रयाग नारायण त्रिपाठी की हाल में प्रकाशित आठ पुस्तकों के विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में बोल रहे थे। इस अवसर पर श्री स्वांत रंजन ने कहा की उस देश का पतन हो जाता है। जिसका इतिहास बिगाड़ दिया जाता है। ऐसी ही साजिश यमनों ने और अंग्रेजों ने की। उन्होंने कहा राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ पिछले कई दशकों से व्यक्ति निर्माण का काम कर रहा है। क्यों कि जब तक व्यक्ति ठीक नहीं होगा। तब तक समाज और देश बलशाली नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार के कार्यकाल में पूरी दुनिया में भारत की ताकत बढ़ी है और अब भारत को अनदेखा करने की हैसियत किसी देश की नहीं है। श्री स्वांत रंजन ने कहा कि आज आठ किताबों का विमोचन हुआ है। वो डॉक्टर प्रयाग नारायण त्रिपाठी ने बड़ी मेहनत और अनुभव से लिखी हैं। इनको पढ़ना चाहिए। इससे आपकी अपने इतिहास पर समझ बनेगी। समारोह के मुख्य वक्ता कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्व विद्यालय रायपुर के कुलपति व प्रोफेसर एनबीटी के पूर्व चेयरमैन प्रोफेसर बलदेव शर्मा ने कहा कि आज यह विमोचन समारोह एक

उत्सव में बदल गया है। उन्होंने कहा कि प्रसिद्ध शायर गुलजार की पंक्तियों को पढ़ते हुए बताया कि किताबें पहले कभी प्रेम के जन्म का भी कारण बनती थी। क्यों कि पुरानी किताबों में फूल और खत भी मिलते थे। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी में किताब पढ़ने की परम्परा कम हो रही है। इस लिए मेरा सभी से अनुरोध है कि अपने बच्चों के जन्म दिन पर उन्हें एक किताब अवश्य भेंट करें। उन्होंने कहा कि आप लोग साल में चाहे एक किताब पढ़ें लेकिन पढ़ें जरूर। उन्होंने कहा कि भारतीय सच्चे इतिहास को डॉ. प्रयाग नारायण त्रिपाठी ने अपनी आठ पुस्तकों में बताया है। इन्हें जरुर पढ़ना चाहिए। अखिल भारतीय इतिहास संकलन समिति के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री संजय श्रीहर्ष ने कहा कि पहले छह सौ वर्षो तक यवन आक्रमणकारियों और दो सौ वर्ष तक अंग्रेजों के शासन के दौरान पिछली आठ सौ वर्षों की गुलामी के कारण जो भी शासक रहे उन्होंने अपने तरीके से इतिहास को लिखवाया। जिसके कारण भारतीय अपने ही इतिहास से वंचित हो गए। इस भ्रम के कारण हम अपने इतिहास को भी नहीं समझ पाए। उन्होंने कहा कि गुप्त काल में जो देश सोने की चिड़िया के रुप में पूरी दुनिया में जाना जाता था। वह कैसे बदहाल हो गया। उन्होंने कहा कि भारतीयों को आर्य बताया गया। और कहा कि वह इस देश के वासी नहीं हैं। लेकिन इतिहास संकलन समिति इस देश के वास्तविक इतिहास को नए सिरे से लिखने का काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि खुदाई से पता चला है कि हड़प्पा मोहन जोदड़ो की जो नगर संस्कृति थी। उसी तरह का निर्माण चढ़ीगढ़ में किया गया। उन्होंने कहा कि चाहे महावीर राणा प्रताप हों या शिवाजी महाराज हों। इनका वास्तविक इतिहास भारतीयों को नहीं पढ़ाया गया। उन्होंने कहा कि इतिहास संकलन समिति जिले जिले का इतिहास बना रही है। उन्होंने कहा कि इतिहास संकलन समिति चार भाग में भारतीय इतिहास का पुर्नलेखन करवाया है इसके आने पर भारतीयों को सही इतिहास की जानकारी होगी। कैसे उरई को राजा माहिल की नगरी की नाम से याद किया जाता है। जो बहुत गलत है। जबकि इतिहास ये होना चाहिए कि प्रतिहार राजाओं ने किस तरह से बुन्देलखण्ड से अरब देश से आये आक्रमण कारियों को खदेड़ने का काम किया । उन्होंने कहा कि प्रयाग नारायण त्रिपाठी की किताबों को पढ़ने की जरुरत है। इस अवसर पर डॉ. प्रयाग नारायण त्रिपाठी ने कहा कि आज के दिन आठ किताबों का विमोचन हो रहा है। उनमें महात्मा गांधी एवमं दीनदयाल उपाध्याय के जीवन दर्शन के साम्य में, डॉ राममनोहर लोहिया का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, भारतीय राजनीति में पं. दीनदयाल उपाध्याय का योगदान, विवेकानंद का शिक्षा दर्शन, भारतीय चिंतन परंपरा के वाहक गांधी लोहिया और दीनदयाल, भारत - बांग्लादेश संबंध ऐतिहासिक एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, भारत का कर्तव्य रथ, सामाजिक समरसता के एक प्रणेता - स्वातंत्र वीर सावरकर है। श्री डॉ. त्रिपाठी ने इन किताबों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर कानपुर प्रांत के संघ चालक भवानी भीख और डॉ. अरविंद त्रिवेदी प्राचर्य राजकीय मेडिकल कॉलेज ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर कानपुर के प्रांत प्रचारक श्री राम जी, जिला प्रचारक शिवम जी, सह प्रांत प्रचारक मुनीश जी, नगर प्रचारक सचिन जी, गोसेवा आयोग के चेयरमैन श्याम बिहारी गुप्ता, पूर्व मंत्री भानु प्रताप वर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष घनश्याम अनुरागी, विधायक कालपी विनोद चतुर्वेदी, एमएलसी रमा निरंजन, मन्त्री प्रतिनिधि अरविन्द सिंह चौहान, डीएम राजेश कुमार पांडेय, एसपी डॉ. दुर्गेश कुमार, भाजपा नेता शम्भूदयाल, साहित्य अकादमी पुरुस्कार विजेता डॉ. रामशंकर द्विवेदी, जिलाध्यक्ष उर्विजा दीक्षित जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष बृजभूषण मुन्नु, पूर्व विधायक नरेंद्र पाल सिंह जादौन, पूर्व विधायक संतराम सिंह सेंगर, पिछड़ा वर्ग आयोग के सदस्य बालक दास पाल, कुलदीप जी, रामजी सिंह, डॉ. संजय सिंह राष्ट्रीय संयोजक जल जन जोड़ो अभियान, डॉ. अखण्ड प्रताप सिंह, डॉ. प्रशान्त निरंजन सीएमएस मेडीकल, अशोक राठौर, डॉ. अंकुर शुक्ला, महेन्द्र पाटकार मृदुल, शशिकान्त द्विवेदी, शैलेन्द्र पाण्डेय डग्गू, ब्लॉक प्रमुख रामपुरा अजीत सिंह, पूर्व जिलाध्यक्ष उदयन पालीवाल, जगदीश तिवारी, अमित निरंजन सहित अन्य लोग मौजूद रहे। संचालन डीवीसी के प्राचार्य डॉ. राजेश चंद्र पांडेय व अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. अरविंद त्रिवेदी ने की।

अथ साप्ताहिक राशिफलम् दिनांक 16 से 22दिसम्वर 2024तक

समय जगत,झांसी। (1)मेष राशि – इस सप्ताह की शुरुआत किसी नजदीकी यात्रा से शुरू हो सकती है, छोटे भाई बहिनों वाद विवाद हो सकता है, धैर्य रखें, मनोरंजन के लिए धन का व्यय होगा, माता-पिता की सेहत खराब हो सकती है,सुख सुविधाओं के भोग के लिए परिवार में कलह पूर्ण वातावरण हो सकता है, वाहन का प्रयोग करते समय सावधानी रखें, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी,प्रेम सम्बन्धों से बचें,हनुमान जी दर्शन करें एवं चालीसा पाठ करें

(2) वृषभ राशि ----पारिवारिक वातावरण आनंद दायक रहेगा, स्वादिष्ट भोजन प्राप्त होंगे, पारिवारिक धन सम्पदा में वृद्धि होगी, सहोदरों का आगमन व सहयोग मिलेगा, नवीन यंत्रों की खरीदारी या उपहार प्राप्त होगा,साहस दिखाने का समय भी नजदीक है, किसी अचल संपत्ति के स्वामी वन सकते हैं या कोई वाहन की प्राप्ति होगी, सभी जगह अनुकूलता महसूस करेंगे, भगवती दुर्गा की आराधना करें।

(3) मिथुन राशि – सप्ताह की शुरुआत में आपका व्यक्तित्व निखरेगा, सम्मान व पद प्राप्त होगा, राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा, पारिवारिक वातावरण सहयोगात्मक रहेगा किसी की शिक्षा दीक्षा हेतु प्रयासरत होगे धन सम्पदा का लाभ मिलेगा, यात्रा सम्भव है, भाई बहिनों को समय देना पड़ेगा,कान की पीडा से वचे, गणेश जी की आराधना करें।

(4)कर्क राशि – सप्ताह की शुरुआत मानसिक तनाव से हो सकती है अपव्यय का प्रभार, व्यापारिक हानि हो सकती है, किसी विवाद में पराजय अथवा दंड मिल सकता है, व्यसनों से बचें,18-19तारीख में परिवर्तन होगा और परिस्थितियों में अनुकूलता आएगी, मानसिक शांति के साथ लाभ व मान सम्मान बढेगा, 20-21-22तारीख में कौटुंबिक सुख में वृद्धि होगी,धन रत्न उपहार मिल सकता है, पर मृदुल वंधन से दूरी बनाए नहीं तो भविष्य में दुखदाई हो सकता है, शिवजी की आराधना करें।

(5) सिंह राशि – इस सप्ताह की शुरुआत ऐश्वर्य वृद्धि से होगी लाभ के अवसर बढ़ेंगे, वाहन की प्राप्ति होगी, बड़े भाई बहिनों का सुख प्राप्त होगा, 18-19तारीख में परिवर्तन होगा और परिस्थितियों में विपरीतता आएगी, अपव्यय,हानि,दंड या रोग ग्रस्त हो सकते हैं, 20-21-22तारीख में पुनः अनुकूलता आएगी और धन सम्पदा पद प्रतिष्ठा प्राप्त होगी, विवेक जागृत होगा और सुख की प्राप्ति होगी, सर्वत्र अनुकूलता आएगी, अधिकारी वर्ग को अनुकूल परिस्थितियां होगी, सूर्य नारायण को प्रातः काल अर्घ्य देकर नमस्कार करे।

(6) कन्या राशि – सप्ताह की शुरुआत मान सम्मान में वृद्धि से होगी, नौकरी में प्रमोशन, अनुकूलता, बेरोजगारों को रोजगार नौकरी मिल सकती है, किसी नवीन व्यवसाय की शुरुआत हो सकती है, पैतृक सम्पत्ति से सम्वंधित मामलों में प्रगति होगी, ऐश्वर्य वृद्धि वाहन लाभ,व धन लाभ होगा, पर 20-21-22तारीख में सावधानी बरतें क्योंकि एकाएक परिवर्तन होगा और परिस्थितियां विपरीत होगी, पुराने शत्रु सक्रिय होकर नुकसान पहुंचा सकते हैं धन हानि अथवा व्यसनों के परिणाम स्वरूप धन हानि हो सकती है, पुराने मामलों में सजा हो सकती है शारीरिक पीडा सम्भव है, गणेश जी की आराधना करें।

(7)तुला राशि – यह सप्ताह वहुत ही शानदार लाभकारी रहने वाला है किसी धार्मिक स्थल या समारोह का हिस्सा बनेंगे, किसी धार्मिक व्यक्ति का सहयोग मिलेगा, भाग्य वर्धन के साथ साथ ससुराल पक्ष से मधुरता बढ़ेगी,मान सम्मान पद प्रतिष्ठा उपहार, व्यवसाय में वृद्धि होगी, नवीन योजनाओं को तैयार करेंगे, बेरोजगार लोग रोजगार युक्त होंगे, पैतृक सम्पत्ति से सम्वंधित मामलों में प्रगति होगी, बड़े भाई बहिनों का सहयोग मिलेगा ऐश्वर्य वृद्धि, लाभ सम्पत्ति में वृहद अनुकूलता आएगी,यह सप्ताह वहुत सफलता दायक रहेगा,, भगवती दुर्गा जी की आराधना करें।

(8) वृश्चिक राशि – इस सप्ताह की शुरुआत बहुत ही चिंताजनक स्थिति में आरम्भ होगी अनेक व्याधियां चिंता ग्रस्त करेगी, पुराने साहूकारों से अपमान मिल सकता है, जीवन साथी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, पर 18-19तारीख में परिवर्तन होगा और अनुकूलता आएगी, धार्मिक व्यक्ति की सलाह आपको राहत देगी, धर्म की ओर अग्रसर हो धार्मिक यात्रा या अनुष्ठान का विचार वन सकते हैं, ससुराल पक्ष में अनुकूलता आएगी, 20-21-22तारीख में पुनः सफलताएं मिलेंगी पुराने लम्वित कार्य पूर्ण होंगे, शासन सत्ता के नजदीक रह पद प्रतिष्ठा मान सम्मान धन वृद्धि होगी,, राजनैतिक गुरुओं का लाभ मिलेगा, हनुमान जी का दर्शन व चालीसा पाठ करें।

(9)धनु राशि – इस सप्ताह की शुरुआत दैनिक कार्यस्थल में वाद विवाद वैमनस्य के साथ शुरू हो सकती है, व्यापारिक राजकीय स्थलों में कामुकता के शिकार वनने से बचें अन्यथा वदनामी हो सकती है, पत्नी के साथ अनुकूल व्यवहार रखें, 18-19तारीख में व्याधियां बढ सकती है पुरानी गलतियां परेशानी पैदा कर सकती हैं,यह समय संयम से निकालें,, 20-21-22तारीख में परिवर्तन होगा और परिस्थितियों में अनुकूलता आएगी, किसी धार्मिक व्यक्ति की सलाह आपको राहत देगी, धार्मिक रुचियां बढेगी, ससुराल का सहयोग मिलेगा, भाग्य वर्धन होगा, सर्वत्र अनुकूलता आएगी, पीपल प्रदक्षिणा करें,, नारायण मंत्र का जप करें।

(10) मकर राशि – इस सप्ताह की शुरुआत से ही शत्रुओं के षड्यंत्रों का सामना करना पड़ सकता है, अपनों पर ही संदेह बढेगा,रोग वृद्धि से शारीरिक पीडा सम्भव है, 18-19तारीख में परिवर्तन होगा और व्यवसाय वृद्धि होगी, लाभ बढेगा, जीवन साथी का सहयोग मिलेगा, पर व्यापारिक झगड़े बढ सकते हैं, सावधान रहें, 20-21-22तारीख को व्याधियां बढ सकती है, पुराने मामलों में नुकसान हो सकता है,ॠण देने वालों से सावधान रहें, स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता,मानापमान की स्थिति वन सकती है,, हनुमान जी का दर्शन करें एवं चालीसा पाठ करें।

(11) कुंभ राशि – इस सप्ताह संतान पक्ष की तरफचिंतित रहेंगे, पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल रह सकता है, ननिहाल पक्ष का सहयोग मिलेगा, बुद्धि कौशल से परिस्थितियों में अनुकूलता रखनें में सफल रहेंगे, 18-19तारीख में संदेहों के कारण मित्र भी शत्रुता करेंगे, मौसम की मार रोग वृद्धि होगी, अनेकों चिंताएं पीडा दे सकती है कोई खराब समाचार व्यथित कर सकता हैं पर 20-21-22तारीख में परिवर्तन होगा और व्यवसाय वृद्धि होगी लाभ बढेगा, जीवन साथी का सहयोग मिलेगा, कोई नवीन योजनाओं पर काम होगा, परिवार में अनुकूलता वनाए रखें, हनुमान जी की आराधना करें पीपल की प्रदक्षिणा करें।

(12) मीन राशि – इस सप्ताह की शुरुआत किसी अचल संपत्ति के क्रय विक्रय से हो सकती है, पर छल कपट से सावधान रहें, माता पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, घर का वातावरण क्लेश पूर्ण रहेगा18-19तारीख में, संतान पक्ष की प्रतिकूलता या असफलता या स्वास्थ्य परेशान कर सकता हैं तथापि उसकी सफलता हेतु अतिरिक्त प्रयास कर सकते हैं,, 20-21-22तारीख में मान सम्मान में कमी महसूस करेंगे,पद प्रतिष्ठा में न्यूनता हो सकती है, शत्रुओं से पराजय का सामना करना पड़ सकता है, पुराने मामले उखड सकते हैं,स्वास्थ्य का ध्यान रखें, नारायण मंत्र का जप करें, हनुमान जी का दर्शन करें।

ज्योतिष कर्ता --
आचार्य पं कमलाकांत अरजरिया (गुरसराय वाले) अन्तर्राष्ट्रीय भागवताचार्य, वैदिक अनुष्ठान कर्ता, हाल निवास -गल्ला मंडी रोड झांसी मोबाइल नंबर 9450041559, 8299510965

प्रभारी मंत्री नारायन सिंह कुशवाह ने मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान पर्व की प्रदर्शनी का किया उद्घाटन

समय जगत, निवाड़ी । म.प्र. शासन के सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण एवं उद्यानिकी तथा खाद्य प्रसंस्करण विभाग तथा निवाड़ी जिले के प्रभारी मंत्री श्री नारायन सिंह कुशवाह ने निवाड़ी जिले के एक दिवसीय प्रवास के दौरान आज जनपद पंचायत में मध्य प्रदेश सरकार की उपलब्धियों के संबंध में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन कर प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

प्रवास के दौरान प्रभारी मंत्री श्री कुशवाह ने रेस्ट हाउस निवाड़ी में मध्य प्रदेश सरकार के एक वर्ष की उपलब्धियों के संबंध में प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। उन्होंने केन्द्र तथा राज्य की डबल इंजन सरकार की उपलब्धियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पीएम के मन में एमपी, एमपी के मन में मोदी चरितार्थ हो रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाओं का लाभ अंतिम छोर के व्यक्ति तक पहुंच सके इस हेतु जन-कल्याण पर्व के रूप में अभियान चलाया जा रहा है। प्रवास के दौरान प्रभारी मंत्री श्री कुशवाह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जन-कल्याण अभियान पर्व के सफल संचालन के संबंध में विभागीय बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर श्री जांगिड़ द्वारा केन-बेतवा लिंक परियोजना, मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान पर्व एवं गढ़कुडार महोत्सव के संबंध में विस्तार से अवगत कराया गया। प्रभारी मंत्री श्री कुशवाह ने तीनों विषयों के संबंध जिले के समस्त अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये।

उन्होंने कहा कि शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ हर पात्र व्यक्ति को आसानी से प्राप्त हो, इस हेतु प्रतिदिन शिविरों के अतिरिक्त भी विशेष शिविरों के आयोजन किए जाएं। प्रवास के दौरान प्रभारी मंत्री श्री कुशवाह ने जनप्रतिनिधियों के साथ मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर विधायक निवाड़ी श्री अनिल जैन, सांसद प्रतिनिधि श्री राजेश पटैरिया, श्री अखिलेश अयाची, कलेक्टर श्री लोकेश कुमार जांगिड़, पुलिस अधीक्षक डॉ. राय सिंह नरवरिया, अपर कलेक्टर श्री एचबी शर्मा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती ज्योति ठाकुर, एसडीएम निवाड़ी श्री अनुराग निंगवाल, एसडीएम पृथ्वीपुर श्री सतीश वर्मा, जनप्रतिनिधि एवं संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे ।

हस्तशिल्प सप्ताह के तहत लगायी गयीं कलाकृतियों की स्टॉल

समय जगत, ललितपुर। अखिल भारतीय हस्तशिल्प सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद स्तर के हस्तशिल्पी ने प्रतिभाग करने के साथ ही अपनी कलाकृतियों की स्टॉल भी लगायी गयी। जिसके अन्तर्गत हस्तशिल्प से सम्बन्धित समस्त विभागीय योजनाओं की जानकारी प्रदान की गयी। हस्तशिल्पियों के कौशल उन्नयन एवं उन्हें तकनीकी रूप से उन्ननत बनाने के लिए प्रोत्साहित करने के साथ-साथ सम्बन्धित जानकारी उपलब्ब्ध करायी गयी। शासन स्तर पर नयी योजना, मुख्यमंत्री युवा-उद्यमी योजना के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी ।

जिसके जानकारी पाकर हस्तशिल्पी काफी उत्साहित हुये। कार्यक्रम में ओ.डी.ओ.पी. उत्पाद के रूप में जरी सिल्क साड़ी, बांस से बनी हुई कलाकृतियां एवं माटीकला के उत्पाद प्रमुख स्टॉल रही।

कार्यक्रम में अध्यक्ष स्मॉल स्केल इण्डस्ट्रीज कमलेश सर्राफ, मुकेश जैन एवं बैंक समन्वयक, शाखा प्रबन्धक स्टेट बैंक मुख्य शाखा, केनरा बैंक मुख्य शाखा प्रबन्धक, सेण्ट्रल बैंक मुख्य शाखा प्रबन्धक, बैंक ऑफ इण्डिया ललितपुर मुख्य शाखा, प्रथमा ग्रामीण बैंक मुख्य शाखा ललितपुर के अतिरिक्त हस्तशिल्पी जनमेंद पंथ, जुगराज साहू, नितिन पंथ, सन्तोष, राजेन्द्र, अन्य हस्तशिल्पी उपस्थित रहे।

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के क्रियान्वयन में तेजी लायें अधिकारी : जिलाधिकारी

पीओ नेडा को कैम्प लगाकर योजना का प्रचार-प्रसार कराने के निर्देश

समय जगत, ललितपुर। भारत सरकार के नवीन एवं नवीनीकरण ऊर्जा मंत्रालय द्वारा संचालित पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के क्रियान्वयन हेतु नामित वेण्डरों के साथ जिलाधिकारी अक्षय त्रिपाठी ने कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक की। बैठक में परियोजना अधिकारी यूपीनेडा राजेश सिंह बघेल ने बताया कि पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना की विगत बैठक एक अक्टूबर को आयोजित की गयी थी, जिसमें जनपद में 1242 आवेदन पत्र ऑनलाईन पोर्टल पर दर्ज किये गये थे, जिसके सापेक्ष 178 सोलर संयंत्र स्थापित किये गये थे व वर्तमान में कुल पंजीकरण 8477, आवेदन 1725 के सापेक्ष 425 सोलर संयंत्र स्थापित किये गये हैं, इसके साथ ही जनपद में वृहद स्तर पर योजना का प्रचार प्रसार कराया जा रहा है। उन्होंने बताया कि बीते 2 दिसम्बर को मुख्य विकास अधिकारी कमला कान्त पाण्डेय की अध्यक्षता में मीटर रीडर्स का प्रशिक्षण भी कराया जा चुका है व विद्युत विभाग के अधीक्षण अभियन्ता एवं अधिशाषी अभियन्ता विद्युत वितरण खण्ड प्रथम एवं द्वितीय को निर्देशित किया गया था कि दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम को यूपीनेडा लखनऊ द्वारा प्रचार प्रसार मद में जो धनराशि दी गयी है, उससे अपने यहां मीटर रीडर्स के माध्यम से व्यापक प्रचार प्रसार करायें। बैठक के दौरान जनपद में योजना के सम्बंध में कराये गये

प्रचार प्रसार का विवरण प्रस्तुत नहीं कर पाने पर विद्युत विभाग को पुनरू निर्देशित किया गया है कि विद्युत बिल जमा केन्द्रों-नझाई बाजार तथा जिला पंचायत में हेल्पडेस्ट की स्थापना कर प्रत्येक उपभोक्ता को योजना से पम्पलेट के माध्यम से अवगत कराया जाये। बैंक स्तर से ॠण संबंधी पत्रावलियां समय से स्वीकृत न होने की स्थिति में उसका विवरण परियोजना अधिकारी यूपीनेडा द्वारा बनाये गये व्हाट्सएप ग्रुप पर डाला जाये व अग्रणी जिला बैंक प्रबंधक द्वारा सुझाव दिया गया कि जनपद में स्थापित एमब्रोशिया कॉलोनी में एक प्रचार प्रसार शिविर का आयोजन कर लिया जाये व इच्छुक लाभार्थी है जो इस योजना में आवेदन करना चाहते हैं। बैठक में जिलाधिकारी ने परियोजना अधिकारी यूपीनेडा को वेण्डर से समन्वय स्थापित कर इस सप्ताह में उक्त स्थल पर शिविर का आयोजन कराने के निर्देश दिये। उन्होंने यह भी निर्देश दिये कि व शहरी क्षेत्र में जो वेण्डर के माध्यम से घर घर सर्वे कार्य किया जा रहा है, उसकी भी सूचना से अवगत करायेंगे, इसके अतिरिक्त यह संज्ञान में आया है कि कुछ वेण्डर द्वारा एक किलोवाट के विद्युत संयोजन पर सोलर पैनल स्थापित करने हेतु उपभोक्ताओं को हतोत्साहित किया जाता है, यह कदापि उचित नहीं है। बैठक में सीडीओ कमलाकान्त पाण्डेय, एडीएम अंकुर श्रीवास्तव, उप निदेशक, कृषि प्रसार, डीपीआरओ, विद्युत वितरण खण्ड प्रथम, डीआईओएस एवं जनपद स्तरीय समिति में नामित अधिकारी भी उपस्थित रहे।

मेडिकल कॉलेज में वार्डों के रिनोवेशन की कमान डीएम ने ली अपने हाथों में

समय जगत, ललितपुर। राजकीय मेडिकल कॉलेज में वार्डों के रिनोवेशन व हैंडोवर में लापरवाही उजागर होने के बाद उक्त कार्य की कमान जिलाधिकारी अक्षय त्रिपाठी ने अपने हाथों में ले ली है, उन्होंने लोक निर्माण विभाग और कार्रवाई संस्था मैं आपसी समन्वय करते हुए उक्त कर को जल्द से जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं साथ ही जिलाधिकारी स्वयं निरंतर राजकीय मेडिकल कॉलेज का निरीक्षण कर कार्य की समीक्षा कर रहे हैं, जिसके चलते आज पुनरू जिलाधिकारी ने राजकीय मेडिकल कॉलेज पहुंचकर वार्डों के रिनोवेशन, स्वास्थ्य सेवाओं एवं सफाई व्यवस्था का जायजा लिया। जिलाधिकारी ने मौके पर राजकीय मेडिकल कॉलेज में वार्डों का निरीक्षण किया और कार्य की गुणवत्ता परखी। उन्होंने अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग भवन विंग दीपांकर चौधरी एवं कार्यदायी संस्था को सख्त निर्देश दिए कि कार्यस्थल पर ही रुक कर 7 दिन के भीतर कार्य पूर्ण कराएं। उन्होंने कहा कि विगत दिवस निरीक्षण के दौरान जो लापरवाहियां मिली वह भविष्य में दोबारा नहीं होनी चाहिए अन्यथा संबंधित के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी। विगत दिवस किए गए निरीक्षण में शौचालय में अत्यधिक गंदगी पाई गई थी, जिस पर जिलाधिकारी ने संबंधितों को कड़ी फटकार लगाते हुए सुधार के निर्देश दिए थे उक्त के क्रम में आज पुनरू चिकित्सालय के सभी शौचालय चेक किए गए, अपेक्षा अनुसार सुधार पाया गया। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि मरीज को बेहतर उपचार तभी मिल सकेगा जब चिकित्सालय में स्वच्छता रहेगी, इसलिए साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा जाए, इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही नहीं होनी चाहिए, आगामी दिनों में पुनरू चिकित्सालय का निरीक्षण किया जाएगा।

निरीक्षण में पाया गया कि दो दिन पूर्व दिए गए निर्देशों के क्रम में पीडब्ल्यूडी द्वारा डेंगू वार्ड में रेनोवेशन का कार्य पूर्ण कर जिला अस्पताल प्रशाशन को हस्तांतरित कर दिया है तथा उसमें मरीज को शिफ्ट भी कर दिया गया है। उनके द्वारा पीडब्ल्यूडी द्वारा कराई जा रहे रेनोवेशन कार्यो का निरीक्षण किया गया। पाया गया की सभी स्थानों पर लेबर लगी है तथा पीडब्ल्यूडी द्वारा तेजी के साथ कार्य कराया जा रहा है। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने प्रिंसिपल द्वारा जो भाग कार्यदाई संस्था को कार्य हेतु दिया हुआ है (यथा प्राइवेट वार्ड, महिला वार्ड, एनआरसी वार्ड एवं पुरुष वार्ड), उसमें शौचालय सहित सभी कार्य पूर्ण कर 7 दिन के अंदर अस्पताल प्रशासन को सौंपने के निर्देश दिए।

फंदे के आकार की गर्दन ढूंढ़ने की कवाइद

भविष्य की आहट
डॉ. रवीन्द्र अरजरिया

समय जगत, झांसी। देश के आन्तरिक हालातों की स्थिति निरंतर बिगडती जा रही है। अनेक उत्तरदायी लोक सेवकों ने कर्तव्यों को हाशिये पर रखकर अधिकारों का मनमाना उपयोग शुरू कर दिया है। बेंगलुरु के इंजीनियर अतुल सुभाष की आत्महत्या ने पुलिस से लेकर कानून व्यवस्था तक को कटघरे में खडा कर दिया है। न्यायाधीश पर रिश्वत की मांग के आरोप लगाते हुए अतुल ने उनके पेशकार को भी रेखांकित किया है जिनका नाम न्यायाधीश रीता कौशिक तथा पेशकार माधव बताया जाता है। पुलिस व्दारा पक्षपात करने से लेकर तानाशाही तक के अनेक पक्ष उजागर हुए हैं। महिलाओं के पक्ष में हमेशा आन्दोलन करने वाली राजनैतिक पार्टियां, समाजसेवी संगठन और कथित बुध्दिजीवियों की जमात अतुल को न्याय दिलाने के लिए पूरी ताकत से सडकों पर नहीं उतरी, नारे नहीं लगे और न ही विपक्ष ने धरना-प्रदर्शन ही किये। तुष्टीकरण की राजनीति करने वालों ने मीडिया के पूछने पर औपचारिक वक्तव्य देकर अपने कर्तव्यों की इति कर ली। इस दुखरूद घटना के लिये अतुल ने पहला नाम पारिवारिक न्यायालय की न्यायाधीश का लिखा था परन्तु न्यायालयों की शीर्ष व्यवस्था व्दारा विशेषाधिकार का प्रयोग करके कठोर कार्यवाही से आज तक आम आवाम को अवगत नहीं कराया। भीख मांगो, कर्जा लो या चोरी करो, चाहे जो भी करो, मेन्टीनेंस तो देना ही होगा। पुरुषों के प्रति इस तरह की टिप्पणी करने वालों की मानवता केवल और केवल महिला पक्ष के प्रति संवेदना में कैसे बदल जाती है, यह यक्ष प्रश्न स्वाधीनता के बाद से निरंतर अपनी समीक्षा के लिए उत्तरदायी लोगों को आमंत्रित करता रहा है। कानून और कानून की रोशनी में होने वाली कार्यवाही, दौनों पर एक बार फिर किसी व्यक्ति ने अपनी मौत के साथ सवालिया निशान लगाये हैं। मगर परिणाम अभी तक ढाक के तीन पत्तों से आगे नहीं बढ़ सके। अतुल को आत्महत्या के लिए प्रेरित वाले सभी नामजद लोगों के विरुध्द प्रकरण दर्ज करने में भी लम्बे समय तक कोताही बरती जाती रही। सरकारी महकमों के उत्तरदायी लोगों तक कानून का शिकंजा पहुंचना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। 34 वर्षीय इंजीनियर ने मृत्यु को गले लगाने से पहले 24 पेज लिखकर स्वयं का दर्द और देश की वर्तमान व्यवस्था पर 80 मिनिट का वीडियो संदेश भी रिकार्ड किया था। उसके अक्षरों तथा शब्दों की मनमानी व्याख्या करके पुलिस ने अपने ढंग से कार्यवाही करने की औपचारिकता प्रारम्भ कर दी ताकि मुद्दे की गर्माहट को समय की ठंड के साथ समाप्त किया जा सके। काश, अतुल को न्याय मिला होता। उसकी चिता की आग ठंडी भी नहीं हुई थी कि हैदराबाद में एक फिल्म स्टार को हथकडियां पहना दी गईं। पूर्व सूचना के बाद भी पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था न होने के कारण संध्या थियेटर में पुष्पा-2 के प्रीमियर के दौरान हुई भगदड में 38 वर्षीय महिला रेवती की सांस घुटने के कारण मौत हो गई थी। पहले से अवगत होने के बाद भी सुरक्षा के उपाय न करने वाले उत्तरदायी अधिकारियों पर प्राथमिकी दर्ज करने के स्थान पर चिक्कड़पल्ली पुलिस स्टेशन में फिल्म के अभिनेता अल्लू अर्जुन सहित आयोजकों के विरुध्द बीएनएस की धारा 105 तथा 118(1) के तहत मामला पंजीबध्द कर किया और अभिनेता को उसके घर से गिरफ्तार कर स्वयं की पीठ ठोक ली। इसी प्रकरण में थियेटर के मालिक, मैनेजर और बालकनी के सुपरवाजर को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका था। अनुमति लेकर थियेटर पहुंचे अल्लू अर्जुन के संबंध में मृतका के पति भास्कर ने स्पष्ट किया कि वह अपने बेटे के अनुरोध पर फिल्म देखने हेतु संध्या थियेटर गये थे, अभिनेता का भगदड या पत्नी की मौत से कोई संबंध नहीं है। यानी कि भगदड का कारण पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था का न होना था। इतना सब होने के बाद भी किसी सरकारी मुलाजिमों के खिलाफ जांच तक के आदेश नहीं दिये गये। ऐसे में यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि फंदे के आकार की गर्दन ढूंढने की कवाइद में लगे रहने वाले अधिकांश उत्तरदायी अधिकारियों पर उनके वरिष्ठ का वरदहस्त रहता है। ईमानदाराना बात तो यह है कि न्याय की वास्तविक परिभाषा के अवतरित होते ही अनेक उत्तरदायी अधिकारियों गर्दनें स्वयं ही कानून के शिकंजे में फंसकर रहम की भीख मांगती दिखेंगीं परन्तु ऐसा होना भालू के बाल गिनने जैसा है। एक ओर तो राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त अभिनेता को भगदड के लिये जिम्मेदार मान लिया जाता है वहीं दूसरी ओर सार्वजनिक मंचों से 15 मिनिट के लिये पुलिस हटाने की चुनौती देकर साम्प्रदायिकता के लिए खून बहाने वालों के विरुध्द न तो पुलिस ही प्राथमिकी दर्ज करती है और न ही न्यायालय स्वयं संज्ञान लेता है। भडकीले भाषणों के लिए नेताओं को क्लीन चिट देने वालों की नजरें केवल अभिनेताओं से लेकर आमजन तक ही केन्द्रित रहतीं है। प्रतिभाबल, मानवताबल, नैतिकबल, सौहार्यबल, आत्मीयताबल, प्रेमबल जैसे सकारात्मक पहलुओं को तंत्र का उत्तरदायी वर्ग लम्बे समय से बेचारों का प्रलाप मान बैठा है। उनके लिए केवल धनबल, जनबल, तनबल, दलबल, आतंकबल, भीडबल जैसे कारक ही महात्वपूर्ण रह गये हैं तभी तो चन्द रोज पहले उत्तरप्रदेश के झांसी में मस्जिद से ऐलान एकत्रित हुई उग्रभीड ने नेशनल इन्वेस्टिगेटिव एजेंसी तथा एंटी टेररिस्ट स्क्वाड की संयुक्त टीम से एक आरोपी को आजाद करवा लिया था।

दतिया गेट बाहर सलीम बाग निवासी खालिद नदवी से विदेशी फंडिंग सहित अन्य मामलों में संयुक्त टीम अपने इनपुट के आधार पर पूंछतांछ करना चाहती थी। दीनी तालीम के नाम पर आललाइन कोचिंग चलाने वाले खालिद नदवी को लेकर क्षेत्र में तरह-तरह की बातें कही जा रहीं हैं। भीडबल के आधार पर कानूनबल को झुकाने की यह पहली घटना नहीं है। स्वाधीनता के बाद से निरंतर पुलिस, प्रशासन और कानून पर पक्षपात के आरोप लगते रहे हैं।

हतनापुर हायर सेकेंडरी स्कूल में शिक्षकों के विद्यालय नहीं आने से छात्र-छात्राओं की पढ़ाई हो रही है चौपट

समय जगत, सिलवानी। ब्लॉक केग्राम हतनापुर देवरी में शासकीय हाई सेकेंडरी स्कूल का है। ग्रामीणों के मुताबिक विद्यालय एक हफ्ते में लगभग दो या तीन दिन खुलता है।

ज्यादा समय स्कूल बंद ही रहता है दिन शनिवार को हायर सेकेंडरी स्कूल भवन देवरी हथनापुर 12ः30 बजे हायर सेकेंडरी स्कूल में ताले डाले थे और स्कूल से शिक्षक गायब थी वर्तमान में हतनापुर देवरी स्कूल में प्राचार्य प्रभारी रूप सिंह पौते सहित सात अतिथि शिक्षक स्कूल में पदस्थ है जो हफ्ते में कभी कभार छात्र-छात्राओं को पढ़ाने के लिए दो तीन दिन हतनापुर देवरी स्कूल आते है

ज्यादातर स्कूल में ताला डाला रहता है जिसके कारण छात्र छात्राएं शिक्षा ग्रहण नहीं कर पा रही हैं शिक्षकों की लापरवाही को लेकर ग्रामीणों ने पूर्व में भी जिले के अधिकारियों से स्कूल भवन बंद तथा शाला प्रभारी सहित सात अतिथि शिक्षकों के स्कूल नहीं आने को लेकर शिकायत भी की जा चुकी है लेकिन शिक्षा विभाग के अधिकारियों द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गई हायर सेकेंडरी स्कूल स्कूल में कक्षा 6 से लेकर कक्षा 10,तक के 180, छात्र छात्राएं स्कूल में शिक्षा ग्रहण नहीं कर पा रही हैं हतनापुर देवरी हायर सेकेंडरी स्कूल मे पदस्थ शाला प्रभारी रूप सिंह पोर्ते सहित 7 अतिथि शिक्षक इसके बाद भी स्कूल भवन में तारे डाले हुए

हालात यह है कि बच्चे बैग टांगे स्कूल के ताला लगे गेट पर शिक्षकों का इंतजार करते रहते हैं और कई बार जब शिक्षक 12 बजे तक भी नहीं आते तो बच्चे वापस घर लौट जाते हैं। ग्रामीणों ने बताया कि पिछले कई सालों से विद्यालय में कोई सुधार नहीं हुआ। लगातार शिकायत के बाद शिक्षा विभाग द्वारा कोई ठोस कार्रवाई नहीं की जाती।

अतिथियों और साला प्रभारी की मिलीभगत से शिक्षक कर रहे मौज

ग्रामीणों का कहना है कि शासकीय विद्यालय में शिक्षकों की आपसी मिलीभगत से संचालन होता है। अधिकतर स्कूलों में शिक्षकों का हाल यह है कि पूरे स्टाफ के तालमेल से कुछ शिक्षक चिन्हित दिनों तक विद्यालय आते है बाकी अन्य शिक्षक घर बैठे वेतन प्राप्त करते है। इसी तरह शिफ्ट के रूप में शिक्षक विद्यालय आते है। ग्रामीणों ने कहा हम खुद परेशानी उठाकर अपने बच्चों को हतनापुर देवरी हायर सेकेंडरी स्कूल पढ़ने के लिए भेजते है।

इनका कहना है

मीडिया के माध्यम से हतनापुर देवरी हायर सेकेंडरी स्कूल भवन में ताले लगे होने की जानकारी मिली है शीघ्र जांच कर कर शिक्षकों पर कार्रवाई की जायेगी।

नरेश रघुवंशी ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सिलवानी

एक पेड़ लगाना, एक स्थायी स्मृति बनाना है : राधा सिंह

समय जगत, भोपाल। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालयए के मंडप परिसर में राष्ट्र सेवक के नाम राष्ट्र उतथान में प्रकृति पर्यावरण के संरक्षण में 1100 वृक्षारोपण अभियान का शुभारम्भ मध्य प्रदेश के पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्रीमती राधा सिंह ने गुलर का पौधा रोप कर किया। एक पेड़ माँ के नाम . एक हजार पेड़ मोदी जी के नाम से एक विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन अवसर पर माननीय मंत्री ने कहा की पर्यावरण की सुरक्षा और समृद्धि के लिए समर्पित एक पेड़ माँ के नाम मे समुदाय के साथ जुड़ाव और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को निरंतर बनाते हुए स्थायी जीवनशैली की महत्ता को प्रोत्साहित किया जाना है। इस अभियान का उद्देश्य माँ के नाम पर एक पेड़ लगाना और एक स्थायी स्मृति बनाना हैए जो न केवल पर्यावरण की रक्षा करेगा बल्कि एक हरे और अधिक समृद्ध भविष्य के निर्माण में भी योगदान देगा। इस अवसर पर संग्रहालय के निदेशक प्रोण् अमिताभ पांडे ने बताया कि मानव संग्रहालय समुदाय का संग्रहालय है। हम सभी समुदाय के लोगो से अपील करते है कि जिस तरह माननीय मंत्री के साथ आम जन आकर अपने माँ के नाम पौधा रोपे हैए वैसे ही सभी समुदाय के लोग आकर इस विशाल परिसर मे पौधा रोपे । साथ हि प्रकृति के पोषण के लिए धरती माता और मानव जीवन के पोषण के लिए हमारी माताओं का सम्मान करें । इस अवसर पर विशेष सोनी के साथ बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक एवं मानव संग्रहालय के अधिकारी उपस्थित होकर अपने अपने माँ के नामसे एक पेड़ लगाए । कार्यक्रम का संयोजन संग्रहालय के सुरक्षाए बागवानीए एव तटीय गाँव मुक्ताकाश प्रदर्शनी अनुभाग ने किया था ।

संक्षिप्त समाचार

ठंड से बचने के लिये अलाव तापते दिखे लोग

समय जगत, बिस्टान । कुछ दिन बादल छाए रहने व गर्मी के बाद अब ठंड ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया है। पिछले कुछ दिनों से ठंड लगातार बढ़ती जा रही है। रात में ठंडी हवा चलने के बाद लोग ऊनी वस्त्र पहने दिखाई दे रहे हैं । वहीं खुले में रहने वाले लोग ठंड से बचने का प्रयास कर रहे हैं। नगर के प्रमुख चौराहों बस स्टैंड व अन्य स्थानों पर भी अलाव जला कर रात में ठंड से बचने के प्रयास किये जा रहे हैं ।

एकता और अखंडता के प्रतीक सरदार पटेल के स्मृति दिवस पर किया नमन

समय जगत, महोबा । उत्तर प्रदेश पुलिस मुख्यालय लखनऊ के आदेश के क्रम में, पुलिस अधीक्षक महोबा पलाश बंसल के निर्देशन में भारत रत्न लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल जी के जन्म दिनांक 31 अक्टूबर, 1875 से वर्ष 2025 तक 150 वर्ष पूर्ण होने पर 2024 से 2025 तक 150 वीं जयंती वर्ष पर्यन्त मनाये जाने का निर्णय लिया गया है । जिसमें प्रस्तावित कार्यक्रम में शहीद राकेश कुमार चौरसिया सहायक कमांडेंट सीआरपीएफ, जगदीश प्रसाद यादव कमांडो आर्मी तथा दिनेश बुधौलिया डिप्टी कमांडेंट सी.आर.पी.एफ. के शहीद स्थलों पर 12 वीं वाहिनी पीएसी फतेहपुर के बैंड द्वारा राष्ट्रभक्ति गीत/राष्ट्रधुन की प्रस्तुति कर शहीदों को याद कर नमन किया गया ।

प्रथम महिला टी-10 क्रिकेट लीग प्रतियोगिता में कन्या महाविद्यालय रहा विजेता

समय जगत, शिवपुरी। श्रीमंत माधवराव सिंधिया जिला खेल परिसर में भारत की प्रथम महिला क्रिकेट अकेडमी का संचालन किया जा रहा है। शहर में महिला क्रिकेट को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 14 दिसंबर को खेल और युवा कल्याण विभाग की ओर से प्रथम ञ्ज-10 महिला क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन स्टेडियम में किया गया।

इस प्रतियोगिता में पीजी कॉलेज, कन्या महाविद्यालय, एनसीसी बटालियन और पिछोर की टीम शामिल हुई। चारों टीमों के मध्य लीग आधार पर मैच आयोजित हुए जिसमे फाइनल मैच पीजी कॉलेज एवं कन्या महाविद्यालय शिवपुरी के बीच खेला गया। इस मैच में टॉस जीत कर कन्या महाविद्यालय शिवपुरी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 10 ओवर में 88 रन बनाए। दुर्गेश रावत ने शानदार अर्ध शतकीय पारी खेली और 51 रन बनाए एवं अन्य बल्लेबाजों की मदद से 88 का स्कोर बनाया। पीजी कॉलेज की टीम ऋषिका राजावत ने दो विकेट और अंजलि परमार ने एक विकेट लिया। कन्या महाविद्यालय के 88 रनों के जवाब में पीजी कॉलेज की टीम 76 रन पर सिमट गई।

टीम ने शुरुवात अच्छी की और टीम की तरफ़ से इनमें अंजलि परमार ने 30 और वंशिका ने 35 रन का योगदान दिया लेकिन कन्या महाविद्यालय की घातक गेंदबाजी से पी जी कॉलेज के बाकी बल्लेबाज जल्दी आउट हुए और इस प्रकार यह टूर्नामेंट कन्या महाविद्यालय ने 12 रन से जीत लिया। पूरे टूर्नामेंट के मैन ऑफ़ द सीरीज दुर्गेश रावत रहीं,जिन्होंने पूरे प्रतियोगिता में अच्छी बैटिंग करते हुए शतक रन बनाये। विजेता और उपविजेता टीम को अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। मैच के समापन के अवसर पर जिला खेल अधिकारी डॉ के के खरे, नगर की समाजसेवी और एकल अभियान की महिला उपाध्यक्ष ज्योति मजेजी एवं समाजसेवी रितु गोयल तथा विभाग की हॉकी कोच गीता लखेरा ने सभी टीमों को पुरस्कार वितरण किया। इस अवसर पर कन्या महाविद्यालय के खेल अधिकारी देवेंद्र और पिछोर के यूथ कोऑर्डिनेटर अतर सिंह भी शामिल हुए।

मैच में अंपायर की भूमिका सागर राठौर एवं अक्ष कमल माझी ने निभाई। मैच का संयोजन कमल सिंह बाथम यूथ कोऑर्डिनेटर खेल विभाग द्वारा किया गया। मैच में कमेंट्री वरिष्ठ क्रिकेटर गिरीश मिश्रा एवं सुजीत करोसिया द्वारा की गई। जिला खेल अधिकारी ने बताया कि भविष्य में भी अन्य संस्थानों के महिला खिलाड़ी अपनी तैयारियां करते रहे। विभाग इस तरह के आयोजन आगे करते रहेगे।अंत में खेल अधिकारी डॉ के के खरे ने आभार व्यक्त किया।

निपुण भारत मिशनः उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर महानिदेशक ने खंड शिक्षा अधिकारी को प्रशस्ति पत्र देकर किया सम्मानित

महोबा। उत्तर प्रदेश शासन और बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा परिषदीय विद्यालयों में संचालित निपुण भारत मिशन कार्यक्रम अंतर्गत जनपद में अपना उत्कृष्ट योगदान देने वाले विकास खंड कबरई के खंड शिक्षा अधिकारी अवनीश यादव को शनिवार को मरकरी हॉल, इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान लखनऊ में महानिदेशक कंचन वर्मा ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया द्य इस मौके पर जिले के बेसिक शिक्षा अधिकारी सहित सभी शिक्षकों ने बधाई दी । अवनीश यादव के साथ प्रदेश के समस्त जनपदों से चयनित एक एक कुल 75 खंड शिक्षा अधिकारियों को भी सम्मानित किया द्य यह खबर सुनकर उन्हें बधाई देने वालों का तांता लगा है। शैक्षणिक गुणवत्ता, कायाकल्प ओर निपुण लक्ष्य को प्राप्त करने वाले कबरई ब्लॉक के खंड शिक्षा अधिकारी अवनीश यादव ने कहा इस कार्य में जिले के बेसिक शिक्षा अधिकारी सहित समस्त शिक्षकों एवं बच्चों सभी का विशेष योगदान ओर सहयोग रहा इसके लिए वह सभी का आभार व्यक्त करते हैं।

सीएम के जन्मदिन पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने 500 यूनिट से अधिक ब्लड किया डोनेट

समय जगत, धौलपुर। सूबे के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का जन्मदिन समूचे प्रदेश में भाजपा पार्टी के कार्यकर्ता, पदाधिकारी और नेताओं द्वारा सेलिब्रेट किया गया है। धौलपुर जिले में भी मुख्यमंत्री का जन्मदिन कार्यकर्ताओं द्वारा हर्ष उल्लास पूर्वक मनाया है। मेडिकल कॉलेज में रक्तदान शिविर लगाकर ब्लड डोनेट किया है। जिला कलेक्टर और भाजपा जिला अध्यक्ष ने रक्तदान कर समाज के युवाओं को रक्तदान के लिए प्रेरित किया है।भाजपा जिला अध्यक्ष सत्येंद्र पाराशर ने बताया मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का जन्मदिन राजस्थान प्रदेश भर में सेलिब्रेट किया जा रहा है। सरकार के 1 वर्ष पूरे होने पर भी कार्यक्रम किए गए हैं। भजनलाल सरकार ने 1 वर्ष के शासनकाल में सभी वर्गों के हित में काम किया है। सड़क, बिजली, पानी, खेती किसानी, शिक्षा चिकित्सा आदि बुनियादी ढांचा प्रदेश का मजबूत हो रहा है। राजस्थान प्रदेश में बेरोजगार युवाओं के लिए रोजगार के

अवसर भी सृजित किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया रविवार को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का जन्मदिन हर्ष उल्लास पूर्वक समूचे राजस्थान प्रदेश में बीजेपी पार्टी के कार्यकर्ता और पदाधिकारी ने मनाया है। धौलपुर, बाड़ी, राजाखेड़ा, सरमथुरा, बसेड़ी, बसई नवाब, सैपऊ,मनिया, मांगरोल समेत संपूर्ण जिले में भाजपा कार्यकर्ताओं ने जन्मदिन को सेलिब्रेट किया है। कार्यकर्ताओं द्वारा जरूरतमंद लोगों के लिए रक्तदान शिविर लगाकर ब्लड डोनेट किया है। करीब 500 यूनिट ब्लड कार्यकर्ताओं ने दान किया है। जिसे जरूरतमंद लोगों के लिए जिला अस्पताल को दिया जाएगा। जिला कलेक्टर श्रीनिधि बीटी ने भी रक्तदान कर युवाओं को ब्लड डोनेट करने के लिए प्रेरित किया है। कलेक्टर ने कहा रक्तदान से बड़ा पुण्य का काम नहीं हो सकता है। रक्तदान महादान की श्रेणी में आता है। एक ब्लड यूनिट से जरूरतमंद व्यक्ति की जान बच सकती है। उन्होंने कहा समाज के युवा रक्तदान करने के लिए आगे आए। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष सत्येंद्र पाराशर, भाजपा नेता डॉ शिवचरण कुशवाह, भाजपा नेत्री नीरजा शर्मा, कल्पना शर्मा, मुकेश शर्मा आदि शामिल रहे।

बेसिक शिक्षा का पांच दिवसीय नोडल टीचर्स प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

समय जगत, महोबा। बेसिक शिक्षा विभाग के कबरई विकास खण्ड के 152 प्रधानाध्यापकों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम विवेकानंद महाविद्यालय छतरपुर रोड महोबा में 11 नवंबर से 15 दिसंबर तक चलाया गया, जिसमें दिव्यागता के सभी क्षेत्रों से संबंधित विशेषज्ञों द्वारा विकास खण्ड कबरई के प्रधानाध्यापकों को, दिव्यांग बच्चो के शिक्षण प्रशिक्षण के उद्देश्य से प्रशिक्षित किया गया। मानसिक मंदता के मास्टर ट्रेनर सुनील दीक्षित ने प्रशिक्षुओं को, दिव्यांग शिक्षण में नोडल टीचर्स की भूमिका एवं प्रबंधन के बिंदु बताए, इसी क्रम में श्रवण बाधित बच्चों की शिक्षा की विशेषज्ञ कंचन शुक्ला ने शीघ्र हस्तक्षेप, लक्षण, निदान एवं विशेष शिक्षण में अभ्यास की भूमिका पर प्रकाश डाला।एवं स्पेशल टीचर नगर क्षेत्र हीरामनी मौर्या ने सांकेतिक भाषा के नियम बताए। वी.आई. टीचर कबरई

अनुज तिवारी ने ब्रेल लिपि की वर्णमाला सभी को विस्तार से समझाई। दिनेश चौहान ने मानसिक मंदता के प्रबंधन पर चर्चा की। कार्यक्रम के अंत में खंड शिक्षा अधिकारी कबरई अवनीश यादव ने सभी अध्यापकों को समेकित पटल से संबंधित राज्य परियोजना कार्यालय के दिशा निर्देशों के अनुपालन में सजगता रखने का संदेश दिया एवं समापन की घोषणा कर पूरे समय उपस्थिति हेतु शिक्षक गण की सराहना की।

अध्यापकों में प्रशिक्षण लेने राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रधानाध्यापिका रामकुमारी नायक सहित, ओम प्रकाश तिवारी, सुशील त्रिपाठी, रमाकांत मिश्रा, नीतू रावत, मनोज कुमार साहू, ब्रजकिशोर मिश्रा, नूतन मिश्र, नारायण दास सैनी, सुशीला पाल, गोल्डी सिंह,गोमती नामदेव, आभा मिश्रा, विजय कुमार वर्मा, सियाराम,शशिभूषण त्रिपाठी, रुचि सिंह, लाल मुहम्मद, जयसिंह कुशवाहा, रज्जाक, ओ पी तिवारी टी अली तथा अजमत की प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थिति रही।

ग्राहक दिवस पर मनाएंगे ग्राहक जागरण पखवाड़ा

समय जगत, महोबा । अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत महोबा मनाएगा ग्राहक जागरण पखवाड़ा 24 दिसंबर को ग्राहक दिवस है इस मौके पर 15 दिसंबर से 30 दिसंबर तक ग्राहक जागरण अभियान चलाया जाएगा जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों के छात्रों तथा आम नागरिकों को साइबर ठगी से बचने के लिए जागरूक किया जाएगा जिसमें अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत महोबा के सदस्य जितेन्द्र शुक्ल कुलदीप नगायच विकास सिंह शुभम् सिंह माधव खरे अवनीश सोनी मनोज राजपूत प्रशांत उपाध्याय व जिला कार्यकारिणी के सदस्य तथा साइबर थाना प्रभारी फाईम व उनकी टीम रहेगी ।

श्री राम जानकी प्राण प्रतिष्ठा एवं श्री राम महायज्ञ में विशाल कन्या भोज एवं भंडारे का हुआ आयोजन

कुलपहाड़ (महोबा)। श्री राम जानकी प्राण प्रतिष्ठा एवं श्री राम महायज्ञ आयोजन के अंतिम दिन श्री श्री 1008 बधनिया सरकार मंदिर में एक सप्ताह तक चले धार्मिक कार्यक्रम के अंतिम दिन मंदिर प्रांगण में विशाल कन्या भोज एवं भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें समस्त ग्राम वासियों ने तन मन धन से सहयोग किया ज्ञात हो श्री श्री 1008 बदनिया सरकार मंदिर में महावीर हनुमान जी का विशाल मंदिर एवं भगवान शंकर जी का मंदिर पूर्व से स्थापित है नगर वासियों के सहयोग से इस मंदिर प्रांगण में श्री राम जानकी भगवान की भव्य मूर्तियां नवीन मंदिर निर्माण करके किया गया रविवार को कार्यक्रम के समापन पर विशाल भंडारे का आयोजन किया गया भंडारे के पूर्व कन्या भोज कराया गया मंदिर की पुजारी श्री राजेंद्र दास जी महाराज ने कहा यह आयोजन संपूर्ण नगर वासियों के सहयोग से किया गया इस कार्यक्रम में श्री त्रिलोकी नाथ साहू रामराजा छेदा लाल साहू लक्ष्मण दास एडवोकेट मनीष यादव इंद्र प्रकाश यादव उमाकांत यादव सौरभ यादव अजय यादव राजेंद्र लक्ष्यकर अभिषेक गगन राहुल अहिरवार चाहत संपूर्ण नगर ने रात दिन मेहनत करके इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया ।

चालक ने अनियंत्रित होकर दुकान में घुसाया ट्रैक्टर ,बाइक हुई चकनाचूर

कोलारस। कोलारस के ऐबी रोड स्थित उत्सव वाटिका के सामने अभि ट्रेडर्स की दुकान में शराब के नशे में धुत होकर ट्रैक्टर चालक ने अनियंत्रित होकर दुकान में ही घुसा दिया ट्रैक्टर, जानकारी के मुताबिक दोपहर के समय उत्सव वाटिका के सामने एक तेज अज्ञात रफ्तार शराब के नशे में चला रहे ट्रैक्टर चालक ने एक कार बचाने के चक्कर में अनियंत्रित होकर अभि ट्रेडर्स की दुकान में ही अंदर घुसा दिया ट्रैक्टर दुकान में सामान की खरीदारी करने वाले ग्राहक कललू पुत्र लालसिंह ग्राम कांकरा पंचायत बैडांरी हीरो डीलक्स एमपी 33 स्ह्न4042 की मोटरसाइकिल दुकान के बाहर खड़ी हुई थी अचानक तेजी से आए हुए अज्ञात ट्रैक्टर ने गाड़ी के ऊपर चढ़ा दिया जिससे गाड़ी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई है वहीं दूसरी और एक और जसवंत सिंह ग्राम सेमई मामूली घायल हुए हैं जसवंत ने बताया कि हम प्रतिदिन दूध बेचने आते हैं पशुओं को खिलाने के लिए पशु आहार लेने के लिए दुकान पर खरीदारी करने गए हुए थे मेरी गाड़ी बाहर रखी हुई थी अचानक एक तेज रफ्तार से सोनालिका ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर आया पास में रखी हुई गाड़ी के कारण मेरे हाथ कऔर पैरों में चोटें आई हैं वही ट्रैक्टर को कड़ी मशक्कत से पुलिस अमले ने दुकान से बाहर निकाला कोलारस पुलिस ने मामला विवेचना में लिया है।

5000 विद्यार्थियों ने बनाया सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ का वर्ल्ड रिकार्ड

समय जगत, खरगोन। देशवासियों की सुख, समृद्धि की कामना को लेकर शनिवार को करीब 5 हजार विद्यार्थियों ने एकसाथ, एक स्वर में सामूहिक रूप से हनुमान चालीसा का पाठ कर अनूठा रिकॉर्ड बनाया है। हनुमान चालीसा का यह पाठ आदित्य इंटरनेशनल स्कूल में हुआ है। जहां करीब 20 स्कूलों के विद्यार्थियों ने एक स्वर में संगीतमय हनुमान चालीसा का तीन बार पाठ किया।

विधायक बालकृष्ण पाटीदार ने कहा भारत आध्यात्मिक विश्वगुरू है, भारत भूमि पुण्य भूमि है। हनुमानजी बल, बुद्धि, विद्या के देवता हैं। हजारों विद्यार्थियों द्वारा किए गए सामूहिक हनुमान चालीसा के पाठ से सकारात्मक उर्जा की जो शक्ति जागी है,उससे प्रत्येक शहरवासी लाभान्वित होगा। स्कूल संचालक अशोक दीक्षित ने कहा कि हनुमानजी संकटमोचक हैं तथा भक्ति, शक्ति और संकल्प के देवता हैं। सामूहिक पाठ और प्रार्थना से पूजनशक्ति कई गुना सशक्त हो जाती है। 20 स्कूलों के लगभग पांच हजार विद्यार्थियों ने इस प्रार्थना के साथ हनुमान चालीसा के तीन आवर्तन कर गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में यह उपलब्धि दर्ज करवाई। कार्यक्रम को वरिष्ठ पत्रकार मनोज रघुवंशी, राजेंद्र परसाई ने भी संबोधित किया। गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के प्रतिनिधि मनोज कुमार शुक्ला ने उपस्थित विद्यार्थियों के समक्ष वर्ल्ड रिकॉर्ड्स की घोषणा की। इस दौरान बबलू पाल, राजेंद्र सोनी, नितिन मालवीय, राजू शर्मा, सुनील शर्मा, आशुतोष पुरोहित, अशोक सिंह पंवार, दीपक सोनी, सचिन सोलंकी, कैलाश अग्रवाल, भागीरथ कुमरावत, दशरथ पटेल, रेणु राय, भोलू कर्मा, अलोक मेहता, उपस्थित थे। विद्यालय के प्राचार्य डॉ. सुरेंद्रसिंह पुण्डीर ने आभार व्यक्त किया।

विद्युत के दक्षतापूर्वक उपयोग से ही ऊर्जा संरक्षण में मिलेगी मदद

ऊर्जा संरक्षण दिवस पर एम.पी. ट्रांसको के एम.डी. इंजी. सुनील तिवारी, रीवा में मनाया जा रहा है ऊर्जा संरक्षण सप्ताह

रीवा। राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस के अवसर पर रीवा के साथ पूरे प्रदेश में मध्य प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी ऊर्जा संरक्षण सप्ताह का आयोजन कर रही है। इस अवसर पर एमपी ट्रांसको के रीवा स्थित कार्यालय सहित प्रदेश के सभी ट्रांसमिशन लाइन मेंटेनेंस उपसंभागों,416 सबस्टेशनों, मैदानी कार्यालयों में प्रबंध संचालक इंजीनियर सुनील तिवारी के संदेश का वाचन किया गया और सप्ताह भर ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूक करने गतिविधियां आयोजित की गई है। रीवा में 132 के व्ही सबस्टेशन में कार्यपालन अभियंता अभय सक्सेना, सहायक अभियंता अजय चौरसिया सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रबंध संचालक ने आव्हान किया कि सभी विद्युत का उचित और दक्षतापूर्वक उपयोग करें ताकि ऊर्जा संरक्षण में मदद मिल सकें। उन्होंने कहा कि म.प्र. पावर ट्रांसमिशन कंपनी विद्युत क्षेत्र में सतत विकास लक्ष्य को प्राथमिकता देने के प्रति संवेदनशील और गंभीर है।

इस कारण हर वर्ष ऊर्जा की खपत को कम करने के उद्देश्य से अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वाह करते हुये एम.पी. ट्रांसको विभिन्न कार्यशालाओं ,वेबिनारों ,आकाशवाणी, सोशलमीडिया प्लेटफार्म में जन सामान्य के लिए अपील ,बैनर, स्टीकर से ऊर्जा बचत के उपायों का प्रचार सहित विभिन्न प्रतियोगिताओ के द्वारा स्कूलों कॉलेजों और शासकीय -अशासकीय कार्यालयों में भी ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूकता के लिये अभियान संचालित करती है। प्रबंध संचालक ने कहा कि एम.पी. ट्रांसको ने मध्यप्रदेश विद्युत नियामक आयोग द्वारा 2023-24 के लिये पारेषण हानि के अधिकतम लक्ष्य 2.76 प्रतिशत के मुकाबले 2.61 प्रतिशत लक्ष्य हासिल कर ऊर्जा संरक्षण के प्रति एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। उल्लेखनीय है कि 0.1 प्रतिशत पारेषण हानि कम करने पर लगभग 950 लाख यूनिट ऊर्जा बचत होती है।

सार-समाचार

रोजगार मेले का आज होगा आयोजन

रीवा। स्थानीय शासकीय टीआरएस महाविद्यालय रीवा में 16 दिसंबर को प्रात: 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक रोजगार मेला आयोजित किया गया है। रोजगार मेला मध्यप्रदेश संकल्प योजना के तहत आयोजित किया जा रहा है, जिसमें जिले के बेरोजगार युवक-युवतियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। इस संबंध में उप संचालक रोजगार अनिल दुबे ने बताया कि रोजगार मेले में 10 कंपनियों एवं नियोजकों द्वारा युवाओं का चयन किया जाएगा। मेले में शामिल होने के लिए विभिन्न कंपनियों हेतु युवक एवं युवतियों की आयु सीमा 18 से 48 वर्ष के बीच निर्धारित की गई है। आयु सीमा विभिन्न कंपनियों में अलग-अलग होगी। वेतन एवं भत्ते 8000 रुपए से 25 हजार रुपए तक निर्धारित किया गया है। युवाओ को अपने साथ मूल अंकसूची तथा निवास प्रमाण पत्र की छायाप्रति, आधार कार्ड या वोटर आईडी, रोजगार कार्यालय का जीवित पंजीयन एवं नवीनतम दो पासपोर्ट साइज के फोटो लेकर आना अनिवार्य होगा। उप संचालक ने बताया कि रोजगार मेले में फिनोलेक्स इंडस्ट्रीज लिमि. पुणे, महाराष्ट्र, एन.ए.पी.एस. कंपनी-सीरम हडपसर पुणे, बोनटन टेक्नोमेक फर्नीचर प्रा. लि. (आईसेक्ट) इंदौर, ग्रोफास्ट एग्रिटेक प्रा. लि. जबलपुर, प्रगतिशील बायोटेक रीवा, प्रगतिशील एग्रोटेक रीवा, यशस्वी ग्रुप भोपाल, फ्लिपकार्ड जबलपुर, डीएमसी फिनिसिंग स्कूल प्रा. लि. पूणे, तथा एचडीएफसी लाईफ इश्योरेन्स कंपनी लिमि. रीवा में रोजगार के अवसर उपलब्ध रहेंगे।

कलेक्टर प्रतिभा आज लेंगी टीएल बैठक

रीवा। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल की अध्यक्षता में टीएल बैठक का आयोजन 16 दिसम्बर को प्रात: 11 बजे से कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में किया गया है। बैठक में कलेक्टर द्वारा सीएम हेल्पलाइन सहित मुख्यमंत्री जनकल्याण पर्व एवं आयोजन की समीक्षा की जाएगी। बैठक में संबंधित अधिकारियों को उपस्थिति के निर्देश दिए गए हैं।

मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत नगर निगम क्षेत्र में आयोजित किये जायेंगे शिविर

समय जगत, रीवा। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान 11 दिसंबर से संचालित है। अभियान 26 जनवरी 2025 तक आयोजित किया जायेगा। अभियान के दौरान केन्द्र एवं राज्य सरकार की चिन्हित हितग्राहीमूलक योजनाओं में पात्र हितग्राहियों को लाभांवित किया जा रहा है। अभियान में लोगों की विभिन्न समस्याओं का मौके पर ही निराकरण किया जा रहा है। इस संबंध में आयुक्त नगर निगम डॉ. सौरभ सोनवड़े ने बताया कि नगर निगम क्षेत्र अन्तर्गत शिविर के लिए तिथियाँ और स्थल निर्धारित कर दिये गये हैं। सभी संबंधित अधिकारी निर्धारित स्थलों में शिविर लगाकर पात्र हितग्राहियों को योजनाओं से लाभांवित करें। उन्होंने बताया कि 16 दिसंबर को वार्ड क्रमांक 14 एमपीईबी पार्क, 17 दिसंबर को रानीतालाब मंदिर परिसर, 18 दिसंबर को महेश मेमोरियल स्कूल ढेकहा, 19 दिसंबर को वार्ड क्रमांक 20, 21 के लिए सामुदायिक भवन कटरा तिराहा तथा 20 दिसंबर को रतहरा तालाब के पास शिविर आयोजित किये जायेंगे। इसी प्रकार 23 दिसंबर को जगन्नाथ मंदिर प्रांगण, 24 दिसंबर को घोघर कन्या शाला, 26 दिसंबर को वार्ड क्रमांक 29, 30 तथा 31 के लिए लोक नायक स्कूल के पास, 27 दिसंबर को पी.के. स्कूल परिसर, 30 दिसंबर को प्रधानमंत्री आवास परिसर कृष्णा नगर तथा 31 दिसंबर को उपरहटी किला गेट के पास शिविर का आयोजन किया जायेगा।

मुनेमवती गर्ग के निधन पर अर्पित की गई श्रद्धांजलि

गुढ़। गुढ़ नगर परिषद वार्ड 03 निवासी प्रफुल्ल शुक्ला की दादी मुनेमवती गर्ग 61 वर्ष का दुर्घटना में मोटर साइकल से गिर जाने से सर में चोट की वजह से ईलाज के दौरान उनको संजय गांधी अस्पताल में हो गई।उनके निधन पर नगर वासियों द्वारा शौक व्यक्त किया जिनमें प्रमुख रूप से कपिल गर्ग, विकाश तिवारी,प्रफुल्ल गर्ग,विपुल मिश्रा, जन्मेजय मिश्रा, दिनेश शुक्ला, संजीव शर्मा, नितिन मिश्रा, संजीव शर्मा रहे।

अवैध नशीली दवा बेचने वाली महिला को किया गया गिरफ्तार

रीवा। पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक , अनिल सोनकर, नगर पुलिस अधीक्षक श्रीमती शिवाली चतुर्वेदी के मार्गदर्शन मे थाना प्रभारी कोतवाली उप निरीक्षक अरविन्द सिंह राठौर द्वारा अवैध नशीली कफ सीरफ बिक्री करने वाली महिला को गिरफ्तार कर एन.डी.पी.एस. एक्ट के तहत कार्यवाही कर न्यायालय पेश किया गया । मामले का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि कोतवाली पुलिस को मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई की दो महिलाये चौपड़ा विछिया तरफ सफेद झोले मे नशीली कफ सीरफ रखकर घूम फिरकर बिक्री कर रही है मुखबिर सूचना की तस्दीक कर पुलिस टीम द्वारा रेड कार्यवाही कर एक महिला को अभिरक्षा मे लिया गया तथा एक महिला भागने मे सफल रही पकड़ी गई महिला आरोपी राजकुमारी साकेत पति शंकर साकेत उम्र 50 वर्ष निवासी धोबिया टंकी हरिजन वस्ती के कब्जे से 35 शी.शी नशीली कफ सीरफ ओनेरेक्स कम्पनी की कीमती 5250 रु की जप्त कर धारा 8/21/22 एन.डी.पी.एस. एक्ट एवं 5/13 म.प्र. ड्रग कन्ट्रोल एक्ट की के तहत अपराध पंजीबध्द कर आरोपिया को न्यायालय पेश किया गया जहा से केन्द्रीय जेल रीवा मे दाखिल किया गया है। तथा फरार महिला आरोपी की पता तलास हेतु पुलिस टीम लगाई है ।

गिरफ्तार आरोपिया- राजकुमारी साकेत पति शंकर साकेत उम्र 50 वर्ष निवासी धोबिया टंकी हरिजन वस्ती थाना कोतवाली जिला रीवा म.प्र.

सराहनीय भूमिका

थाना प्रभारी उप निरी. अरविन्द सिंह राठौर, उप निरी. सुशीला साकेत स.उ.नि महेन्द्र त्रिपाठी, प्र.आर. विनोद तिवारी, प्र.आर. राजकुमार तिवारी, आर. अनिल विश्वकर्मा, आर संजीत यादव, आर सुधीर शुक्ला, आर. राजीव तिवारी, महिला आर. सोनाली गुप्ता सैनिक शिवम पाण्डेय, सैनिक रशीद खान, आर. अभिषेक सिंह, आर दुर्योधन सिंह की रही।

गरिमामय तरीके से मनाया जायेगा शांति एवं सद्भावना महोत्सव

कार्यक्रम संयोजक मुकेश येंगल ने दी विस्तृत जानकारी

समय जगत, रीवा। नगर में एक बार फिर आगामी 1 जनवरी को ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय के ऐतिहासिक प्रांगण में शांति एवं सद्भावना समारोह पूरी गरिमा और उत्साह के साथ मनाया जाएगा । नए वर्ष के प्रथम दिवस सूर्योदय की स्वर्णिम रश्मियों के साथ मनाया जाने वाला यह विलक्षण आयोजन आगामी 1 जनवरी को अपनी स्थापना के गौरवशाली 39 वर्ष पूर्ण करेगा। सन 1987 से उक्त विलक्षण कार्यक्रम को आयोजित करने वाला रीवा नगर देश का एकमात्र नगर है। शांति एवं सद्भाव समारोह के संयोजक एवं विंध्यक्षेत्र के वरिष्ठ समाजसेवी डॉ मुकेश येंगल ने बताया कि शांति व सद्भाव की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विचारधारा का साक्षी और समर्पित रीवा नगर , स्थानीय नगरवासियों के आत्मीय सहयोग से,जिसमें समाज के हर वर्ग के लोग शामिल रहते हैं, प्रमुखत- विद्यालय एवं महाविद्यालय छात्र-छात्राएं, एनसीसी कैडेट्स, शिक्षक, प्राध्यापक , प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधि, अधिवक्ता गण, व्यापारी बंधु, खेल जगत के युवा साथी, महिलाएं, वरिष्ठ जन एवं समाज के सभी संगठन के लोग पूर्ण उल्लास के साथ 1 जनवरी की सुबह पडने वाली तेज ठंड के बावजूद कोहरे की परवाह किए बगैर ऐतिहासिक ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय के प्रांगण में एकत्र होकर देश एवं विश्व को शांति का संदेश देते हैं ।

स्वर्गीय भैयालाल शुक्ल की स्मृति में आयोजित क्रिकेट टूर्नामेंट का राजेन्द्र शुक्ल ने किया शुभारंभ

एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करते हैं खेल: उप मुख्यमंत्री

समय जगत, रीवा। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि खेल एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करते हैं। मेरे स्वर्गीय पिता जी की स्मृति में आयोजित किये जा रहे टूर्नामेंट के आयोजक साधुवाद के पात्र हैं जो पिता जी के प्रति श्रद्धा के भाव रखकर गत नौ वर्षों से अनवरत प्रति वर्ष इस टूर्नामेंट का आयोजन कर रहे हैं। श्री शुक्ल ने राष्ट्रीय एकता मंच द्वारा आयोजित टेनिस बाल क्रिकेट टूर्नामेंट का शुभारंभ किया।

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा के स्टेडियम में 22 दिसंबर तक आयोजित क्रिकेट टूर्नामेंट के शुभारंभ अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने कहा कि इस टूर्नामेंट के आयोजन में मेरा कोई योगदान नहीं है। आयोजक पिता जी के प्रति श्रद्धाभाव रखकर इसे आयोजित कर रहे हैं और इसकी ख्याति दूर-दूर तक हो रही है। उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों को खेल

भावना से खेलते हुए हार जीत की चिंता नहीं करनी चाहिए क्योंकि खेल ही वह विधा है जिसमें जीतने व हारने वाले एक दूसरे को बधाई देते हैं और जो हारते हैं वह अगली बार पूरे दमखम के साथ खेल में भाग लेते हैं। श्री शुक्ल ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेई की कविता का उल्लेख करते हुए कहा कि हार जीत को एक तरफ रखते हुए खेल भावना के साथ खेलना चाहिए और खेल की तरह अन्य प्रतिस्पर्धा में भी सहयोमात्मक भाव से शामिल होना चाहिए। उन्होंने खेल प्रतियोगिता के आयोजकों को सफल आयोजन की शुभकामना दी। उप मुख्यमंत्री ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया। कार्यक्रम में आभार प्रदर्शन अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय ने किया। उप मुख्यमंत्री ने पूज्य पिता जी को श्रृद्धांजलि अर्पित की। उप मुख्यमंत्री ने क्रिकेट खेलकर टूर्नामेंट का शुभारंभ किया। इस अवसर पर श्री शैलेन्द्र शुक्ल, विवेक दुबे, केके गर्ग सहित आयोजन समिति के पदाधिकारी, खेल प्रेमीजन तथा प्रतिभागी टीम के खिलाड़ी उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री ने हिनौती गौधाम में कराये जा रहे कार्यों की समीक्षा की

रीवा। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने रीवा निवास स्थित कार्यालय में हिनौती गौधाम में कराए जा रहे विभिन्न निर्माण कार्यों की समीक्षा की तथा अधिकारियों से अब तक हुए कार्य की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने शेड निर्माण, फेंसिंग कार्य, प्रशासनिक भवन निर्माण तथा हाई मास्क लाइट लगाए जाने की समीक्षा की तथा निर्देश दिए कि हिनौती गौधाम में स्वीकृत सभी कार्यों को शीघ्र पूरा कराएं। इस दौरान अध्यक्ष जनपद पंचायत गंगेव विकास तिवारी, समाजसेवी राजेश पाण्डेय सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल श्री राम महायज्ञ के हवन कार्यक्रम में हुए शामिल

रीवा। प्रसिद्ध संत श्री सनकादि महाराज के सानिध्य ने आयोजित किये जा रहे 1008 कुण्डीय श्री राम महायज्ञ के महापूर्णाहुति कार्यक्रम में शामिल होकर उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने हवन किया तथा भण्डारा में प्रसाद ग्रहण किया। उल्लेखनीय है कि झलबदरी आश्रम रीवा में 7 दिसंबर से 15 दिसंबर तक आयोजित किये गये श्री राम महायज्ञ के समापन अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने हवन, भण्डारा के उपरांत संत श्री सनकादि महाराज से आशिर्वाद प्राप्त किया।

मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत शिविरों का हुआ आयोजन

रीवा। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान 26 जनवरी तक संचालित किया जायेगा। अभियान के तहत शासकीय जनकल्याणकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का पात्र हितग्राहियों को लाभ दिलाये जाने के लिये शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में शिविर लगाये जा रहे हैं। शिविर के माध्यम से लोगों की समस्याओं का मौके पर ही निराकरण किया जा रहा है। विभिन्न विभागों की योजनाओं का पात्र हितग्राहियों को लाभ भी दिलाया जा रहा है। आमजनों को योजनाओं का लाभ लेने व अपनी समस्याओं का निराकरण कराने के लिये विभिन्न माध्यमों से जागरूक भी किया जा रहा है।

कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल के निर्देश पर जनपद सिरमौर सीएफटी के जामू, शाहपुर, जनपद रायपुर कर्चुलियान सीएफटी के सगरा, पुरैना, मनकहरी, जनपद रीवा सीएफटी के रुपौली, सोनौरी, जनपद गंगेव के पटना, महमूदपुर, जनपद त्योंथर सीएफटी के सरूई, सूती, सरई, सोहरवा, रेही, चौखड़ा, पटहटकला, बरहा, कूड़ी, गोदकला, गोदखुर्द तथा जनपद जवा सीएफटी के सितलहा व नगमा में शिविर का आयोजन किया गया। त्योंथर के ग्राम पंचायतों में आयोजित शिविर में 130 आवेदन प्राप्त हुए। जबकि सिरमौर जनपद अन्तर्गत शाहपुर ग्राम पंचायत में 54 तथा जामू में 35 आवेदन प्राप्त हुए। रायपुर कर्चुलियान अन्तर्गत ग्राम पंचायतों में लगाए गए शिविरों में 45 आवेदन प्राप्त हुए। जन कल्याण पर्व के तहत आयोजित किए जा रहे शिविरों में संबल कार्ड, पेंशन योजना, राष्ट्रीय परिवार सहायता के प्रकरण सहित राजस्व व अन्य विभागों से संबंधित आवेदनों का निराकरण किया जा रहा है। विभागीय अधिकारी शिविर में उपस्थित रहकर विभागीय योजनाओं का लोगों को लाभ दिलाने के साथ ही योजनाओं से परिचित भी करा रहे हैं। कूड़ी में आयोजित शिविर में खसरा वितरण किया गया। गंगेव जनपद के पटना में आयोजित शिविर का विधायक मनगवां इंजी. नरेन्द्र प्रजापति ने शुभारंभ किया। इस अवसर पर गंगेव जनपद अध्यक्ष विकास तिवारी सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण तथा ग्रामवासी उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक नरेन्द्र प्रजापति ने कहा कि मुख्यमंत्री जी के निर्देश पर संचालित किए जा रहे मुख्यमंत्री जन अभियान कार्यक्रम का अधिक से अधिक लोग लाभ लें और शासन की योजनाओं का पात्र हितग्राहियों को लाभ दिलाने का कार्य विभागीय अधिकारी समन्वय बनाकर करें।

विधानसभा घेराव के लिए कांग्रेसी कार्यकर्ता भोपाल हुए रवाना

रीवा। जिला कांग्रेस कमेटी रीवा ग्रामीण जिलाध्यक्ष इंजी. राजेन्द्र शर्मा एवं शहर अध्यक्ष लखनलाल खण्डेलवाल ने संयुक्त विज्ञप्ति जारी करते हुए बताया कि कांग्रेस पार्टी का प्रदेश व्यापी विधानसभा का घेराव 16 दिसम्बर को हो रहा है जिसमें रीवा से भारी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता ट्रेन, बसों, एवं चार पहिया वाहनों से हजारों की संख्या में भोपाल के लिए रवाना हुए। जिला अध्यक्ष इंजी. राजेन्द्र शर्मा ने कहा कि वर्तमान भाजपा की सरकार के कार्यकाल के 01 वर्ष पूर्ण हो चुके है, लेकिन चुनाव के समय किये गये अपने वादों को पूर्ण करने में पूर्णत: असफल रही है, आजतक एक भी समस्या का समाधान नही किया गया। भारतीय जनता पार्टी की वादाखिलाफी, बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, अजा, अजजा, अल्पसंख्यकों, महिलाओं के साथ हो रहे अत्याचार किसानों की समस्याए, बढ़ती हुई बेरोजगारी एवं अन्य ज्वलंत मुद्दों को लेकर प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी जी, के नेतृत्व मे विधानसभा का घेराव किया जायेगा। जिलाध्यक्ष के नेतृत्व में महापौर अजय मिश्रा बाबा, विधानसभा प्रत्याशी रमाशंकर सिंह, बबिता साकेत, विद्यावती पटेल, कार्यकारी जिलाध्यक्ष गिरीश सिंह, संगठन मंत्री रवि तिवारी, रीवा जिले के समस्त ब्लॉक अध्यक्षगण, महिला कांग्रेस, युवा कांग्रेस, सेवादल, एन.एस.यु.आई, अल्पसंख्यक विभाग एवं प्रकोष्ठ के अध्यक्षगण, समस्त पार्षदगण, किसान कांग्रेस, सहित हजारों की संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता भोपाल के लिए रवाना हुए। इसी कड़ी मे मऊगंज जिले से भी प्रदेश महासचिव एवं पूर्व विधायक सुखेन्द्र सिंह बन्ना तथा जिलाध्यक्ष पद्मेश गौतम के नेतृत्व में भी हजारों की संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता ट्रेन, बसों, एवं चार पहिया वाहनों से हजारों की संख्या में भोपाल के लिए रवाना हुए।

सांस्कृतिक धरोहरों का अवलोकन किया और अनूठी परंपराओं से हुए रूबरू

राज्यपाल मंगुभाई पटेल एक दिवसीय प्रवास पर पहुंचे ओरछा

समय जगत, निवाड़ी। प्रदेश के माननीय राज्यपाल महोदय श्री मंगुभाई पटेल आज अपने एक दिवसीय प्रवास पर ओरछा पहुंचे। ओरछा प्रवास के दौरान उन्होंने सांस्कृतिक धरोहरों का अवलोकन किया और वहां की अनूठी परंपराओं से रूबरू हुए। राज्यपाल श्री पटेल ने अपने दौरे की शुरुआत श्री रामराजा मंदिर में भगवान रामराजा के दर्शन कर की। यहां उन्होंने भगवान की पूजा अर्चना की और प्रदेशवासियों की सुख, समृद्धि और तरक्की की कामना की। मंदिर परिसर में उन्होंने स्थानीय पुजारियों और श्रद्धालुओं से बातचीत की। मंदिर दर्शन के बाद जहांगीर महल पहुंचे। जहां उन्होंने महल के अद्वितीय स्थापत्य कला और नक्काशी को देखकर इसकी प्रशंसा की। इसके बाद वह सातार घाट स्थित चंद्रशेखर आजाद स्मृति स्थल पहुंचे और चंद्रशेखर आजाद को नमन किया। प्रवास के दौरान उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि ओरछा भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और वास्तु कला का अद्वितीय केंद्र है। ओरछा न केवल अपने धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसकी स्थापत्य कला और प्राकृतिक सौंदर्य भी इसे विशेष बनाता है। चंद्रशेखर आजाद स्मृति

स्थल के बाद राज्यपाल श्री पटेल लक्ष्मी मंदिर पहुंचे। जहां उन्होंने मंदिर में मौजूद प्राचीन भित्ति चित्रों और दीवारों पर की गई अद्वितीय कलाकृतियों को देखा। उन्होंने कहा कि यह चित्रकला भारतीय संस्कृति और इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं। उन्होंने कला के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रयास करने की बात कही। भ्रमण के अंतिम पड़ाव में राज्यपाल महोदय मध्य प्रदेश टूरिज्म बोर्ड के सहयोग से चलाए जा रहे लाडपुरा खास स्थित महुआ हिल व्यू होम स्टे पहुंचे। जहां पर होमस्टे संचालक श्रीमति उमा पाठक ने होमस्टे की संचालन प्रक्रिया की जानकारी दी। यहां उन्होंने जिला प्रशासन के अधिकारियों को होमस्टे की विशेषताओं और पर्यटकों को दी जाने वाली सुविधाओं का व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार करने की जरूरत बताई। इस अवसर पर उन्होंने बुंदेली व्यंजनों का स्वाद लिया और उसकी जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि बुंदेली व्यंजन अपनी विविधता और स्थानीय स्वाद के कारण अद्वितीय हैं और क्षेत्र की संस्कृति और परंपरा को दर्शाते हैं। इस दौरान श्री पटेल ने मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग एवं कलेक्टर महोदय के निर्देशन में संचालित हो रही बुंदेली पेंटिंग कार्यशाला के बच्चों से भी मुलाकात की। इस अवसर पर बच्चों ने महामहिम राज्यपाल को उनका प्रतीकात्मक चित्र और बुंदेली पेंटिंग भेंट की। इस अवसर पर निवाड़ी विधायक श्री अनिल जैन, कलेक्टर श्री लोकेश कुमार जांगिड़, एडीसी श्री शशांक, पुलिस अधीक्षक डॉ. रायसिंह नरवरिया, एसडीएम निवाड़ी श्री अनुराग निंगवाल, तहसीलदार ओरछा श्री सुमित गुर्जर ओएसडी श्री अरविंद पुरोहित, श्री अखिलेश अयाची सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

11 मई को नगर में होगा फूलमाली समाज का सामूहिक विवाह सम्मेलन, बैठक में हुआ निर्णय

समय जगत, सारंगपुर। सकल पंच फूल माली समाज के 6 मोहल्लो की सामुहिक बेठक भेरू दरवाजा स्थित समाज की धर्मशाला में समाज अध्यक्ष शिवनारायण पुष्पद काका, की अध्यक्षता मे आयोजित की गई बेठक मे विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई साथ ही समाज का सामुहिक विवाह सम्मेलन आयोजित करने पर विस्तार से चर्चा करते हुए 11 मई को समाज का सामुहिक विवाह सम्मेलन नगर मे करने का निर्णय सर्व सम्मति से लिया गया सम्मेलन को सुचारू रुप से संचालित करने के लिए अध्यक्ष व कार्यकारिणी का गठन व स्थान का चयन अगली बेठक मे किया जाएगा। वही समाज के युवा कार्यकर्ता महेश पुष्पद, तलेनी का भाजपा के नवनिर्वाचित मंडल अध्यक्ष घोषित होने पर समाज जनों के द्धारा साफा बांधकर व फूलमाला पहना कर स्वागत व सम्मान किया गया वही पार्षद राकेश पुष्पद, सुनील बागवान, युवा मोर्चा अध्यक्ष राहुल पुष्पद, का भी स्वागत किया गया इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष महेश पुष्पद, ने कहा कि मे तन मन धन से समाज की सेवा के लिए जहाँ जेसी भी आवश्यकता होगी उसके लिए हमेशा तत्पर रहुंगा। बेठक का संचालन समाज सचिव गोरीलाल पुष्पद, ने किया तथा आभार भेरू दरवाजा पंचायत अध्यक्ष धनसिंह पुष्पद, ने माना।इस अवसर पर किसी पंचायत अध्यक्ष प्रेम नारयण पुष्पद, बागकुआ टंकी पंचायत अध्यक्ष केलाश वर्मा, पछेटवाडी पंचायत अध्यक्ष केलाश पुष्पद, भगत मुकेरवाडी, पंचायत अध्यक्ष शिवनारायण पुष्पद, पुर्व समाज अध्यक्ष रामचरण पुष्पद, महादेव मित्र मंडल अध्यक्ष ओमप्रकाश पुष्पद, शिवचरण पुष्पद मोतीलाल माली, हीरालाल पुष्पद, राजेश पुष्पद, मदनलाल पुष्पद, मांगीलाल पुष्पद, रामेश्वर पुष्पद, ,अनोखी लाल पुष्पद ,देवनारायण पुष्पद, घीसुलाल पुष्पद, विनोद पुष्पद, मनोज पुष्पद, दीपक पुष्पद, कपिल पुष्पद, ओम पुष्पद किडी, राजेश पुष्पद विशाल, पुष्पद , सहित अन्य समाज़ जन उपस्थित थे।

राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की मासिक बैठक हुई संपन्न

समय जगत, बांदा । राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ बांदा जिला इकाई एवं ब्लॉक इकाई की संयुक्त मासिक बैठक नटराज म्यूजिक महाविद्यालय में संपन्न हुई। जिला अध्यक्ष पंकज सिंह ने बताया कि दिसंबर माह की मासिक एवं वर्ष 2024 की अंतिम बैठक आज संपन्न हुई। जिसमें समस्त ब्लॉकों के अध्यक्ष/महामंत्री/प्रतिनिधि उपस्थित रहे। बैठक में वर्ष 2024 में संगठन की उपलब्धियां पर विस्तृत चर्चा की गई। साथ ही आगामी वर्ष 2025 में संगठन द्वारा किए जाने वाले कार्यो/कार्यक्रमों/लक्ष्यों की विस्तृत चर्चा की गई।कुछ ब्लॉक अध्यक्षों द्वारा अवगत कराया गया कि खंड शिक्षा अधिकारियों द्वारा किचन बर्तन हेतु प्राप्त धनराशि एवं कंपोजिट ग्रांट आदि में अवैध धनराशि की मांग की जा रही है। जिसका जिला अध्यक्ष पंकज सिंह द्वारा विरोध करते हुए कहा गया कि ऐसी स्थितियां बर्दाश्त नहीं की जाएंगीं। किसी भी शिक्षक का शोषण नहीं होने दिया जाएगा। खंड शिक्षा अधिकारियों द्वारा विभिन्न अवकाशों के समय पर निस्तारण में रुचि न लिए जाने का प्रकरण भी आया। जिसको जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी महोदय के संज्ञान में लाने का भरोसा जिलाध्यक्ष पंकज सिंह ने दिलाया। बैठक में जिला कार्यकारिणी सहित समस्त ब्लॉक अध्यक्ष,महामंत्री एवं अन्य पदाधिकारी गण उपस्थित रहे बैठक का संचालन संयुक्त मंत्री विनोद कुमार शिवहरे ने किया।

अंतिम व्यक्ति का कल्याण है हमारा लक्ष्य: विधायक आशीष शर्मा

समय जगत, खरगोन। डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में भाजपा की सरकार ने कम समय में ही अभूतपूर्व उपलब्धियां हासिल की हैं। अंत्योदय यानी समाज की अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का कल्याण हमारा लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमारी सरकार अपनी जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से जन.जन के जीवन में खुशहाली लाने के लिए निरंतर आगे बढ़ते रहेगी। प्रदेश के विकास और जनता के हित में तय किए गए 456 संकल्पों में से एक साल के अंदर 45 संकल्प पूरे किए जा चुके हैं और 268 संकल्पों पर तेजी से कार्य चल रहा है। आगे आने वाले चार वर्ष में हम एक.एक संकल्प पूरा करेंगे।

शनिवार को यह बात खातेगांव विधायक आशीष शर्मा ने मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार का एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भाजपा जिला कार्यालय पर हुई पत्रकारवार्ता में कही। पत्रकारवार्ता में पूर्व राज्यमंत्री व विधायक बालकृष्ण पाटीदारए पूर्व जिलाध्यक्ष रणजीतसिंह डंडीर, जिला महामंत्री राजेश माहेश्वरी, जिला कार्यालय मंत्री मोहन राठौर व जिला मीडिया प्रभारी प्रकाश भावसार उपस्थित थे। उन्होंने कहा मध्यप्रदेश की उन्नति और प्रगति के साथ जनता को खुशहाल बनाने के लिये हमारी सरकार का जो संकल्प.पत्र था, उसपर चरणबद्ध तरीके से तेजी से कार्य हो रहा है। श्री शर्मा ने गरीब कल्याण के लिए किए गए कार्यो का उल्लेख करते हुए कहा इंदौर के हुकुमचंद मिल के 4 हजार 800 श्रमिक परिवारों की लंबित राशि 224 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया। संबल 2.0 के अंतर्गत 1 करोड़ 73 लाख से अधिक श्रमिकों का पंजीयन किया। रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना में किसानों को 1 हजार रुपये प्रति क्विंटल की दर से अधिकतम 3900 रूपये प्रति हेक्टेयर की अतिरिक्त सहायता दी जाएगी। किसानों को समर्थन मूल्य पर उपार्जित गेहूं पर प्रति क्विंटल 125 रुपये बोनस का भुगतान। सोयाबीन का समर्थन मूल्य 4,892 रुपये प्रति क्विंटल की दर से उपार्जन करने का निर्णय लिया गया। मुख्यमंत्री किसान कल्याण सम्मान निधि में 6 हजार रूपये प्रति वर्ष का भुगतान सीधे किसानों के खातों में किया जा रहा है। राजस्व महाअभियान के दो चरणों में 80 लाख से अधिक लंबित प्रकरणों का निपटारा किया गया। विश्वविद्यालयों के कुलपति अब कुलगुरु कहलाएंगे। राज्य स्तरीय रोजगार दिवस के अवसर पर रिकॉर्ड 7 लाख युवाओं को 5 हजार करोड़ रुपये का स्व.रोजगार ऋण वितरित हुआ, इसके अलावा कई अन्य उपलब्धियां शामिल है।

मुख्यमंत्री जल कल्याण अभियान की हुई शुरुआत

समय जगत, बीनागंज। मध्य प्रदेश शासन द्वारा संचालित मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान दिनांक 11 दिसंबर 2024 से 26 जनवरी2025 तक भारत सरकार और राज्य सरकार की चिन्हित की गई हितग्राही मूलक योजनाओं में शत प्रतिशत सैचुरेशन एवं लक्ष्य आधारित योजनाओं को प्राप्त करने के लिए मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान 11 दिसंबर 24 से 26 जनवरी 25 तक शासन निर्देशानुसार आयोजित किए जाएंगे। जिसमें भारत सरकार और राज्य सरकार की चिन्हित हितग्राहीमूलक 45 योजनाओं एवं 63 सेवाओं के अंतर्गत ग्राम पंचायतों में आयोजित शिविरों में आवेदन प्राप्त किए जाएंगे एवं प्राप्त आवेदनों का समय सीमा में संबंधित विभागों द्वारा निराकरण किया जाएगा। इसी तारतम्य में आज जनपद पंचायत चांचौड़ा के ग्राम पंचायत अरन्या,पाखरियापुरा एवं बरखेड़ा खुर्द में मुख्यमंत्री जन कल्याण शिविर आयोजित किए गए जिसमें पाखरिपुरा में 52, अरन्या में 54एवं बरखेड़ा खुर्द में 50आवेदन प्राप्त हुए जिनको आनलाइन किया जाकर समय सीमा में संबंधित विभागों द्वारा समय सीमा में निराकरण किया जावेगा। ग्राम पंचायतों में आयोजित शिविरों में ग्राम संपर्क दल के साथ जिले से नियुक्त नोडल अधिकारी ,सहायक नोडल अधिकारी द्वारा ग्राम में उपस्थित रहकर शिविर को संपन्न किया गया।

शहर के विकास के लिए मास्टर प्लान के तहत काम करने की है जरूरत

समय जगत, मुरैना। शहर को नगर निगम बने एक दशक होने को जा रहा है लेकिन विकास के नाम पर यहां कुछ भी दिखाई नहीं देता। इसका मुख्य कारण यह है कि अभी तक मुरैना नगर निगम में जो भी प्रतिनिधि चुने गए उनके पास कोई बड़ा मास्टर प्लान नहीं था और न ही वर्तमान जन प्रतिनिधियों पर है। मनमर्जी के मुताबिक निर्माण कार्य करना फिर उसी निर्माण कार्य को बर्बाद करना मानो जैसे यहां के रीत बन गई है। सबसे पहले शहर भर में सीसी रोड डालने का कार्य हुआ लेकिन बाद में सीवर प्रोजेक्ट के चलते वह सभी रोड़ खोद दी गईं। इसके बाद फिर से सीसी रोड का निर्माण हुआ और बाद में वाटर प्रोजेक्ट के चलते एक बार फिर से करोड़ों रूपयों की लागत से बनी सड़कों को खोद दिया गया। इसके अलावा नाले-नालियों के निर्माण में भी करोड़ों रूपये फूंक दिये गये लेकिन उनका उपयोग न हो सका। इसके अलावा पिछले बरसात के समय नाले-नालियों को साफ करने के लिए लाखों रूपये के टेण्डर जारी किये गये लेकिन किसी भी नाले में साफ-सफाई देखने तक को नहीं मिली। आज भी शहर के ज्यादातर नाले गंदगी से भरे पड़े हैं और कई नाले-नालियां जाम होने के कारण उनका गंदा पानी सड़कों पर चौबीसों घंटे बहता रहता है। नगर निगम में पदस्थ इंजीनियरों की बात की जाये तो वह फ्री की तनख्वाह शासन से ले रहे हैं। यहां के इंजीनियरों की यदि काबिलियत देखना हो तो कोतवाली में बने नालों पर नजर डालें जो कई जगह छोड़कर बनाये गये हैं। लेकिन यह समझ से परे हैं कि ऐसी काबिलियत यहां के इंजीनियर आखिरकार लाते कहां से हैं। जब नगर निगम के चुनाव हुये थे तो महापौर की दावेदार श्रीमती शारदा सोलंकी ने बड़े-बड़े वादे चुनाव प्रचार के समय लिखित में एक पर्चा छपवाकर किये थे लेकिन उन वादों में से अभी तक एक भी वादा महापौर द्वारा पूरा नहीं किया गया है। शहर की सड़कों की अगर बात की जाये तो ज्यादातर गलियों में सड़कें है ही नहीं और जिन गलियों व वार्डो में सड़कें हैं भी तो वह इतनी घटिया स्तर की हैं जो पहली बारिश में ही उखड़ चुकी हैं। इसके अलावा शहर की सड़कों पर आवारा मवेशी घूमते हुये सैंकड़ों की संख्या में देखे जा सकते हैं। जहां जन प्रतिनिधि और शासन प्रशासन बड़ी-बड़ी ढींगे हांककर यह कहते नहीं थकते कि शहर में गौशालाऐं हैं और वहां आवारा गौवंश को रखने को उचित व्यवस्था है। लेकिन उनके यहां दावे सिरे से तब नकार दिये जाते हैं जब शहर में विचरने वाले गौवंश सैंकड़ों की तादात में दिखाई देते हैं। इनसे एक तो यातायात प्रभावित होता है और दूसरा कई लोग इन गौवंश के गुस्से का शिकार होकर चोटिल भी हो जाते हैं। बावजूद इसके प्रशासन व जन प्रतिनिधियों द्वारा इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। शहर को साफ-सुथरा रखने के लिए भी प्रतिदिन लाखों रूपये खर्च नगर निगम द्वारा किये जाते हैं लेकिन शहर में गंदगी जस की तस बनी हुई है। कुल मिलाकर नगर निगम के जन जन प्रतिनिधियों के पास कोई मास्टर प्लान नहीं है जिससे शहर को साफ स्वच्छ रखने के साथ-साथ यहां कई निर्माण कार्य कराये जायें जिससे शहर की सुंदरता बढ़े। हां अपने चहिते ठेकेदारों को लाभ पहुंचाने के लिए बेमतलब के निर्माण कार्य जरूर नगर निगम द्वारा करवाये जा रहे हैं जिनका कोई भी मतलब नहीं है। उदाहरण के लिए गांधी कॉलोनी का स्वागत द्वार बनवाना, डिवाईडरों पर ग्रिल लगवाना। यह ऐसे निर्माण कार्य हैं जिनसे किसी को कुछ भी फायदा नहीं होगा।

युवाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रतिबद्ध मध्यप्रदेश सरकार

11 दिसम्बर - 26 दिसम्बर 2024

1 वर्ष

जनकल्याण पर्व

मोहन यादव सरकार

काम लगातार-फैसले असरदार

युवा संवाद

स्व-रोज़गार, रोज़गार केंद्रित कार्यक्रम

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

के साथ

दोपहर 12:00 बजे | बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

एवं

पुलिस बैंड द्वारा प्रस्तुति

प्रदेश के सभी जिलों के पुलिस बैंड द्वारा एक साथ प्रदर्शन

अपराह्न 3:00 बजे | कुशाभाऊ ठाकरे सभागार प्रांगण, भोपाल

16 दिसम्बर, 2024

सशक्त भविष्य का निर्माण

- लगभग 1 लाख शासकीय पदों पर भर्तियां जारी। अगले 5 वर्ष में 2.50 लाख भर्तियों का लक्ष्य।
- गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा के लिए 55 जिलों में पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस प्रारंभ।
- भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, इंदौर, उज्जैन और रीवा विश्वविद्यालय में इन्क्यूबेशन केंद्रों की स्थापना।
- स्टैंड-अप इंडिया में बिना गारंटी ₹ 1 करोड़ तक का ऋण।
- स्टार्ट-अप्स को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में सहभागिता के लिए ₹ 50 हजार से ₹ 1.50 लाख तक वित्तीय सहायता।
- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना में स्व-रोज़गार के लिए बिना गारंटी ₹ 20 लाख तक का ऋण।

D-11123/24

सीधा प्रसारण

@Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh

@Cmmadhyapradesh @jansamparkMP

JansamparkMP

मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2024

स्वत्वाधिकारी, समय जगत मीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक अशोक त्रिपाठी द्वारा एवरेस्ट प्रेस ई-49/8 औखला, इंडस्ट्रीयल-एरिया प्लॉट-2 प्रींटिंग प्रेस से मुद्रित एवं बी-125 सादतपुर कालोनी दिल्ली-110094 से प्रकाशित। RNI NO. DELHIN/2005/14553, **प्रधान संपादक:** अशोक त्रिपाठी *__संपादक__ अनिल श्रीवास्तव *__समाचार संपादक__ सौरभ वार्ष्णेय

दिल्ली कार्यालय : एस-557, हीरा कॉम्पलेक्स 203 द्वितीय तल मुख्य मार्ग शकरपुर दिल्ली- 01142173537, 9899589700, **भोपाल कार्यालय** - 9, रायल हाउस, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर जोन-1, भोपाल। **फोन :** 0755-4273868, 4203479 **फैक्स :** 4094417 **ई-मेल** dainiksamayjagat.delhi@gmail.com *(समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार)